श्री:

ज्योतिष्मती

त्रैमासिक

वर्ष
१७
सं० २०३१

संख्या
४
श्रावण














वार्षिक
मूल्य
६.००

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य २·६५

विषय-सूची

ग्राहकों और लेखकोंको आवश्यक सूचना

इस वर्ष भाद्रपद अधिक मास होनेसे इस अंकमें व्यापार-भविष्य और राशिफल पूरे चार मास (५ जुलाईसे ३१ अक्टूबर ७४ तक) का दिया गया है । आगामी १८वें वर्षका 'नववर्षाङ्क' १ नवम्बर १९७४ से प्रारम्भ होगा । 'नववर्षाङ्क' विजयादशमी २५ अक्टूबर तक पाठकों को पहुंचा दिया जावेगा । आगामी १८वें वर्षसे वार्षिक मूल्य १२) रु० होगा । किन्तु, ३१ अक्टूबर ७४ तक सभी ग्राहक ग्यारह रुपये भेजकर वार्षिक ग्राहक बन सकते हैं । जिन ग्राहकोंका मूल्य इस अङ्कमें समाप्त है, उनके लिए छपा मनीआडर फार्म साथ भेजा जा रहा है, अतः वे ११) रु० शीघ्र भेज दें ।

आगामी 'नववर्षाङ्क' के लिए अनेक लेख प्राप्त हो चुके हैं । अब केवल सावधिक सामयिक महत्वपूर्ण लेख (तीन मासके व्यापार-भविष्य और आर्थिक राजनैतिक सामाजिक राष्ट्रीय भविष्य सम्बन्धी लेख) ही स्वीकार किये जावेंगे । ३१ अगस्त ७४ के बाद प्राप्त होने वाले सामयिक लेख भी प्रकाशित न हो सकेंगे । २५ सितम्बर ७४ के बाद विज्ञापन भी स्वीकार नहीं किये जावेंगे ।

जन्मपत्र वर्षफल प्रश्न मुहूर्तादि ज्योतिष सम्बन्धी अन्य सब कार्य स्थगित हैं, अतः अब इस सम्बन्धमें कोई सज्जन पत्रव्यवहार न करें ।

—व्यवस्थापक ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

★ श्रीः ★

ज्योतिष्मती

[भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी प्रचारक प्रमुखपत्रिका]

संरक्षक

हिज हाईनेस महाराजाधिराज श्री १०५ श्रीगजसिंहजी बहादुर, जोधपुर-नरेश।

श्री चम्पालाल ह० चाष्टवे, आयकर-सलाहकार, लक्ष्मीचेम्बर, पूना —२

सहायक

श्रीमान् स्व० नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' साहब, भू०पू० अध्यक्ष नगरपालिका—सोलन।

श्री भगवतीप्रसाद झाझरिया, ४९/२८ जनरलगंज, कानपुर।

श्रीमती अ० सौ० तारामणि, धर्मपत्नी श्री बनवारीलालजी बंसल, फर्म-देवीसहाय-बनवारीलाल, (आयुर्वेदिक यूनानी औषधियोंके विक्रेता) कटरा तमाखू, देहली।

श्री दामोदरलाल विश्वम्भरलाल काबरा, मालेगांव (नाशिक)

श्री. गोविन्दगोपाल पंसारी. २७ संयोगिता गंज, इन्दौर—१ (म०प्र०)

श्रीमान् शाह तेजराज कस्तूरचन्द जैन, जमखण्डी (बीजापुर कर्नाटक)।

श्री लछमनदास रघुनाथदासजी परिहार, जोधपुर (राजस्थान)

श्री रामबक्ष भीकमदासजी परिहार, जोधपुर (राजस्थान)

श्री ताराचन्द भंवरलाल पारख, जोधपुर (राजस्थान)

सम्पादक एवं संचालक

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्योतिषपरिषद (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य-सांख्य-योगाचार्य

एम.ए (हिन्दी-संस्कृत) पी.एच.डी.

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

विषय-सूची

ग्राहकों और लेखकोंको आवश्यक सूचना

इस वर्ष भाद्रपद अधिक मास होनेसे इस अंकमें व्यापार-भविष्य और राशिफल पूरे चार मास (५ जुलाईसे ३१ अक्टूबर ७४ तक) का दिया गया है । आगामी १९वें वर्षका 'नववर्षाङ्क' १ नवम्बर १९७४ से प्रारम्भ होगा । 'नववर्षाङ्क' विजयादशमी २५ अक्टूबर तक पाठकों को पहुंचा दिया जावेगा । आगामी १८वें वर्षसे वार्षिक मूल्य १२) रु० होगा । किन्तु, ३१ अक्टूबर ७४ तक सभी ग्राहक ग्यारह रुपये भेजकर वार्षिक ग्राहक बन सकते हैं। जिन ग्राहकोंका मूल्य इस अङ्कमें समाप्त है, उनके लिए छपा मनीआडर फार्म साथ भेजा जा रहा है, अतः वे ११) रु० शीघ्र भेज दें ।

आगामी 'नववर्षाङ्क' के लिए अनेक लेख प्राप्त हो चुके हैं । अब केवल सावधिक सामयिक महत्वपूर्ण लेख (तीन मासके व्यापार-भविष्य और आर्थिक राजनैतिक सामाजिक राष्ट्रीय भविष्य सम्बन्धी लेख) ही स्वीकार किये जावेंगे । ३१ अगस्त ७४ के बाद प्राप्त होने वाले सामयिक लेख भी प्रकाशित न हो सकेंगे । २५ सितम्बर ७४ के बाद विज्ञापन भी स्वीकार नहीं किये जावेंगे ।

जन्मपत्र वर्षफल प्रश्न मुहूर्तादि ज्योतिष सम्बन्धी अन्य सब कार्य स्थगित हैं, अतः अब इस सम्बन्धमें कोई सज्जन पत्रव्यवहार न करें ।

—व्यवस्थापक ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

★ श्रीः ★

ज्योतिष्मती

[भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी प्रचारक प्रमुखपत्रिका]

संरक्षक

हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज श्री १०५ श्रीगजसिंहजी बहादुर, जोधपुर-नरेश।
श्री चम्पालाल ह० चाष्टवे, आयकर-सलाहकार, लक्ष्मीचेम्बर, पूना —२

सहायक

श्रीमान् स्व० नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' साहब, भू०पू० अध्यक्ष नगरपालिका—सोलन।
श्री भगवतीप्रसाद झाझरिया, ४६/२८ जनरलगंज, कानपुर।
श्रीमती अ० सौ० तारामणि, धर्मपत्नी श्री बनवारीलालजी बंसल, फर्म-देवीसहाय-बनवारीलाल, (आयुर्वेदिक यूनानी औषधियोंके बिक्रेता) कटरा तमाखू, देहली।
श्री दामोदरलाल विश्वम्भरलाल काबरा, मालेगांव (नाशिक)
श्री. गोविन्दगोपाल पंसारी. २७ संयोगिता गंज, इन्दौर—१ (म०प्र०)
श्रीमान् शाह तेजराज कस्तूरचन्द जैन, जमखण्डी (बीजापुर कर्नाटक)।
श्री लछमनदास रघुनाथदासजी परिहार, जोधपुर (राजस्थान)
श्री रामबक्ष भीकमदासजी परिहार, जोधपुर (राजस्थान)
श्री ताराचन्द भंवरलाल पारख, जोधपुर (राजस्थान)

सम्पादक एवं संचालक

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य-सांख्य-योगाचार्य
एम.ए (हिन्दी-संस्कृत) पी.एच.डी.

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिःशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्ज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन समान्य सदस्य और जो १२५) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य ९.०० नौ रुपये और एक प्रतिके दो रुपये पैंसठ पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवें गे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथि से १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

सत्रहवें वर्षकी पूर्ति पर

'ज्योतिष्मती' को विगत सत्रह वर्षोंमें जो आशातीत सफलता मिली, वह हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंके इतिहासमें गौरवकी वस्तु है। इस सफलताका श्रेय विद्वान् लेखकों, संरक्षक-सहायकों और ग्राहकोंको ही है। सहृदय स्नेही सज्जनों और सम्मान्य विद्वानोंने लेख एवं प्रशंसा-पत्र भेजकर तथा सहायक, ग्राहक, अजीवन सदस्य एवं दशवर्षीय पंचवर्षीय सदस्य बनाकर हमें जो सहयोग दिया उसके लिए हम उनके आभारी हैं। आशा है भविष्यमें भी इसी प्रकार उनका सहयोग हमें प्राप्त होता रहेगा। सोलनमें प्रेसकी सुविधा हो जानेसे गत छः वर्षोंसे सब अङ्क निश्चित तिथिसे सात दिन पहले पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत कर रहे हैं। आगेके सभी अङ्क इसी प्रकार ७ दिन पूर्व प्रकाशित हुआ करेंगे। आगामी 'नववर्षाङ्क' प्रथमनवरात्र १६ अक्टूबर ७४ को प्रकाशित होगा।

१८वें वर्षसे वार्षिक मूल्यमें दो रुपयेकी वृद्धि

विगत दो-तीन वर्षसे कागज, स्याही छपाई ब्लॉक डाकखर्च आदिके मूल्य सुरसाके मुखकी भाँति बढ़ते ही जा रहे हैं। गत वर्ष १९७३ से अब इस वर्ष १९७४ में कागज और स्याहीके मूल्य प्रायः दुगुने हो चुके हैं। अतः बड़े-बड़े प्रतिष्ठित दैनिक साप्ताहिक मासिक पत्रपत्रिकाओंने अपना मूल्य बढ़ा दिया और पृष्ठ भी बहुत कम आधे कर दिये हैं। इस समय हम प्रतिवर्ष नववर्षाङ्क सहित 'ज्योतिष्मती'में ३२० पृष्ठकी सामग्री देते हैं। इस परम्पराको अब वर्तमान मूल्यमें चालू रखना सर्वथा असम्भव हो गया। कुछ स्नेही सज्जनोंने परामर्श दिया कि "इस उपयोगी पत्रिकाका मूल्य भले ही १५) रु० वार्षिक कर दिया जावे पर पृष्ठ न घटाये जावें। पाठकोंकी रुचिको ध्यानमें रखते हुए हमने 'ज्योतिष्मती' में पृष्ठ आगामी १८वें वर्षसे कम न करनेका विचार किया है और वार्षिक मूल्य भी १५) रु० न करके १२) रु० रखनेका निश्चय किया है। परंतु, जो ग्राहक नया १८वाँ वर्ष प्रारंभ होनेसे एक मास पहले ३० सितम्बर १९७४ तक कार्यालयमें मूल्य पहुंचा देंगे उनसे वार्षिक मूल्य ११) ग्यारह रुपये लिये जावेंगे। उन्हें केवल २) रु० अधिक देना पड़ेगा। अतः—

वार्षिक मूल्य ११) ग्यारह रुपये शीघ्र भिजवा दीजिए

इस १७वें वर्षके अन्तिम चौथे अंकमें जिन ग्राहकोंका मूल्य समाप्त हो रहा है उन्हें आगामी १८वाँ वर्षके चारों अंकोंके रियायती वार्षिक मूल्य ११) रु० का छपा हुआ मनीआर्डर फार्म साथ भेजा जा रहा है—वे १५ सितम्बर ७४ तक मनीआर्डर करा दें। अन्यथा ३० सितम्बरके बाद उन्हें वार्षिक मूल्य १२) रु० भेजना पड़ेगा। जिन ग्राहकोंका इस अंकमें मूल्य समाप्त नहीं है उनको छपा मनीआर्डर फार्म नहीं भेजा है। उनको आगामी वर्षके शेष अंक पुराने मूल्यमें ही यथासमय मिलेंगे।

नववर्षाङ्कमें अनुभूत मंत्र-यंत्र प्रयोग, प्रश्नफल विचार, क्या जटायु पक्षी था? रमलकी उपयोगिता, आयुर्वेद और ज्योतिषके अनुभूत योग और प्रत्येक वस्तुकी तेजी मंदी पर व्यापारीवर्गके लिए लाभकारी अनुभवी विद्वानोंके महत्वपूर्ण लेख तथा रोचक कथा कहानी प्रकाशित होंगी। विलम्ब करने पर अंक नहीं मिलेगा। वी०पी० किसीको भी नहीं भेजी जावेगी।

व्यवस्थापक—ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल-प्रदेश)

आवश्यक निवेदन

कागज और छपाईके मूल्यमें भारी वृद्धि हुई है। आवश्यकताके अनुसार कागज मिलना ही दुर्लभ हो गया है। अत: कई पत्र तो बन्द हो गये हैं और सभी बड़े पत्रोंने पृष्ठ आधे कर दिये हैं। इस विषम स्थितिमें भी हमने 'ज्योतिष्मती' के पृष्ठ अधिक नहीं घटाये हैं, अतः सहृदय पाठकोंका कर्तव्य है कि वे कमसे कम 'ज्योतिष्मती' का एक संरक्षक सहायक या आजीवन सदस्य बनाकर इस ज्ञानयज्ञमें सहयोग दें। यह न हो सके तो प्रत्येक ग्राहक कमसे कम एक नये ग्राहकका वार्षिक मूल्य ११) रुपया मनीआर्डर द्वारा भिजवाकर ही अपनी सदाशयताका परिचय दें।

यह अङ्क दि० २५ जून १९७४ को हम सब ग्राहकोंके नाम सोलनके बड़े डाकघरसे भेज रहे हैं। यदि किसी ग्राहकको ४ जुलाई तक भी यह अङ्क न मिले तो वे अपना ग्राहक नम्बर लिखकर मंगवा लें। १० जुलाईके बाद किसी भी ग्राहकको दुबारा अङ्क बिना मूल्य नहीं भेजा जावेगा। आजकल डाकमें भी भारी अव्यवस्था है। ग्राहकोंके अनेक अंक गुम हो जाते हैं। हर बार लगभग २०० अंक दुबारा भेजते हैं। पर अब कागजकी दुर्लभता के कारण अंक सीमित छपे हैं; अतः १० जुलाई के बादकी शिकायत पर हम दुबारा अंक किसीको भी नहीं भेज सकेंगे, यह नोट कर लें।

'ज्योतिष्मती' के आजीवन सदस्य बनकर लाभ उठावें

आजीवन सदस्य शुल्क १२५) है, जो जीवनमें एक बार भेजने पर केवल उनके जीवनकाल तक ही नहीं, अपितु 'ज्योतिष्मती' जब तक छपती रहेगी उन आजीवन सदस्योंके पुत्र पौत्रोंको भी 'ज्योतिष्मती' बिना मूल्य बराबर मिलती रहेगी। तथा प्रत्येक दशाब्दीके प्रारंभमें आजीवन सदस्यों की सूचीमें उनका शुभ नाम और पता छपता रहेगा। १२५) रु० भेजने वाले आजीवन सदस्योंको ६५) रु० का तत्काल लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। पचास रुपये मूल्यके २० गताङ्क और 'क्षयरोग चिकित्सा' ग्रन्थ ३०० पृष्ठका ५) रु० मूल्यका तथा 'केलिकुतूहल' नामक कामशास्त्रका अद्भुत ग्रन्थ भाषा टीका सहित १०) मूल्यका केवल डाकरजिस्ट्री खर्चके लिए ५) अधिक भेजने पर बिना मूल्य प्राप्त हो सकेगा।

ग्राहकोंको लाभदायक सूचना

'ज्योतिष्मती' के वर्तमान १७वें वर्षके इस चौथे अङ्क तक कुल ६८ अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं। इन अंकोंमें ज्योतिष, आयुर्वेद, सामुद्रिक, रमल और मंत्र तंत्र यंत्र सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण उपयोगी लेख छपे हैं, जो अन्यत्र उपलब्ध होना दुर्लभ है। दुर्लभ सामग्रीके कारण इन अंकोंमेंसे २१ अंक अब उपलब्ध नहीं है। शेष ४७ अङ्कोंकी भी थोड़ी प्रतियां बची हैं।

'ज्योतिष्मती' का वार्षिक मूल्य आगामी १८वें वर्षसे १२) रुपये हो जावेगा। पंचवर्षीय ५०) दशवर्षीय ९०.०० होगा। एक अङ्कका मूल्य ३) तीन रुपये होगा।

जो सज्जन 'ज्योतिष्मती' के दो नये ग्राहक बनाकर २२) रु० वार्षिक मूल्य मनीआर्डरसे भिजवा देंगे—उन्हें 'ज्योतिष्मती' के ४ गताङ्क १०) रु० मूल्यके उपहारमें बिना मूल्य भेजे जावेंगे। और ३ नये ग्राहकोंका मूल्य ३३) रु० भिजवा देंगे उन्हें ६ गताङ्क १५) रु० मूल्यके उपहारमें भेजे जावेंगे। नये ग्राहकोंका पूरा नाम पता और मनीआर्डर रसीदका नम्बर लिखना होगा।

—व्यवस्थापक ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

(श्रावण-प्र० द्वि० भाद्रपद-आश्विन । दि० ५ जुलाई से ३१ अक्टूबर १९७४ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ।।

वर्ष १७ | सोलन, आषाढ़ शु० १५ गुरुवार, सं० २०३१ वि० १३ आषाढ़ शाके १८९६ (४ जुलाई १९७४ ई०) | संख्या ४

हम विजयी हों, मातृभूमिके रक्षक बनें ।

विश्वाः पृतना जयेम ।। (ऋग्वेद २।४०।५)

अजेष्माद्यासनाम चाभूमनागसो वयम् ।
जाग्रत्स्वप्नः संकल्पः पापो यं द्विष्मस्तं संऋच्छतु ।
यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ।। (ऋग्वेद १०।६४।५)

हम सब युद्धमें विजयी हों । हम सब निर्दोष व निष्पाप हों, आज अभी तुरन्त विजयी हों और उन्नत बनें । जागृत व स्वप्न कालके बुरे विचार हमसे दूर हों, जो एक व्यक्ति हमसे द्वेष करता है उसीको ये (पाप) जावें ।।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तः अरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु ।
बभ्रुः कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां, ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम् ।।
अजीतोऽहतो अक्षतो अध्येष्ठं पृथिवीमहम् ।। (अथर्व० १२-१-११)

हे माँ ! हिम-मण्डित पर्वत व सघन वन कान्तार सुखदायी हों । खेती व उद्यान नाना विध धान्य फल-फूल-मूल भरण-पोषण कारी हों । हमारी विस्तृता मही सशस्त्र वीरोंसे सुरक्षित हो, हम अजेय अपराजित अमर मर्त्य स्वदेशके सुयोग्य प्रशासक हों ।।

सम्पादकीय विचार —

भारतीय वैज्ञानिकोंका हार्दिक अभिनन्दन

ताताकी सहायतासे अणु-विज्ञानाचार्य भाभाका १९४५ में प्रारम्भ किया गया महद् अनुष्ठान १८ मई १९७४ को प्रात: ८—५ बजे अणुशक्ति कमीशनके अध्यक्ष होमी सेठनाके नेतृत्वमें पूर्ण हुआ। इसके साथ भारतने अणु-क्लबमें प्रवेश किया।

भारतने न्यूक्लीयरका विस्फोट पोकरण (राजस्थान) में १०० मीटर भूमिके नीचे गड्ढे में वैज्ञानिक श्री रामन्नाकी देखरेखमें किया। १९७२ में यह विस्फोट आन्ध्र प्रदेशमें करनेका प्रयत्न किया गया था। किन्तु, कुछ प्लूटोनियम की मात्राकी कमी होने और दूरके नियंत्रकके ठीक रीतिसे काम न कर सकनेके कारण वह परीक्षण विफल रहा। इस विफलतासे अनुभव लेकर कमीको दूर किया गया, दूरवर्ती नियंत्रक प्रणाली उन्नत की गई। फलत: १८ मईको ८ बजे प्रात: अपेक्षाके अनुसार कैमरेके क्लिकके समान सफल क्लिक हुआ और कुछ क्षणोंमें ही ४०० मीटर व्यासका गड्ढा हो गया। विशेष बात यह हुई कि रेडियो धर्मिता व अणु उत्सर्जनका खतरा उत्पन्न नहीं हुआ। भगवान् बुद्ध हँसे। परन्तु, उनका हास्य विस्फारित नहीं हुआ।

भारतमें यह क्षमता १९६२ में भी थी। ब्रिटिश अणु विशेषज्ञोंने भविष्यवाणी की थी कि भारत १९६३ में और चीन १९६४ में अणु विस्फोट करेगा। चीनने १९६४ में लोपनारमें पहला अणु बमका विस्फोट किया। उस समय श्रीमती गांधीने दुर्गापुर कांग्रेसमें अणुबम बनाने की प्रबल मांग करने वालोंको जवाब देते हुए कहा था 'चीनने तो अणु विस्फोट जनताको नंगा भूखा रख कर किया है। हम जनताको भूखा रखकर अणु विस्फोट नहीं करना चाहते।' इसके जवाबमें समाजवादी नेता श्री गौरे एम.पी. ने कहा—"चीनने कुछ किया तो सही। कांग्रेसने जनताको भूखा प्यासा रखा, फिर भी कुछ नहीं किया।" इस वास्ते जो लोग कहते हैं "श्रीमती गांधीने अपने नेतृत्वकी ढहती दीवारको सहारा देनेके लिए अणु-विस्फोट राजनीतिक दृष्टिसे कराया है" उनको सर्वथा गलत नहीं कहा जा सकता। १९६४ की तुलना में १९७४ में भारतमें भुखमरी बढ़ी है, नंगापन भी बढ़ा है। इस वास्ते १९७४ में पोकरण-विस्फोट सर्वथा राजनीतिसे मुक्त नहीं माना जा सकता। चीनके जवाबमें देश रक्षाके लिए तो यह नहीं किया गया यह तो सत्य है न। विस्फोटके बाद भी हरेकके समक्ष सफाई दी जा रही है—'भारतका कोई इरादा आणविक शस्त्रास्त्र बनाना नहीं। वह शान्तिकार्यों और औद्योगिक प्रगतिको तीव्र करनेमें केवल अणु-शक्तिका उपयोग करेगा।' इसके जवाबमें कहा जाता है कि सोवियत रूससे प्राप्त सुखौनी विमान आणविक शस्त्रास्त्रों और मिसाइलों को ले जा सकते हैं। इन्दिरा-सरकार चीन अपहृत भू भागको वापस लेने, तिब्बतको स्वाधीन कराने और बृहत्तर भारतका निर्माण करनेका कोई इरादा नहीं रखती। क्योंकि वह निम्न श्लोकका नित्य पाठ करने वालोंको हतवीर्य निस्तेज बनाए रखना चाहती है।

नित्य पाठका श्लोक यह है :—

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः,
सनातनोप्यसि पिङ्गली च ।
सप्तस्वर सप्त रसातलानि,
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।

इन्दिरा-सरकार, शासक पार्टी और शासक-दल वृहत्तर भारतका स्वप्न तक नहीं लेता। इसके निर्माणकी बात तो दूर रही । अतः निर्बल भारत भूमिके प्रति भक्ति न रखने वाला वर्ग अणुबम न बनानेका जो वचन देता है वह ठीक देता है। बड़े राष्ट्र भले ही विश्वास न करें । नेहरू-नीति कायरता और आत्म-समर्पणकी नीति है । विभक्त-भारत और १९७४ की आर्थिक विपत्ति इसीका परिणाम है। पाकिस्तान व्यर्थमें परेशान होता है । अंग्रेजी राजके भारतमें रहते चलते, उसको कोई भय नहीं । यदि चीनके नागूची क्षेत्रमें ल्हासासे १५० मील दूर तैयार हो रहे अणु-केन्द्रसे उसको भय नहीं, तो पोकरणसे उसको क्यों भय हो ?

जो लोग सरकार पर अणु बम बनानेका दबाव डाल रहे हैं वे यह नहीं देखते की भारत ने १० से १५ किलोमीटर टी. एन. टी. तककी अणुशक्तिका विस्फोट किया है । हिरोशिमा पर पड़े बमकी क्षमता २० टी.एन.टी. थी। विश्व लोकमतसे भयभीत, आत्म-विश्वाससे शून्य, विजयाकांक्षासे रहित इन्दिरा-सरकार किस वास्ते बम बनायेगी । १९६२ में क्या डा० भाभाने नहीं कहा था कि यदि सरकार चाहे तो हम तीन मासमें अणुबम तैयार कर सकते हैं। तब आक्रान्ता चीन भारत पर चढ़ा हुआ था। अतः यह माननेमें कोई आपत्ति न होनी चाहिए कि बर्तमान नपुंसक शासक वर्ग के रहते भारत अणुबम नहीं बनायेगा। विचित्र बात यह है कि जो अणुबम बनानेका आग्रह करते हैं और इसको आवश्यक मानते हैं वे भी अंग्रेजी राज चाहते हैं, और भारत प्रायःद्वीप को एक देश एक राष्ट्र नहीं मानते। क्योंकि अणुबम बनानेका अर्थ है विभक्त भारतका एक शक्ति-सम्पन्न बलशाली राष्ट्र होना। जिसका परराष्ट्र-मंत्री होनेका भुट्टो भी कभी स्वप्न लेते थे।

अंग्रेजी राजका अन्त किए वगैर भारत अणुशक्ति-सम्पन्न न होगा । यह एक ध्रुव सत्य है। जब भारतीय जनता ऋषिका यह सन्देश ग्रहण करेगी तभी वह आणविक शस्त्रा-स्त्रोंसे सम्पन्न होगी। ऋषिकी यह वाणी क्या पुनः भारतीय आकाशमें गूंजेगी—

अप्रतीतो जयति संधनानि
प्रतिजन्या न्युत या सजन्या ।
अवस्यवे यो वरिवहः कृणोति ब्रह्मणो
राजा तमवन्ति देवाः ।।

(ऋ० ४।५०।९)

पीछे न हटने वाला व्यक्ति ही देश व राष्ट्र-धन उत्तम रीतिसे प्राप्त करता है। जो राजा आत्म-संरक्षण करने वाले ज्ञानीको धन देता है, उसकी सब विद्वान् रक्षा करते हैं।

क्या वैज्ञानिकोंका रामलीलाके मैदानमें सार्वजनिक रूपसे सम्मान किया गया ? क्या उनकी शासनने पूजा की ? अतिरिक्त गजट निकाल कर क्या उनकी विशेष रूपसे प्रशंसा की गई ? फिर पोकरण विस्फोट भारतकी आर्थिक प्रगतिको तीव्र करेगा, जनता यह कैसे विश्वास करे ?

श्री होमी सेठना, श्री रमन्ना और लगभग ४६ वैज्ञानिकोंके अनुशासित, संगठित नियोजित प्रयत्नका फल पोकरण विस्फोट है जहां १८ मईको बना रेतीला पहाड़ इसकी साक्षी दे रहा है। भारत राष्ट्रका माथा ऊंचा करने वाले वैज्ञानिकोंका ७० करोड़ भारतीय जनताके स्वरमें स्वर मिलाकर हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। भारतकी बुद्धि, प्रतिभा और इसकी ज्ञान-गरिमाको इनके कारण विश्वसे मान्यता प्राप्त हुई है। भारत पुनः जगद्गुरु होगा, यह विश्वास पुनः जागृत हो गया है। मनुका यह सन्देश पुनः सुना जायेगा और माना जायेगा—

एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्व स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः॥
(मनु० २।२०)

इस भावना और पवित्र संदेशको पुनः जागृत करने वाले वैज्ञानिकोंका कौन भारतीय सादर और विनम्र भावसे अनिन्दन न करेगा।

पहला नहीं

भूगर्भ गत विस्फोट पोकरणका पहला नहीं है। हां, भारतका प्लूटोनियम तंत्र और तकनीक अपना है। क्योंकि अमेरिका और सोवियत रूस १९६३ से भूमिभगत विस्फोट परीक्षण बराबर कर रहे हैं। अब तक इस संख्यामें किए हैं :–

भूगत परीक्षण	व्यय
अमेरिका २५५	३५ अरब डालर
सोवियत रूस ९०	——

इस वास्ते भारतका यह गर्व करना वृथा है कि वह भूमिगत परीक्षण करने वाला पहला देश है। वह तीसरा देश है। क्या चीन भी भविष्यमें भूमिगत ही विस्फोट करेगा? इस प्रश्नके उत्तर पर डा० कीसिंजरका भविष्य निर्भर है। क्योंकि चीनके यह मानने पर ही सोवियत रूस डा० कीसिंजरसे बात करेगा। अन्यथा फरवरी १९७४ के समान उनको अपमानित होना पड़ेगा और बिना वार्ता चलाए वापस आना पड़ेगा। निक्सन प्रशासन इस वास्ते भारतके पोकरण विस्फोटसे प्रसन्न नहीं है। वह प्रस्तावित (बजट में) ६९ करोड़ रु० की सहायता रोक लेना चाहता है। स्वाभिमानी भारत क्यों किसीके आगे हाथ पसारे? क्यों न वह रूसी मार्गका त्याग कर भारतीय मार्ग को ग्रहण करे। क्या सरकार अब भी चेतेगी?

सावधान हों

सोवियत रूस और उसके अनुवर्त्ती देशोंके साथ किए गए आर्थिक व व्यापारिक पैक्टों पर पुनः विचार करने और उनमें भारतीयहित की दृष्टिसे संशोधन करनेकी आवश्यकता है। क्योंकि कम्युनिस्ट देशोंने अपनी वस्तुओंका दाम तीन चार गुना बढ़ा दिया है। अतः मूल्यमें पूरा होते हुए भी आयात माल कागज, फर्टीलाइजर आदि मात्रा और परिमाणमें कम होगा। भारतमें भी कीमतें बढ़ी हैं, पर कम्युनिस्ट देशोंके समान नहीं। हिसाब लगाया गया है कि इन देशोंके साथ भारतका व्यापार प्रतिकूल होगा। इसकी मात्रा २०० करोड़ रु० तक होगी। यह भारत कैसे पूरा करेगा? लिए हुए ऋणका सूद इससे अलग है।

अतः इन देशोंके साथ किए गए व्यापार पैक्टों पर पुनः विचार करना चाहिए। दूसरे अपने देशमें मंहगाई बढ़ाकर मालकी कमी उत्पन्न कर इन देशोंको माल निर्यात करनेकी

नीति पर पुर्नविचार करना चाहिए। भारतमें एक केला २५ पैसेमें बिके और मास्कोमें १० पैसेमें बिके, यह व्यापार नहीं कहा जा सकता। भारतीय जनताको भूखा रखकर कम्युनिस्ट देशोंका पेट भरनेकी व्यापार नीतिमें तुरन्त परिवर्तन करनेकी आवश्यकता है। क्या इन्दिरा-सरकारके ध्यानमें कभी यह बात आयेगी ?

बिहारका मोर्चा तैयार

बिहारके मोर्चेकी कमान गृहमंत्री श्री उमाशंकर दीक्षितने संभाली है। यह इस बात का प्रमाण है कि मियां गफूरको प्रधानमंत्री तक बिहार विधानसभा कांग्रेस पार्टीका योग्य नेता नहीं मानते। प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी विश्वास नहीं करतीं कि श्री गफूर मियांके मुख्यमंत्री रहते बिहारमें इन्दिरा-कांग्रेस पार्टी विरोधियोंके पहले ही धक्केसे बिखर न जायेगी। अतः गृहमंत्रीको बिहारका मोर्चा दिया गया है। सेनापतिने सेनाकी ड्रिल (पार्टी की बैठक) देखनेके बाद कहा है 'विधानसभा को भंग करनेका आन्दोलन विफल होगा। जून १९७ : में बिहार विधानसभाका विसर्जन न होगा।' परन्तु श्रीमती गांधीकी कमान कमजोर है। क्योंकि यदि उनकी पार्टी गफूर मियांको नेता माननेको तैयार नहीं तो प्रधानमंत्री विधान-सभाको भंग करने और राष्ट्रपतिका शासन स्थापित करनेको कुछ दिन पहले तक तैयार थीं। इसका अर्थ है कि विधानसभा भंग करने के विरुद्ध उनको कोई आपत्ति नहीं है। उनका आग्रह इतना मात्र है कि उनके नेतृत्वको चुनौती न दी जाये। उनकी इच्छाका सम्मान किया जाये। पार्लमैंट्री शासन प्रणालीकी रक्षा की कोई बात नहीं। यह विरोधियोंकी नैतिक विजय है। युद्धका शंखनाद होनेसे पहले ही प्रधानमंत्रीने अपनी हार मान ली है। अब तो इतना ही विचारका विषय रहता है कि बिहार विधानसभा १९७४ में समाप्त होती है या नहीं।

'इस सड़ी गली निकम्मी सरकारको एक धक्का और जोर का दो'

छात्रोंको सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाशका नेतृत्व प्राप्त है। वह ७२ सालकी आयुमें अपने स्वास्थ्यको खतरेमें डालकर राजभवन पर मोर्चा लगानेनेके लिए बैल्लौरका हस्पताल छोड़कर पटना पहुंचे हैं। पांच लाख शान्त ग्रामीण जनताको लेकर राजभवन पहुंचे और राज्यपाल को एक करोड़ २० लाखके हस्ताक्षरों एवं अंगूठा छापके बण्डल भेंट किये और कहा कि विधानसभा तुरन्त भंग कर दी जाये। ७ जूनसे विधानसभाके चारों दर्वाजों पर धरना प्रारंभ है। २९३ व्यक्ति गिरफ्तार हो चुके हैं। गृहमंत्रीने जयप्रकाश बाबूसे अपील की है कि वह पार्लमैंट्री-शासन—प्रणाली पर हमला न करें। किन्तु वह भूल गए कि सर्वोदयी नेता जब सोशलिस्ट नेता था तब १९५१ में वह कनाट प्लेसमें यह नारा लगाने वाले जुलूसका नेतृत्व कर रहा था—"इस सड़ी गली निकम्मी सरकारको एक धक्का और जोरका दो।" १९५१ में उसका जयघोष किसीने नहीं सुना। १९७४ में बिहारके तरुण वर्गने उसको सुना है और पकड़ा है। जयप्रकाश बाबू मानते हैं कि उनका आन्दोलन विशुद्ध रूपसे वैधानिक नहीं है। पर जब नौकरशाही ही भ्रष्ट है, चुनाव अपार पैसा लगाकर जीता जाता है, तो उनके पास और दूसरा उपाय क्या है ? शासन भ्रष्ट

है, जब यह सरकार और श्री दीक्षित भी मानते हैं, तो वह क्यों इस सड़ी गली सरकार की रक्षाके लिए कमर कस रहे हैं। क्यों नहीं वह उनका साथ देते और भ्रष्टाचारका अन्त करनेमें सहायता देते ?

जनतंत्रकी हत्या

श्रीमती गांधी निर्वाचन कमीशनको अपनी इच्छानुसार चलाती है। गुजरात-विधानसभा को भङ्ग हुए लगभग तीन मास बीत गए, परन्तु वहां नव-निर्वाचन होनेकी तिथि घोषित नहीं की गई। परन्तु, विहारमें १७ सदस्योंके त्याग-पत्रसे रिक्त हुए स्थानोंको भरनेके वास्ते जुलाई में उपचुनाव होनेकी घोषणा की जा चुकी है। स्व० बरकतुल्लाकी मृत्युसे रिक्त तिजाराकी सीटके वास्ते लगभग दस मास बाद २६ मईको चुनाव हुआ। क्या कोई नियम या सिद्धान्त काम कर रहा है ? यह लोकतंत्र है, या अधि-नायक तंत्र ? फिर पार्लमैंट व विधानसभाके सदस्योंका त्यागपत्र स्पीकर उस समय तक स्वीकार न करेगा जब तक उसको यह तसल्ली न हो जायेगी कि त्यागपत्र सदस्यने स्वेच्छासे दिया है, डराने धमकाने और लाचारीमें नहीं दिया है। यह ३३वाँ संशोधन शासक पार्टीने क्या अपने तरकसके वास्ते बनाते हुए लोकतंत्र की रक्षा की है, या जनतंत्र पर भारी गदा प्रहार किया है और स्पीकरको शासक पार्टी का एक हथियार और सी.आई.डी. का आदमी बना दिया है। श्री दीक्षितने इस संशोधन पर पार्लमैंटको विचार करनेके लिए दो दिन देना भी उचित नहीं समझा। यह हथियार बिहारके मोर्चे पर बरता जायेगा। स्पीकर अब सदनके हितोंका रक्षक न होकर शासक पार्टीके हितों की रक्षा और उसका क्रीत दास होगा। क्या यह जनतंत्रको कुचल कर जनताकी इच्छाको अमान्य कर अधिनायक-तंत्र स्थापित करने और पार्लमैंट्री शासन प्रणालीका अन्त करनेकी भूमिका नहीं है ? फिर भी गृहमंत्री श्री दीक्षित का पार्लमैंट्री शासन प्रणालीकी रक्षाके लिए सर्वोदयी नेतासे अपील करनेका कोई अर्थ शेष रह जाता है ? अतः जून १९७४ में बिहार विधानसभा भंग हो या न हो भारतमें अरा-जकता अव्यवस्थाका प्रसार होगा। इन्दिरा-सरकार मंहगाईसे लड़नेके बदले सामान्य जनतासे लड़ रही है। सेना और पुलिसकी मददसे वह विजय पा सकती है, पर जनताके दिल पर शासन नहीं कर सकती। अंग्रेजी शासनका अन्त करके ही वह यह कर सकती है। क्या वह इसके लिए तैयार है ? नहीं तो आज फिर बिहार है, कल असम और बंगाल है, परसों मध्यप्रदेश और राजस्थान है। चौथे दिन महाराष्ट्र है।

तीसरे महायुद्धकी ओर

विश्व नववधूके समान धीरे-धीरे तीसरे महायुद्धकी ओर बढ रहा है। भारतके पोकरण विस्फोटने इसराइल, ईरान, मिश्र, द० अफ्रीका और ब्राजीलको अणुबम बनानेकी प्रेरणा दी है। भारतके समान इनके समक्ष आर्थिक कठि-नाई नहीं। भारतने इनको अणुबम बनानेका साहस दिया है। इसके कारण अमेरिका और रूसने अपने पास रखे अणुबमोंके भण्डारको समुद्रमें फैंक देनेके बदले नये जोशसे शस्त्रास्त्रों का निर्माण किया है। आमूर-यूसिसीरी नदियों के क्षेत्रमें रूस और चीनमें चौंचें लड़ रही हैं। यद्यपि चीन बूढ़ोंकी जगह नया नेता चुननेमें

व्यस्त है। यह यदि गृहयुद्धमें परिणत हो गया, तो रूस-चीन सग्राम बिलम्बित हो जायेगा। सोवियत रूस यूरोपमें लड़नेकी क्षमता नहीं रखता। नाटो भंग होनेके बदले दृढ़ हो रहा है। फ्रांस और जर्मनीके नये शासक यूरोपमें अमेरिकी सेनाकी उपस्थिति आवश्यक मानते हैं। अतः यूरोपमें लड़नेका अर्थ है अमेरिकासे लड़ना और अमेरिकाको चीनका सहायक बनाना। रूस भूलकर भी यह नहीं चाहता। चीन और रूस भारत प्रायःद्वीपमें भी लड़ सकते हैं। भारत विभक्त है। इस्लाम लड़नेको सदा प्रस्तुत है। चीनके अणुबम बनाने पर भुट्टोने चीनको बधाई दी थी। अतः इस्लाम चीनकी सहायता पाकर भारतमें लड़ेगा। तीसरा रण-क्षेत्र पश्चिमी एशिया है। यहां तीनों अणुबमसे सम्पन्न शक्तियोंके अड्डे तैयार हो रहे हैं। डा० कीसिंजर सीरिया और इजराइलकी लड़ाई सात मास बाद समाप्त करनेमें सफल हुए हैं। लगातार ३९ दिन वह शटलके समान बेरूत, तेलअबीब दमिश्कका चक्कर काटते रहे। ग्रेमिको और कभी-कभी कोसीजिन भी सीरिया की हिम्मत बढ़ाने दमिश्क पहुंचते रहे। इसी एक बातसे समझा जा सकता है कि तेल उत्पादक क्षेत्रोंके देशोंकी स्थिति कितनी महत्वपूर्ण है। इजराइल और फिलस्तीनकी लड़ाई चल रही है। यह कभी भी बढ़ सकती है। यह रणक्षेत्र आज भी शान्त नहीं है। आग सुलग रही है। ये तीन सम्भावित रणक्षेत्र हैं। मिभक्त भारत विश्व-शान्तिको भंग करने वाला है, क्या इस सत्यको शान्तिप्रेमी भारत कभी स्वीकार करेगा।

राष्ट्रपति

भारतका नया राष्ट्रपति कौन होगा? इस समय अखिल भारतीय व्यापक प्रभाव और प्रतिष्ठाका कोई व्यक्ति नहीं है। सर्वोदयीनेता श्री जयप्रकाश नारायण इसके अपवाद हैं। पर वह सत्ताकी राजनीतिसे अलिप्त हैं। १९२० में जब उन्होंने कालेज छोड़ा उस समयसे उन्होंने सत्ताकी कुर्सीकी ओरसे मुंह फेर रखा है और पीठ की हुई है। इन्दिरा-कांग्रेसके चोटीके नेता राष्ट्रपतिभवनमें प्रवेश करना नहीं चाहते। वह अब शोभाकी भी जगह नहीं रही। श्री गिरिके राष्ट्रपतित्व-कालने यह तथ्य प्रकट कर दिया है। वह प्रधानमंत्रीकी कठपुतलीके वास्ते जगह हो गई है। इस प्रकारका व्यक्ति अल्पसंख्यक वर्गका हीं हो सकता है। पारसी अल्पसंख्यक नहीं माने जाते। अल्पसंख्यक वर्ग सरकारी दृष्टिसे मुस्लिम हैं, सिक्ख भी इसके दावेदार हैं। ईसाई यह स्थिति पानेके लिए प्रयत्नशील हैं।

अतः कृषिमंत्री श्री फखरूद्दीन और सरदार स्वर्णसिंह ये दो उम्मीदबार हैं। इनमेंसे प्रधानमंत्रीका जिस ओर अधिक रुझान होगा वह राष्ट्रपति भवनमें प्रवेश करेगा। क्योंकि यहां योग्यता, प्रतियोगिताका प्रश्न नहीं है। सैक्युलरिज्म (ऐहिकबाद) की रक्षाका प्रश्न है। इसका अर्थ है सरकार ऐसा कोई काम न करे जिससे बृहत्तर भारतके निर्माणका विचार सम्पुष्ट हो, भारत धर्मका पुनरुत्थान हो और पुनर्जीवन हो। अतः कट्टर भारतीयका प्रवेश वहां निषिद्ध है। मास्को उसको न चाहेगा। क्योंकि साइबेरिया पर जिस युक्तिसे रूसका अधिकार और प्रभुत्व है उसी युक्तिसे भारतका भी है। भारतकी बढ़ती जनसंख्याको बसाने के लिए स्थान चाहिए। अतः मास्कोकी स्वी-

कृति ली जायेगी, श्री गिरिका प्रस्ताव मास्को (नैशन) ने ही पहले किया था। अतः इस बार भी उसकी स्वीकृति और पसन्दसे होगा। यह माननेमें कोई दुविधा न होनी चाहिए।

संस्कृत बहिष्कृत

तमिलनाडुके मन्दिरोंसे संस्कृत बहिष्कृत कर दी गई है। नया आदेश है कि 'अर्चना एकमात्र तमिलमें हो, संस्कृतमें कोई नहीं।' चर्च और मस्जिदोंके लिए यह नियम नहीं है। यह नेहरू-नीति है। सेक्युलरिज्मका सरल अर्थ है हिन्दू जाति व हिन्दू धर्मका उच्छेद। स्व० श्री श्री-प्रकाशने सम्भवतः इसीका विचार करके कहा था १०० साल बाद भारतमें भी हिन्दू न रहेगा। इस देशकी एकताको दृढ़ करने वाली भाषा संस्कृत है। यह देववाणी कही जाती है। इसकी शासनने घोर उपेक्षा की है। क्योंकि भारत-भक्तिका नाश करना अभीष्ट है। इसके अभावमें १९४६ के निर्वाचन पत्रमें की गई घोषणाके विरुद्ध भारत विभाजन स्वीकार करनेके महापाप पर पर्दा कैसे पड़ा रह सकता है। ऋषि कहता है श्रद्धासे ही सब कुछ सम्पन्न हो सकता है। ऋषिकी वाणी है :–

श्रद्धयाग्नि समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि॥
(ऋ० १०।१५१।१)

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यं दिनं परि।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धा पयेहनः॥
(ऋ० १०।१५१।५)

भारतभूमिके प्रति श्रद्धाको जगाया नहीं जाता, तब तक इस प्रकारकी विपत्तियोंका साहसके साथ सामना करना ही शेष रह जाता है। विचित्र बात है कि शासक पार्टीने भारतीय एकता विरोधी तत्वोंकी निन्दामें एक शब्द नहीं कहा। भारत भक्तोंको अपनी शक्तिके सहारे ही भारत विरोधियोंसे लड़ाई करनी होगी। प्रश्न यही है क्या भारत भक्त इस संग्रामके लिए तैयार है?

प्रतिबद्ध जज

पंजाब, हरयाणा हाईकोर्टका चीफ जस्टिस श्री पण्डितको नहीं बनाया गया। क्योंकि वह श्रीमती गांधीकी दृष्टिमें कम्युनिस्ट नहीं माना गया। जैसे सुप्रीमकोर्टके नव-नियुक्त जज श्री ऐयर प्रथित कम्युनिस्ट हैं। न्यायालयोंके जज राजनीतिक विचारकी दृष्टिसे नियुक्त होने लगे हैं। योग्यता, निष्पक्षपातता, विद्वत्ताके कारण नहीं। हिमाचल प्रदेशके हाईकोर्टके चीफ जस्टिस पद पर उपराष्ट्रपति श्री पाठकके छोटे पुत्रको नियुक्त किया गया है। यद्यपि वह इलाहाबाद हाईकोर्टमें एक जूनियर जज थे। सुना गया है कि उनको सुप्रीम-कोर्टका एक जज बनानेकी इच्छासे यह किया गया है। इन्दिरा-सरकारने न्यायालयोंको मोमका पुतला बना दिया है। क्या ये न्यायालय जनताका विश्वास प्राप्त कर सकेंगे। न्यायालयोंकी प्रतिष्ठा श्रीमती गांधीने नष्ट कर दी है।

नागालैंडमें ईसाई प्रदेश बन रहा है

नागालैंडका आधा नाम ही ईसाइयतको सूचित करता है। वहांके वर्तमान शासक ईसाई हैं, यद्यपि उनका बहुमत नहीं है। अतः शासन विदेशी मिशनरियोंकी सहायतासे बड़ी संख्या में लोगोंको ईसाई बनानेका कार्य जोरोंसे कर रहा है। पिछले दस सालोंमें कैसी प्रगति हुई

(शेष पृष्ठ ६१ पर)

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

स्वतन्त्र भारतके २८वें वर्षलग्नके ग्रहयोग

तेरह दिनके पक्ष और पंचग्रहीका प्रभाव

मंत्रिमण्डलोंमें परिवर्तन, नये राष्ट्रपतिका चुनाव

विदेशी विख्यात दैवज्ञोंकी भविष्यवाणियां

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

पाठकोंको स्मरण होगा, गतवर्ष इन्हीं दिनों 'ज्योतिष्मती' के १६वें वर्षके चौथे अङ्कमें स्वतन्त्र भारतके २७वें वर्षके ग्रहयोगोंका उल्लेख करते हुए पृष्ठ १६ पर लिखा था—

"...खाद्यान्न समस्या भारत ही नहीं विश्वके लिए चिन्ताका कारण बनेगी। महगाईके कारण मध्यमवर्ग एवं श्रमजीवियोंको जीवनयापन दूभर होगा। धन स्थानमें नीच का गुरु, मंगलसे दृष्ट और धनेश शनि, राहुके साथ होनेसे आर्थिक संकट बढ़ेगा। अर्थाभावके कारण योजनाएं अधूरी रहेंगी।"

तदनन्तर सं० २०३१ के 'श्रीविश्वविजय-पंचांग'में पृष्ठ २६-२७ पर भारतीय गणराज्य के २५वें वर्षकी कुण्डलीके नीचे 'भीड़तन्त्रसे सावधान' शीर्षकमें स्पष्ट लिखा था—

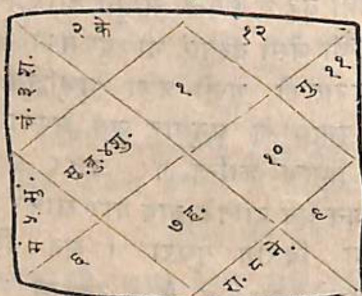
"...यह योग इस वर्ष भारतीय गणतन्त्र के लिए अग्नि परीक्षाका है।...यहां यह फलितार्थ निकलता है कि इस वर्ष राष्ट्रको सबसे बुरे आर्थिक राजनैतिक संकटका सामना करना पड़ेगा।...हड़ताल बन्द घेराव आदि उपद्रवोंसे जनजीवन अव्यवस्थित क्षुब्ध होगा। आयात निर्यातमें व्यवधान पड़नेसे भी गम्भीर आर्थिक संकट पैदा होगा। यदि शासनसूत्र संचालकोंने समय रहते इस भीड़तन्त्रकी प्रवृत्ति पर अंकुश नहीं लगाया तो भारतमें प्रजातंत्रका भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा। मंहगाई दूर नहीं होगी। खाद्यान्न तैल घृत गुड़ शक्कर पेट्रोल लोहा, पित्तल, सुवर्ण चांदीका भाव तेज रहेगा।"

गेहूं घृत तैल पेट्रोल सोना चांदी लकड़ी कोयला और प्रत्येक जीवनोपयोगी वस्तुओंके भाव इस वर्षमें जितने बढ़े हैं, उतने स्वतन्त्रता के विगत २७ वर्षोंमें और अंग्रेजी राजमें भी कभी नहीं बढ़े थे। तैल साबुन और वनस्पति डालडा घी जैसी वस्तुएं भी दुष्प्राप्य हो गयी हैं। गुजरातकी भूखी प्रजा 'बुभुक्षितः किं न करोति पापम्' के अनुसार जब अपना विवेक खोकर हिंसक क्रान्ति पर उत्तर आई तब अपार जन-धन हानिके बाद मार खाकर केन्द्रीय शासनका दिमाग सुधरा। अब बिहारमें यही कुछ होने जा रहा है। स्वतन्त्र भारतके २८वें वर्षमें बिहारमें गफूर मियांका मंत्रिमण्डल नहीं रह पायेगा, अतः केन्द्रीय शासन जितना जल्दी बिहारकी समस्याको सुलझा देगा उतनी ही सम्पत्तिकी हानि और जनाक्रोशसे बिहार को बचाया जा सकेगा। अन्न-समस्या गम्भीर

बननेकी चेतावनी हम विगत ८ वर्षोंसे अपने पंचांग और इस पत्रिकामें बराबर देते आ रहे हैं। अब इस वर्षके ग्रहयोग भी गेहूँ गुड़ शक्कर घृत तैलादि खाद्य पदार्थोंके लिए समाधान कारक नहीं हैं। दो भाद्रपद मास और कार्तिकमें १३ दिनका पक्ष एवं पंचग्रही योग भी दुर्भिक्ष उत्पात अशान्तिकारक है। अब हम प्रवेश होने वाले स्वतन्त्र भारतके २८वें वर्षकी ग्रहस्थिति का दिग्दर्शन प्रस्तुत कर रहे हैं–

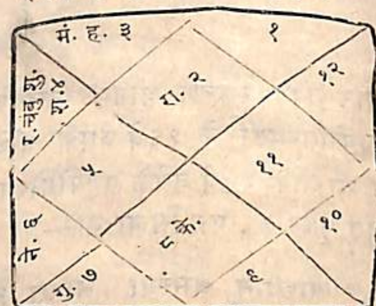
सं० २०३१ प्र० भाद्रपद कृ० ११ बुधवार दि० १४ अगस्त १९७४ को इष्ट घट्यादि ४०।४५ (स्टे०टा० रात्रि १०।११) सू० ३।२८ मेष लग्नके ४ थे अंशमें भारतको स्वतन्त्र हुए २७ वर्ष पूर्ण होकर २८वाँ वर्ष प्रवेश होगा। २७ वर्ष पूर्व स्वतन्त्रताकी उपलब्धि १४ अगस्त की अर्ध रात्रिमें हुई थी, अतः सौरमानसे वर्षारंभ प्रतिवर्ष प्रायः १४ अगस्तको ही होता है। स्वातन्त्र्योत्सव १५ अगस्त गुरुवार १९७४ को ही सर्वत्र मनाया जावेगा।

स्वतन्त्र भारतका २८वाँ वर्षलग्न



स्वतन्त्र भारतका यह वर्षलग्न जन्मलग्नसे १२वाँ और वर्ष लग्नेश मंगल एवं जन्मलग्नेश शुक्रमें भी द्विर्द्वादश योग है। वर्षेश मंगल, शनि राहुसे दृष्ट है। धनभावमें केतु, भौम दृष्ट और अष्टम भावमें राहु, नेपच्यूनकी युति है, यह ग्रहस्थिति ज्योतिषशास्त्रकी दृष्टिसे भारतके लिए आर्थिक राजनैतिक औद्योगिक स्थितिके लिए समाधानकारक नहीं है। आर्थिक संकट बढ़ेगा। मँहगाई और बेकारी भी बढ़ेगी। सर्वसाधारणके लिए जीवनोपयोगी वस्तुएँ प्राप्त करना दुर्लभ होगा। शासनमें भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद बढ़ेगा।

स्वतन्त्र भारतका जन्मलग्न



इस वर्षका १-४-५-८ वाँ मास राजनैतिक सामाजिक साम्प्रदायिक अशान्ति एवं पीड़ाकारक हैं। केन्द्र और प्रान्तीय मंत्रिमण्डलोंमें अकल्पित उलटफेर होंगे। इस वर्षके प्रारम्भमें (१५ अगस्त ७४ के बाद) होने वाले राष्ट्रपति चुनावमें भी कुछ कटुता पैदा होगी। दशमेश शनि दशमभावसे ६ठे सप्तमेश चन्द्रके साथ और अष्टममें मंगल मुंथा है, अतः भावी नये राष्ट्रपति अपना कार्यकाल पूर्ण रूपेण पार नहीं कर पायेंगे। इसका पूर्ण निर्णय जन्मकुण्डली एवं पदग्रहण कालीन कुण्डलीसे हो सकेगा। इतना निश्चित है कि इस बार जो भी राष्ट्रपति होगा—वह आर्य धर्मेतर प्राणी होगा। आर्य संस्कृतिकी गरिमा और अखण्ड भारतकी कल्पना उनके मस्तिष्कमें नहीं होगी। गुजरात विधानसभामें सत्तारूढ़ कांग्रेस बहुमत प्राप्त न कर सकेगी। वर्षारम्भसे पूर्व ही

(जुलाईके अन्त या अगस्त) बिहारके वर्तमान मुख्यमंत्री मियाँ गफूरको पदत्याग करना पड़ेगा। विधानसभामें सत्तारूढ़ कांग्रेसका बहुमत नहीं रहेगा।

आश्विन मास (सितम्बर १९७४) से आगे मध्यप्रदेश पंजाब बंगाल असम उड़ीसा महाराष्ट्र तमिलनाड राजस्थान कर्नाटक हरियाणा और हिमाचल-प्रदेशके मुख्यमंत्रियोंकी स्थिति डांवाडोल होने लगेगी। इन प्रान्तोंमें विरोधी तत्वोंकी गतिविधियां उग्र होंगी। वर्षान्त तक (१५ अगस्त ७५) कुछ प्रान्तोंमें राष्ट्रपति शासन होगा और कुछमें मुख्यमंत्री बदलेंगे। कुछेक प्रान्तोंके मंत्रिमण्डलोंमें सामान्य परिवर्तन होगा।

यद्यपि इस वर्षकी ग्रहस्थिति भारतको आर्थिक राजनैतिक संकटमें फँसाने वाली है, तथापि वर्षेश मंगल, मुंथाके साथ पंचम भावमें भाग्येश गुरु और राज्येश शनिसे इत्थशाल योग बना रहा है—यह सब प्रकारकी आपत्तियों पर विजय प्राप्त करके आत्मगौरव बढ़ाने वाला है। केन्द्रीय शासन सुदृढ़ होगा और विपत्तिके समय सभी दलोंका सहयोग मिलेगा। पंचम भाव विज्ञान विद्याबुद्धिकारक है, अतः भारत इस वर्ष वैज्ञानिक प्रगति एवं अनुसन्धान क्षेत्रमें गौरव प्राप्त करेगा। राजधानीमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तरका कोई विशाल आयोजन होगा। दो प्रमुख राजनैतिक अथवा वैज्ञानिकोंका देहावसान होगा। मंगल अष्टमेश भी हो गया है और अष्टममें राहु नेपच्यूनकी युति आर्थिक संकट, पारस्परिक मतभेद बढ़ाकर शासनके सामने विषम समस्या पैदा करेगा। वर्षारम्भसे पूर्व और बादमें पंचग्रहीके आसन्न केन्द्र तथा कुछ प्रान्तोंमें बन्द घेराव हड़तालसे असन्तोष व्याप्त होगा। नक्सलपंथी यत्रतत्र उत्पात करेंगे। परंतु सेनापति वर्षेश मंगल बलवान् है अतः इन पर काबू पा लिया जावेगा। यथा—

भौमेऽब्दपे बलिनि कीर्ति जयोऽरि नाशः,
सेनापतित्व रणनायकता प्रतिष्ठा।
जन्माब्दाङ्गपरन्ध्रपाब्दमुथहा—
नाथाबलाढ्यास्तदा।
रम्यं वर्ष मुशन्ति सर्वमतुलं
सौख्यं यशोऽर्थागमः॥

तेरह दिनका पक्ष और पंचग्रही योग

कार्तिक कृष्णपक्ष १३ दिनका है और इसी मासकी अमावस्या (दीपमाला) में तुला राशि पर सू. चं. मं. बु. शु. इन पांच ग्रहोंका योग बनेगा। यह संसारके लिए अशान्ति उत्पात कारक है। इस योगका अशुभ फल ३ मास आगे पीछे तक अर्थात् १३ अगस्त ७४ से १३ फरवरी ७५ तक यत्रतत्र होता रहेगा। कहीं प्रकृति-प्रकोप अतिवृष्टि अनावृष्टि बाढ़ भूकम्प महामारी समुद्री तूफान हिमपातसे, कहीं गृहयुद्ध राज्यक्रान्ति अग्निकाण्ड यान दुर्घटनासे हानि होगी। प्राचीनाचार्योंने लिखा है—

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदशदिनात्मकः।
भवेल्लोकक्षयो घोरो रुण्डमाला युता मही॥
एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥

अमेरिका इंगलेण्ड पाकिस्तान अरब राष्ट्र सोवियत रूस जर्मनी और जापान पर इस पंचग्रहीका विशेष प्रभाव पड़ेगा। तुला वृश्चिक मीन मेष कर्कराशि वाले व्यक्ति और राष्ट्र भी पीड़ित होंगे। शनि और गुरुसे इस पंचग्रही

का त्रिकोण योग है, अतः भारतको विशेष भय नहीं है। भारतके पूर्व दक्षिण समुद्र तटवर्ती प्रान्त पीड़ित होंगे।

शुक्रास्तका फल

आश्विन शु० १५ दि० १६ अक्टूबर ७४ को शुक्र राक्षसगण नक्षत्रमें पूर्वमें अस्त होकर मार्ग. कृ. ७ दि. ५ दिसम्बर ७४ को राक्षसगण नक्षत्रमें ही पश्चिममें उदय होगा। इसका फल भारत नेपाल आदि हिन्दू देशोंमें विग्रह, सिन्धु देश मारवाड़ सौराष्ट्र पांचाल विराट गुजरात और मालव प्रान्तमें दुर्भिक्ष, जनक्षय, दुर्ग-भंग, अन्नकी मंहगाई और नयी मुद्राका प्रचलन तथा किसी प्रधान पुरुषकी मृत्यु होना लिखा है। यथा–

> शुक्रास्ते राक्षसगणे हिन्दुदेशेषु विग्रहः।
> मरुस्थले सिन्धुदेशे दुर्भिक्षं मध्यमं भवेत्॥
> विराटढुंढपांचाल सौराष्ट्रेषु च रौरवम्।
> तथा राज्यपरावर्तो मालवेषु जनक्षयः॥
> जीर्णदुर्गें भयं भंगः पत्तनेऽन्नमहर्घता।
> नव्यमुद्राप्रकाशः स्याद्दक्षिणे सुखसम्पदः॥

इस वर्षकी वर्षा और वाणिज्य व्यवसायके सम्बन्धमें विशेष विवेचन वर्तमान वर्ष सं० २०३१ वि०के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में किया है वहां देखें।

विदेशी विख्यात दैवज्ञोंकी भविष्यवाणियां

अमेरिकन जनतामें फलित ज्योतिषके प्रति अभिरुचि उत्तरोत्तर बढ़ रही है। १९७४ के प्रारम्भमें अमेरिकाकी एक प्रसिद्ध पत्रिका 'दी ईलकवायरर' ने कुछ प्रमुख ज्योतिर्विदोंकी भविष्यवाणी प्रकाशित की थी–उसका हिन्दी रूपान्तर श्री जगदीशचन्द्र जे० पटेलने हमारे पास भेजा है। पाठकोंके लाभार्थ हम यहां कुछ उपयोगी भविष्यवाणियां प्रकाशित कर रहे हैं। इनमेंसे किसीने भी भारतके सम्बन्धमें कुछ नहीं कहा। अस्तु। अमेरिकाके बुवारखे. डेविन एन. ज्योतिषीने १९७४ के लिए यह भविष्यवाणी की है—

निक्सन छः वर्षसे अमेरिकाके प्रधान रहे हैं। अब १९७४ में अस्वस्थताके कारण पदत्याग करेंगे। वाटरगेट प्रकरणसे नहीं जायेंगे। अमेरिकाके डेमोक्रेटिक पक्षका नया कोमांड बाहर आयेगा, जो वाटरगेट प्रकरणको छिपा देगा। अन्नकी कमी विश्वके लिए भयंकर है। अमेरिका अन्नकी जगह किसी अन्य खाद्य पदार्थकी शोध करेगा। मध्य-पूर्वमें रक्तपात होगा, अमेरिका भी उसमें सहयोग देगा। विदेश-मंत्री हैनरी किसींजर जीवनमें सबसे बड़े सुखका अनुभव करेंगे।

शिकागोके ईरिन सुब्रीस ज्योतिषवेत्ता कहते हैं—मध्यपूर्वके रक्तपातमें सारा विश्व सम्मिलित होगा और अणुयुद्ध होगा। क्यूबाके फीडेल कास्ट्रोको रूस सत्ता स्थानसे फेंक देगा और बादमें हत्या होगी। चीनमें माओकी मृत्यु होगी।

लॉस एन्जलसके जेक्वी लाईन ईस्टवुड नामके ज्योतिषी कहते हैं—

मानव जातिने कभी देखा न हो ऐसे युद्ध की भूमिका १९७४ में तय्यार हो जावेगी।

स्व० केनेडीके पुत्र जॉन केनेडीका अप-हरण होगा। अमेरिकाका राजकीय चित्र बिगड़ेगा। किसी सुप्रसिद्ध व्यक्तिकी बेईमानी

(शेष पृष्ठ ६१ पर)

क्या हवन मनोरथ की पूर्ति करता है ?

[लेखक :—श्री विक्रमसिंहजी]

मनोरथ सिद्धिसे हमारा तात्पर्य अभाव या या आवश्यकताकी पूर्तिसे होता है । इसलिये विचार यह करना है कि अभाव या आवश्यकता क्या है ? उसका कारण क्या है ? वह कैसे दूर होती है, अर्थात् सिद्धान्त क्या है ? उससे हवनका क्या संबन्ध है ? और उस हवनकी विधि क्या है ?

अभाव व उसका कारण

कर्म सिद्धान्तके अनुसार मनुष्य पूर्व संचित कर्मोंसे जाति आयु और भोगका प्रारब्ध लेकर जन्म ग्रहण करता है । दूसरे शब्दोंमें हमारे कर्म जिस इन्द्रियके भोगके अनुरूप होते हैं उस के भोगमें हम सुख अनुभव करते हैं और जिस इन्द्रियके भोगके प्रतिकूल होते हैं उसका अभाव या दुःख अनुभव करते हैं । कर्म प्रवाह अनन्त है, उसकी सुख व दुःख रूपी धारायें निरन्तर बहती रहती हैं, जब किसी अभाव या कष्ट विशेषसे विचलित होकर हम इष्टकी शरण लेते हैं और कोई उत्कट पुण्य कर्म करते हैं तो उसके फलस्वरूप अभाव कुछ समयके लिये दब जाता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार खेतके किनारेसे बहती हुई नहर खेतको सिंचित नहीं कर सकती, लेकिन प्रयत्न करके नाली द्वारा नहरसे पानी प्राप्त करके खेतकी सिंचाई कर ली जाती है ।

सिद्धान्त

सृष्टि नियमोंमें परहितवाद या त्यागका सिद्धान्त मुख्य है । जो हम परहित कामनासे दूसरोंके लिये करते हैं वह हमें स्वयं प्राप्त हो जाता है । स्वार्थवश हमने दूसरेकी चिन्ता छोड़ी कि उसका अभाव हमें भुगतना पड़ता है । शुद्ध भावना या श्रद्धा मुख्य वस्तु है । एक मंत्रका अंश है :—

श्रद्धां भगस्य मूर्ध्नि वचसा वेदयामसि ।
(ऋ० १०।१५१।१)

अर्थात् वेद वाणीसे हमें ज्ञान हुआ कि हर किस्मके ऐश्वर्यमें श्रद्धा ही मूर्ध स्थानीय है ।

कामनासे हवनका सम्बन्ध

इतिहास साक्षी है कि भारतके चक्रवर्ती सम्राट अपने सर्वोत्कृष्ट अधिकारकी विज्ञप्तिके लिये "राजसूय यज्ञ" व "अश्वमेध यज्ञ" करते रहे हैं । ऐसे यज्ञ यश कामनाकी सिद्धिके लिये ही किये जाते थे । राजा दशरथने पुत्रकी कामना से "पुत्रेष्टि यज्ञ" किया था । धन वृष्टि, व सुख शान्तिके लिये अग्निहोत्रकी परिपाटी लोकमें आज भी प्रचलित है ।

अग्नि देवताओंका मुख है । इसे "हुत् भुक्" "हव्यवाहन" "सप्तजिह्व", आदि नामोंसे पुकारते हैं । देवताओंका अग्निमें यजन किया जाता है, अतः इसे ही यज्ञ कहते हैं । ऋ० ७।८७।४ में १६ संस्कार यज्ञ और ५ महायज्ञों (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ और अतिथि यज्ञ) से मुक्ति कही गई हैं । उक्त पांच महायज्ञ सन्ध्या, हवन तर्पण वलि त्याग और अतिथि सत्कार) नित्यकर्मके अनिवार्य अङ्ग हैं । इनमें अग्निष्टोमसे लेकर अश्वमेध तक

अग्निमें किये जाने वाले देवयज्ञोंकी ही 'अग्नि होत्र'' या हवन संज्ञा है) क्योंकि "आग्नेय होत्रं यस्मिन् कर्मणि तद् अग्नि होत्रम्'' की व्युत्पत्ति से यह सिद्ध है। ये सब कामना यज्ञ हैं।

निम्न वेद मंत्र तो स्पष्ट घोषणा करता है कि देवगृहमें बढ़ाया हुआ अग्नि ही धन प्राप्तिमें कारण है :—

योऽग्निं तन्वो दमे देवं मर्तः सपर्यति, तस्मा इद्दीदयद् वसु। (ऋ० ८।४४।१५)

(मर्तः) मनुष्य (दमे-देवं) देवगृहमें (योऽग्निं तन्त्रः सपर्यति) अग्निका विस्तार करता है (तस्मा इत) इसी कारणसे (दीदयद् वसुः) धन प्राप्त करता है।

वसु शब्द 'वस् आच्छादने' धातुसे बना है (आच्छादयति तिरोभावयति अभावं यद् तद् वसु) या जिस के द्वारा मनुष्य इस सृष्टिमें वसने योग्य होता है वह समस्त ऐश्वर्य अन्न पशु सन्तान व ज्ञान वसु हैं। जो एक मात्र देवताके निमित्त अग्निको बढ़ानेसे ही प्राप्त होता है।

हवनसे १ वर्षा, २ सपन्नता, ३ आरोग्य, व ४ ज्ञानकी प्राप्ति किस प्रकार होती है इस पर प्रमाण और तर्क द्वारा विचार करना उचित है :—

हिन्दी पाठकोंको संभवतः मंत्रोंमें रुचि नहीं होगी, अतः अर्थके साथ संकेत मात्र देना पर्याप्त है।

वेद प्रमाण

लोकहितकी कामनासे किया गया यज्ञ वायुको शुद्ध करता है। (साम पूर्वार्चिक १।१।६) यज्ञ शुद्धिका हेतु है (यजु. १।२) वायु शुद्धिसे लोक हित साधन होता है, ३३ देवोंकी अनुकूलता प्राप्त होती है। (साम. पूर्वा. १।२।६६) धन प्राप्त होता है (साम. पूर्वा. ५।१।४३५) लक्ष्मी प्राप्ति होती है (ऋ० ७।४३।२) पशु, सत्संग व रक्षा प्राप्त होती है। (ऋ० ८।१६।१०) आरोग्य प्राप्त होता है (ऋ० ३।४।५ व अथर्व ८।६।१०, यजु० २६।३५) प्रज्वलित अग्नि शिक्षा रोग निवृत्ति विद्या धन आदि प्राप्त कराता है। (साम पूर्वा. १।१।३७) यज्ञानुष्ठानके बिना उत्साह बुद्धि सत्य प्राप्त नहीं होते। (यजु० ।४।७) यज्ञ हीन दुःखी रहता है। (यजु० २।२३) यज्ञ हीन को गृह सुख नहीं होता। (यजु० ८।५६) यज्ञ ज्ञान प्राप्तिकी क्रियासे पवित्र करता है। (यजु० १।३)

विधि प्रकरणमें अर्थ सहित दिये हुए मंत्र हवनके महत्वको स्वयं प्रकट कर देंगे।

गीता

श्रीमद्भगवद्गीताके अध्याय ३ श्लोक १० से १५ तक यज्ञकी वैज्ञानिक व्याख्याका सुन्दर प्रसंग है, उसका अक्षरशः अनुवाद प्रमाण रूप से यहां देना उचित होगा। "सहयज्ञा...यज्ञे प्रतिष्ठितम्" "प्रजापति ब्रह्माने कल्पके आदि में यज्ञ सहित प्रजाको रचकर कहा कि इस यज्ञ द्वारा तुम लोग वृद्धिको प्राप्त होओ। और यह यज्ञ तुम लोगोंको इच्छित कामनायें देने वाला होवे। इस यज्ञ द्वारा देवताओंकी उन्नति करो और वे देवता लोग तुम लोगोंकी उन्नति करें, इस प्रकार आपसमें एक दूसरेकी उन्नति करते हुए परम कल्याणको प्राप्त होवो। यज्ञ द्वारा बढ़ाये हुए देवता लोग तुम्हारे लिये बिना मांगे ही प्रिय भोगोंको देंगे। उनके द्वारा दिये

हुए भोगोंको जो मनुष्य उनको बिना दिये ही भोगता है वह निश्चय चोर है । कारण कि यज्ञसे बचे हुए शेष अन्नको खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापोंसे छूट जाते हैं, और जो पापी लोग अपने लिये ही पकाते हैं वे तो पापको ही खाते हैं । क्योंकि संपूर्ण प्राणी अन्नसे उत्पन्न होते हैं और अन्नकी उत्पत्ति वृष्टिसे होती है, और वृष्टि यज्ञसे होती है और वह यज्ञ कर्मसे उत्पन्न होने वाला है । तथा उस कर्मको तू वेदसे उत्पन्न हुआ जान और वेद अविनाशी ब्रह्मसे उत्पन्न हुए हैं इससे सर्वव्यापी ब्रह्म सदा ही यज्ञमें प्रतिष्ठित हैं ।"

वृष्टि तत्व-विज्ञान

विज्ञान इस तथ्यको स्वीकार कर चुका है कि "पदार्थका सर्वथा अभाव नहीं होता केवल रूप परिवर्तन होता है" हविके लिय भी यह सत्य है । हवन सामग्री सुगन्धित पौष्टिक मधुर और रोग नाशक औषधियोंके मिश्रणसे तय्यार होती है । घृत युक्त यह सामग्री अग्निमें जलकर नष्ट नहीं होती, अपितु राख और गैसके रूपमें परिवर्तित हो जाती है । ठोस रूपमें जो जल सामग्रीके अणुओंको संघटित किये हुए था वह अब वाष्प रूपसे अपने मूल तत्वोंके साथ विद्यमान है । पृथ्वी तत्वकी गन्ध, औषधियोंकी पुष्टि, व रोग नाशक शक्ति भी इन वाष्प कणोंमें विद्यमान है । अग्नि वायुको ऊर्ध्वगामी बनाकर वायुमण्डलमें प्रसारित करता है । अग्निकी विश्लेषक शक्तिसे यह गैस प्राणियों और वनस्पतियोंके लिये उपयोगी गैसोंमें बदलते हुए निश्चित दूरी तक ऊपर उठती है, वहां आकाशीय तापमानकी शीतलतासे वाष्प जल रूप होकर पृथ्वी पर बरसते हैं ।

अनावृष्टिके सालोमें जहां यज्ञ किये जाते हैं वहां वर्षा हो जाती है, इसका संभवतः एक कारण यह भी है कि पार्थिव तत्वोंके और घृत के संयोगसे गैसीय तत्वोंमें भार होता है और वे यज्ञ भूमिसे अधिक दूर नहीं जा सकते है । फलस्वरूप वे यज्ञ भूमिके पास ही वृष्टि करते हैं ।

संपन्नता (अन्न व पशु)

यदि हवनसे वर्षाका संबन्ध स्थापित हो जाता है तो शेष फल अन्न पशु आरोग्य आदि स्वयं सिद्ध ही समझने चाहिये । पृथ्वी पर अन्न चारा औषधियां वर्षासे ही होती हैं । पशु व सन्तानकी वृद्धि भी अन्न चारेसे ही संभव है । अन्न व पशु मनुष्यकी संपन्नताके मुख्य स्रोत हैं । वास्तविक अर्थोंमें यही वसु या धन हैं, जिन के विनिमय द्वारा अन्य हर प्रकारके अभावकी पूर्ति की जा सकती है ।

आरोग्य

हवनका उद्घतित औषधि युक्त सुगन्धित वायु अन्तरिक्षमें सूर्य रश्मियोंके संयोगसे रोगके कीटाणुओंको नष्ट करके स्वास्थ्य प्रदान करता है । और औषधि उत्पादन द्वारा भी रोग मुक्तिके साधन जुटाता है । इसलिये हवन आरोग्यता देता है ।

ज्ञान

स्वस्थ शरीरसे मनुष्य समस्त लौकिक सुख व सन्तानादि प्राप्त करता है, लेकिन अग्नि होत्र द्वारा ज्ञान प्राप्तिकी क्रिया प्रत्यक्ष अनुभव गम्य नहीं है । परोक्ष होनेसे कालान्तरमें अनुभव होती है ।

सृष्टि नियम यही है कि "जो हम बोते हैं वही काट सकते हैं" अग्निहोत्रके द्वारा हम आरोग्य वर्धक, पुष्टिकर, मधुर, सुगन्धित वातावरणकी वृद्धि करते हैं। इस लोक हितैषी कार्यसे हमारी बुद्धि निर्मल होगी। और निर्मल बुद्धिमें ज्ञानका प्रकाश समय पर स्वयं होगा। यह अनुभवका विषय है। इस प्रकार अग्नि होत्रसे ज्ञानकी प्राप्ति भी होती है।

अतः अग्नि होत्रसे वर्षा संपन्नता आरोग्य व ज्ञानकी प्राप्ति होती है यह तर्क सिद्ध है।

मंत्रोंका महत्व

यहां यह प्रश्न उठ सकता है कि जब अग्निकी उद्वहन रूप भौतिक क्रिया ही वर्षा आदिमें कारण है तो मंत्रोंका क्या महत्व है?

यह प्रश्न संभवतः अनादि कालसे मानव मस्तिष्कमें रहा है क्योंकि कुछ आदिम जातियां अग्नि तृप्तिको ही पर्याप्त समझती रही हैं। भीलोंमें अरिष्ट निवारणके लिये वन-दाहकी प्रथा आज भी पाई जाती है। महाभारतमें अर्जुनका खाण्डववन-दाहके द्वारा अग्निको तृप्त करके आशीर्वादमें गाण्डीव धनुष व दिव्य रथ प्राप्त करनेका प्रसंग इसीका उदाहरण माना जा सकता है।

मननशील व्यक्तियोंने इस अग्नि तृप्तिको "वैश्वानर देव पूजन" का रूप दिया, जिसे बेसन्दर करना या धूप देना भी कहते हैं। अधिकांश हिन्दु घरोंमें देवियां पक्वान्नको प्रथम अग्निके समर्पण करती है, बादमें अपने प्रयोगमें लाती हैं। देवस्थान या तुलसीके पास दीपक रखना, देव पूजनमें अग्निमें धूप या घृत डालना इस अग्नि तृप्तिके ही विभिन्न रूप हैं।

धूमित होमाग्निको फूंक देकर प्रज्वलित करना निषिद्ध है, उसे उपासककी श्रद्धासे ही प्रज्वलित होना चाहिये। वेद भी कहते हैं "श्रद्धयाग्नि समिध्यते" पुराने लोगोंकी आस्था है कि ज्वाला उपासकके मनकी प्रतीक होती है। मनकी एकाग्रतासे दीप शिखा स्थिर हो जाती है, अन्यथा चलायमान रहती है।

अहंकारके वैकारिक तैजस और तामस भेद सृष्टि रचनाक्रममें माने गए हैं। अहंकारके तामस या द्रव्यशक्तिसे पंचमहाभूतोंकी व पंच तन्मात्राओंकी रचना हुई, है। तैजस या क्रिया शक्तिके भेदसे पांचों ज्ञानेन्द्रियों और पांचों कर्मेन्द्रियोंयी रचना हुई है। अहंकारके वैकारिक या ज्ञानशक्तिके भेदसे मन और इन्द्रियोंके दश अधिष्ठातृ देवताओं (दिशा वायु सूर्य वरुण अश्विनीकुमार अग्नि इन्द्र विष्णु मित्र और प्रजापति) की रचना हुई है। जो समस्त ऐश्वर्योंके स्वामी हैं। अग्नि भी इन्हींमेंसे एक है। मन व अग्निका उद्भव स्थान एक ही है। यही कारण है कि ज्वालामें मनके प्रतिबिम्ब का दर्शन किया जाता है। जैसा कि पहिले संकेत किया जा चुका है अग्नि देवताओंका मुख है। इसकी सात जिह्वायें सात ज्वालाओं द्वारा विभिन्न प्रकृति के देवताओं तक उनका भोग पहुंचाती है। जिससे सन्तुष्ट होकर देवता इष्ट फल देते हैं।

हमारी सत्ता स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण-शरीरसे है। सूक्ष्म-शरीर (मन) स्थूल शरीर और कारण शरीरमें सामञ्जस्य रखता है। अनेक भावी घटनाओंका स्वप्नमें पूर्वाभास देकर सावधान कर देता है। इसी प्रकार अग्नि विराट् पुरुषका मन है, वह मर्त्यलोकका देव-

लोकसे सामञ्जस्य रखता है लेकिन उस ज्ञान को श्रद्धावान् ही प्राप्त कर सकता है। श्रद्धा ही एक मात्र इसकी शर्त है।

वह श्रद्धा मंत्र और उसके अर्थसे दृढ़ होती है। इसके अतिरिक्त वेदमंत्रोंका विशिष्ट शब्द विन्यास भी अपना महत्व रखता है। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि शरीर में हर्ष शोक भय राग क्रोध आदि संवेदनाओं के पृथक् २ केन्द्र हैं। औषधियों द्वारा हम उन केन्द्रोंको उत्तेजित करके संवेदनाको बढ़ा सकते हैं। और संज्ञा शून्य करके घटा सकते हैं। विभिन्न वर्णोंका उच्चारण भी इन केन्द्रों को उत्तेजित करने या शिथिल करनेमें सहायक है। वर्णोच्चारणसे प्राणको उदान व्यान समान अपान इत्यादि विभिन्न गति प्राप्त हो जाती है। उदाहरणार्थ कवर्गादि कण्ठसे उच्चरित होने वाले वर्ण और उष्मवर्णप्राणको उदान गति प्रदान करते हैं। फलस्वरूप अन्दरका वायु बाहर जानेका रास्ता खुल जानेसे कण्ठ पथसे निकल जाता है। बाहरका निर्विकार वायु अन्दर प्रवेश करके शोकके सन्तापको कम कर देता है। शोक सन्तप्त व्यक्तिके लम्बे २ निश्वास से यही उपचार होता है। शान्ति प्रकरण आदि के मंत्रोंका शब्द विन्यास भी उष्म वहुल होनेसे इसी प्रकारकी क्रिया शरीरके अभीष्ट केन्द्रों पर करता है।

अन्य कामना संबन्धी वेद मंत्रोंका शब्द विन्यास भी अपने बीजाक्षरोंसे वाणीमें कम्पन उत्पन्न करके अभीष्ट केन्द्रोंकी ग्रन्थियोंको उत्तेजित करता है। इस प्रकार सिद्धिकी भूमि तय्यार होती है।

मंत्र और श्रद्धा कामनाकी सिद्धिमें विशेष महत्व रखते हैं।

उप संहार

इस प्रकार सुख दुःखादि भोग कर्मफलका अनिवार्य अंग होते हुए भी उत्कट कर्मोंसे दबाये जा सकते हैं। ऐसे कर्म परहितवादके सृष्टि नियमके अनुकूल होने चाहिये। सुगन्धित पौष्टिक मधुर और रोग नाशक औषधियोंकी सामग्रीसे किया गया अग्निहोत्र वर्षाका हेतु है अतः अन्न पशु व प्रजाकी वृद्धि करता है। वायु शुद्धि और औषधि उत्पादनमें हेतु होनेसे रोगोंको नष्ट करके आरोग्य प्रदान करता है। और लोकहितकी भावना व श्रद्धाके द्वारा बुद्धिको निर्मल करता है। ज्ञानका प्रकाश देता है। अतः हवन मनोरथ पूर्ति करता है। ऐसे उपयोगी अग्नि होत्रकी विधि आगामी अङ्कोंमें देखिये।

पता—बोरदा हाउस, श्रीपुरा, कोटा राज०

आपके भाग्यमें क्या लिखा है ?
शुद्ध जन्म कुण्डली 25 रु. में और वर्षफल 20 रु. में बनवाइये।
व्यापारिक पदार्थों के टाइम टू टाइम स्पेशल तेजी मन्दी की वार्षिक फीस १०१ रु. और मासिक ११ रु. है। एक बार परीक्षा अवश्य करें।
तन्त्र सम्राट
सूची पत्र मुफ्त मंगावें
पं० कैलाशनाथ उपाध्याय
के०२१/८, नारायण दीक्षित लेन, बाराणसी १ उ०प्र०

एक आत्मकथ्यः उतरार्द्ध

अध्यात्मवाद हृदयबल बड़प्पनका प्रतीक ग्रह बृहस्पति (२)

[लेखक :—श्री बालकृष्ण इन्दोरिया]

इन पंक्तियोंका लेखक महर्षि लोमशके ग्रंथ 'लोमश-संहिता' के पठन-अनुशीलनमें व्यस्त था। देव गुरुकी स्थितिके अनुसार फला-नुफलोंके पारस्परिक प्रतिरोधी तथ्योंकी परे-शानीमें न जाने कब निद्रादेवीने अंकशायी बना लिया। मुझे लगा कि देवगुरु स्वयं उप-स्थित होकर ओजयुक्त गंभीर वाणीमें बोले—'श्याम बालक ! तू क्यों महर्षि लोमशके पीछे पड़ा है ? तू महर्षिसे क्या चाहता है ?' मैं हतप्रभ था, देवगुरुको दण्डवत करते हुए अनुनय किया--'गुरुदेव ! आप विज्ञ हैं, प्रज्ञ हैं। मैंने आपकी आत्मकथाके स्वरूप अध्यायको महर्षि-वर लोमशके माध्यमसे सुना है। आपने महर्षि-वर पर कृपा की थी, वैसी ही अनुकम्पा इस दास पर कीजिए, मैं सदैव कृतज्ञ रहूंगा। मुझे आपकी अपनी विभिन्न स्थितियोंके अनुसार विभन्न फलानुफलोंके तथ्योंकी जानकारीकी उत्कट कामना है।' देवगुरु प्रसन्नतापूर्वक मधुर-वाणीमें बोले--'बड़ी दुष्कर कामना की है तूने, किन्तु मैं तुम्हें सत्पात्र सेवक मानकर अपनी आत्मकथाके फलाचार अध्यायका संक्षिप्त विवरण सुनाये देता हूँ। मैं अपनी स्थिति दृष्टिके फलित तथ्योंको स्वतंत्र रूपसे सुनाकर कलियुग प्रसिद्ध व्यक्तियोंके संदर्भ प्रकट करूंगा। इस बातका सदैव ध्यान रखो कि मैं अन्य ग्रहकी संगति, दृष्टि एवं राशिके प्रभावसे अपने फलमें आंशिक परिवर्तन करके फलदाता होता हूँ। देवगुरु अपने हाथोंमें डायरीनुमा पृष्ठोंको लिये हुए आत्मकथाका वाचन करने लगे। मैं निमग्नता पूर्वक सुनता रहा।'

प्रथम भावमें स्थिति :

'मैं लग्न भावमें होकर बलवान् होता हूँ और सदाचारी, दीर्घायु, धैर्यवान्, उदार राज-मान्य, वातरोगी, प्रौढ़, शत्रुजयी, कृतज्ञ, सुन्दर, भव्य आकृतिका उन्नतिगामी जातक बनाता हूँ। मेरे प्रभावसे जातक शिक्षक, आध्यात्मिक गुरु, मधुरभाषी, मधुर प्रिय होता है। मैं उदार प्रमाणिक, धार्मिक, न्यायकर्त्ता एवं तेजस्वी बनाकर फलद होता हूँ। मेरे जातक धर्मयुक्त होकर सौभाग्यशाली होते हैं और सुयोग्य पुत्र की संज्ञा पाते हैं। मेरे ऐसे जातक तेजस्वी होकर सुन्दर प्रवीण पतिव्रता नारीको पाते हैं। मैं केन्द्रमें स्थित होकर अरिष्टनाशक होता हूँ।'

'मैं मेष सिंह धनुः मिथुन मीनमें लग्नस्थ होकर शुभफलदाता होता हूँ। मकर राशिमें होने पर राज्यपद देता हूँ। कर्कमें लग्नस्थ होकर, मंगल शुक्रका संयोग पाकर मैं अनिष्ट-कारी हो जाता हूँ। मैं उच्चकुलका अभिमान देता हूँ, किन्तु धन संग्रहकी वृत्ति नहीं देता। धनु लग्नमें होकर मैं संतति प्रतिबन्धक हो जाता हूँ। वृष कन्यामें लग्नस्थित होने पर मैं लौकिक सुखोंको समाप्त करता हूँ। वृष कन्या कर्क वृश्चिकमें भोजनभट्ट, मकरमें मनोरंजन प्रिय रुचिका दाता, मीनमें काव्य-वाङ्मयका

उपासक बना देता हूँ । मकर कुंभके लग्नमें अभिमान देकर अपकीर्ति दिलाता हूँ । कर्क वृश्चिकमें लग्नस्थ होकर मैं निर्दय, क्रोधी बनाता हूँ। लग्न भावी होने पर मैं ६–१२ वर्षमें अनिष्टफल देता हूँ । मैं मिथुन तुला कुंभ में होकर वैद्य वकील शिक्षाविभागमें कर्मचारी बनाकर प्रभाव बढ़ाता हूँ। मीन मकर सिंहमें साहित्यज्ञाता, कुंभमें विज्ञानवेता, वृश्चिकमें बहुभाषा ज्ञाता बनाता हूँ ।'

'मैं श्रीरामके लग्नमें होकर वनवासी बनाया था। ईशामसीह, सम्राट अकबरके तुला लग्नमें, शंकराचार्य, अरविंद घोषके कर्क लग्न में, डाकू मानसिंहके वृश्चिक लग्नमें स्थित था।'

द्वितीय भावमें स्थिति :

'मैं धन भावमें स्थित होकर वक्ता, उपदेशक, उदारस्वभावी, प्रभावी बनाता हूँ। इस भावमें मेष वृश्चिक राशिमें होकर मैं छठे वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट दिलाता हूँ । मेरे ऐसे जातकको सम्माननीय, सम्पन्न, उदार रूपवान् विद्यावान् एवं सम्पूर्ण गुणोंसे युक्त बनाता हूँ। धनकी प्राप्तिमें कठिनाई होती है, संग्रह नहीं होता, मुखमें दोष होता है। मैं इस भावमें कर्क धनुका होकर धनवान् बनाते हुए पिता पुत्र दोनोंको एक साथमें उपार्जक नहीं रहने देता और दत्तक पुत्रका योग बनाता हूँ। ऐसे जातकों की पितृ मातृसे अनबन होती है अतः पैतृक सम्पत्तिसे वंचित करा देता हूँ । मेरे जातक कवि, चंचल, दानी, स्पष्ट वक्ता होते हैं। मैं धनभावमें स्त्रीराशियोंमें होकर संतति बाधक हो जाता हूँ। मेषमें होकर कठोर वाणी युक्त, वृष सिंह वृश्चिक कुंभमें होकर धनके लिये चिन्तातुर, धनुमें दानशील बनाता हूँ । मैंने भीष्मके धन भावमें होनेसे राज्य अधिकारसे वंचित करा दिया था। मैं मोरारजी देसाईके मिथुन लग्नकी कर्कमें, गुरु नानकदेवके सिंह लग्नकी कन्यामें, हैदरअलीके तुला लग्नकी वृश्चिकमें, जमनालाल बजाजके वृश्चिक लग्नकी धनुमें, चौ० चरणसिंहके धनु लग्नकी मकर राशिमें जन्मके समय मेरी स्थिति थी।'

तृतीय भावमें स्थिति :

'मैं इस भावमें होकर कृपण, क्लेशी, दुःखी, पापकर्मी, मधुरभाषी, जितेन्द्रिय धनवान् होकर भी निर्धनी, स्त्री द्वारा पराजित, अग्नि मान्द्यरोगी, आप्तोंके सुखसे सम्पन्न, तीर्थयात्री, लेखक बनाकर फलदाता होता हूँ। पृथ्वी तत्त्व की राशिमें होकर व्यापार, सट्टा, अग्नितत्त्व की राशिमें होकर विजयी, वायु तत्त्वकी राशि में ज्ञान-विज्ञानवेत्ता, जलतत्त्वकी राशिमें जल-प्रवास द्वारा सुखी बनाता हूँ। इस भावमें मेरी शुभ स्थिति भाइयोंको दीर्घायु, अशुभ स्थिति भाइयोंको नाशकारक होती है। मैं पुरुष राशि में होकर पुत्रों-भाइयोंका सुखदाता होता हूँ। मैं स्त्री राशिमें होकर पुत्रियों-बहिनोंका सुख देता हूँ। पुरुष राशिमें मेरी स्थिति शिक्षामें बाधक व दरिद्रकारक होती है। स्त्रीलिंगकी राशिमें होकर शिक्षामें लाभप्रद फल देता हूँ। शिक्षक-प्राध्यापक आदिकी नौकरी मेरे जातक को लाभप्रद होती है । इस भावमें होकर मैं १५वें वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट देता हूँ। राजा बली को तृतीय भावमें होकर मैंने पाताल भिजवा दिया था। मैं जाकिर हुसैनके मिथुन लग्नकी सिंहमें, चंगेजखाँके कर्क लग्नकी कन्यामें, हिटलरके तुला लग्नकी धनुमें, राजगोपालाचार्यके धनु लग्नकी कुंभमें, महाराणा प्रतापके

मकर लग्नकी मीनमें मेरी स्थिति थी।'

चतुर्थ भावमें स्थिति :

'मैं इस भावमें होकर अपरिमित सुखी, कीर्तिमान्, श्रेष्ठ वक्ता, धनी, रूपवान्, सम्मानी विवध-सुखभोगी, पूर्वजों द्वारा अर्जित धन पाने वाला, ब्राह्मणोंको आश्रयदाता, गुरु भक्त, राज्य द्वारा सम्मानित, कुलप्रधान बनाकर फल देता हूँ। मेरे जातकके घर हाथी घोड़े पलते हैं और शत्रुओंको भी इनकी सेवा करनी पड़ती है। इसी भावमें मेरी अशुभ स्थितिसे कपटी, पूर्वाजित सम्पत्तिका नाशकारक, छठे वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट, मातृपितृको कष्ट दाता बनाता हूँ। कर्क वृश्चिक मीन राशिमें सुख भावमें होकर मैं गोद जानेके योगको बनाता हूँ। श्रीकृष्णके वृष लग्नकी सिंहमें, नाथूराम गोडसेके मिथुन लग्नकी कन्यामें, स्वामी शिवा-नंद, वल्लभभाई पटेलके कर्क लग्नकी तुलामें राजा रणजोतसिंहके कर्क लग्नकी तुलामें मैं स्थित था।'

पंचम भावमें स्थिति :

'मैं इस भावमें होकर सुखी, बुद्धिमान्, धैर्यशील, धनी, उपदेशक बनाता हूँ। इस भाव में मुझे निष्फल कहा गया है। कुंभ कर्क राशि का पंचम भावमें होकर निःसन्तान, मीनमें अल्प-संतति, धनुमें कष्टयुक्त सन्तान देता हूँ। कर्क राशिमें पुत्रीदाता होता हूँ। इस भावमें सूर्य हो तो पिता, चन्द्र हो तो माता, मंगल हो तो भाई, बुध हो तो मामा, शुक्र हो तो दादा, शनि हो तो पुत्रको मारक होते हैं। मैं इस भावमें शुभकारक होने पर पांच पुत्र देता हूँ। चालीसवें वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट देता हूँ। मेरे ऐसे जातक वक्ता लेखक सम्पादक शिक्षक प्राध्यापक प्राचार्य व शिक्षाविभागके अधिकारी होते हैं। इस भावमें होकर मैं व्यभिचारीवृत्ति देता हूँ। वृष कर्क कन्या मकर मीन धनु राशियोंमें पंचममें होकर मैं पुत्रसुखसे वंचित करता हूँ। दशरथके मैं पंचम भावमें होनेसे पुत्रवियोगी, शोकाकुल बनाया था। मैं माओ-त्सेतुंगके मकर लग्नकी वृषमें, रवीन्द्रनाथ टैगोरके मीन लग्नकी कर्कमें, सुभाषचन्द्र बोस के मेष लग्नकी सिंहमें, स्टालिन, गोस्वामी तुलसीदासके तुला लग्नकी कुंभमें मैं पंचम भावमें स्थित था।'

षष्ठ भावमें स्थिति :

'मैं षष्ठ भावमें होकर अजातशत्रु, परा-भवी, प्रसिद्ध, परिश्रमी, उद्वेगी, गौ-कुत्तोंका पालक, भ्रातृनाशक बनाता हूँ। मैं कामवृत्ति देकर सुन्दर स्त्रियोंका भोक्ता बनाता हूँ। मेरे जातक शिक्षा विभागकी सेवामें प्रगतिशील होते हैं। मैं अशुभ होने पर यकृत विकार, मेद वृद्धिके रोग देता हूँ। इस भावमें पुरुष राशिका होने पर जुआ, शराब, व्यसनी, वेश्यागामी बनाकर अपयशका दाता होता हूँ। मैं मधुमेह. हर्णिया, किडनीके रोगोंका कारक होता हूँ। मैं इस भावमें होकर मेष कर्क कन्या लग्नके जातकको भाग्य विरोधी होता हूँ। मिथुन तुला मकरमें होने पर मैं निरन्तर ऋणी बनाये रखता हूँ। द्रौपदीके इसी भावमें कर्कस्थ होकर मैंने विभिन्न विपत्तियां दी थी और दैवयोगसे आपतियोंका निवारण कराया था। मैं शत्रुभाव में निष्फल कहा जाता हूँ। मैं जवाहरलाल नेहरूके कर्क लग्नकी धनुमें, टीपूसुल्तानके धनु लग्नकी वृषमें, आशुतोष मुखर्जीके वृष लग्नकी तुलामें, गुलजारीलाल नंदाके मेष लग्नकी कन्या

में जन्मकालीन समय पर षष्ठ भावी था।'

सप्तम भावमें स्थिति :

'इस केन्द्र भावमें स्थित होकर मैं कवि, बुद्धिमान्, धैर्यवान्, पुत्रवान्, पितासे श्रेष्ठ, पितृ-मातृ-गुरु द्वेषी, पतिव्रता पत्नीका पति एवं प्रसिद्ध बनाता हूँ। इस भावमें नीचस्थ होने पर पत्नीकी मृत्यु कराता हूँ। मेरे जातक विद्वान्, सुखी, नम्र, न्यायकर्त्ता, भाई-बहिनोंमें श्रेष्ठ, प्रगतिशील, उच्चघरानोंसे सम्पर्क वाले, अध्ययनप्रिय होते हैं। इनको सुशील, गौरवर्ण पत्नी दिलाकर बाइसवें वर्ष शादी सम्पन्न कराता हूँ। मिथुन सिंह कुंभ राशिमें सप्तमस्थ होकर मैं संतति चिंता देता हूँ, अथवा देरसे संतान देकर सुखी बनाता हूँ। वृष कन्या मकर में सांसारिक सुखोंका क्षय कर देता हूँ। कर्क वृश्चिक मीनमें होकर लौकिक सुखोंसे वंचित कर देता हूँ। ऐसे लोग अविवाहित रह सकते हैं, या पत्नी तलाक देकर एकाकी बना सकती है। तुला मकरमें होकर एकाधिक शादियां कराता हूँ। पुरुष राशिमें सप्तमस्थ होनेपर परिवारके प्रति उदासीन बनाता हूँ। स्त्री राशि में होनेपर परिवार प्रेमी बनाता हूँ। मैं २१वें वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट देता हूँ। इसी भावमें होने से मैंने अज राजाको रानी इन्दुमतीकी मृत्युसे शोकातुर बनाकर दुःखी बनाया था। मैं महात्मा गांधीकी तुला लग्नकी मेषमें, लालबहादुर शास्त्रीके वृश्चिक लग्नकी वृषमें, वीरसावरकर के धनुलग्नकी मिथुनमें, सिकन्दर महान्‌के मेष लग्नकी तुलामें, छत्रपति शिवाजीके सिंह लग्नकी कुंभ राशिमें स्थित था।'

अष्टम भावमें स्थिति :

'मैं अष्टम भावमें होकर पराभावी, दीन, दीर्घायु दुष्कर्मी, गुलाम, मलिन स्त्री भोगी, नीच कार्यरत, कारावासी, कष्ट पूर्ण मृत्यु देकर पुनः सद्‌गति दिलाता हूँ। इस भावमें स्वगृही होकर तीर्थ स्थानमें मृत्यु देता हूँ। इस भावमें मेष राशिका होकर विविध रोग, वृषमें शूलरोग, मिथुनमें कर्णरोग, कर्कमें अपने लोगोंसे सिंहमें विषूचिका, कन्यामें अतिसार, तुलामें नौकर, वृश्चिकमें रक्तदोष, धनु में घोड़े से, मकरमें राज्य द्वारा, कुंभमें राजकोपसे, मीनमें बहु भोजनसे मृत्युका योग बनाता हूँ। मेष सिंह धनु मिथुनमें अष्टम भावी होनेपर वसीयत द्वारा, वारिस रूपमें अतुल सम्पत्तिका लाभ कराता हूँ। कर्कमें सर्वदा कर्जदार बनाकर पैतृक सम्पत्ति क्षय कराता हूँ। रावणकी मृत्युका कारण कर्क राशिमें अष्टमभावमें मेरी स्थिति थी। मैं महारानी लक्ष्मीबाई, निकिता ख्रुश्चेव के तुला लग्नकी वृषमें, डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जीके वृष लग्नकी धनुमें, मुसोलिनीके वृश्चिक लग्नकी मिथुनमें, हेराल्डके सिंह लग्न की मीन राशिमें स्थित था।'

नवम भावमें स्थिति :

'मैं भाग्यभावमें होकर विद्वान्, तत्त्वदर्शी देवसेवी, प्रधान, गुरुमंत्री, ज्ञानी, कुलवृद्धि-कारक, परमार्थी, ब्राह्मणसेवी, पुत्रचितातुर, नृपवत् ऐश्वर्यशाली बनाता हूँ। मेरा फल मेष सिंह धनु मीनमें भाग्यभावकी स्थितिसे शुभ होता है। मैं पुरुष राशिसे भाई बहिन कम देता हूँ। स्त्री राशिमें होकर अधिक सहोदर देता हूँ। दो भाई एक साथ रहकर प्रगति करे यह मुझे अच्छा नहीं लगता, अतः अलग-अलग रहने पर श्रेयस्कर फल दाता होता हूँ। वृष कन्या मकरमें भाग्य भावमें होनेसे मैं मृतपुत्र

देकर संतति चितामें आतुर बनाता हूँ। कर्क मीनमें होकर मैं देरसे विवाह कराता हूँ। मेरी ऐसी स्थिति मुझे व्यभिचारी बना देती है। स्त्री राशिमें स्थित होने पर जेष्ठ स्त्री, चाची, मामी, मौसी, गुरुपत्नी, सौतेली माँ, अधिकारी की पत्नीसे गलत सम्बन्ध करनेके योग बन जाते हैं। तीसवें वर्ष में मृत्यु सम कष्ट देता हूं। मैं विश्वामित्रके नवम भावमें था अतः उसने भ्रष्ट होकर अभक्ष्य-भक्षण किया था। मैं डा० राजेन्द्रप्रसादके धनुः लग्नकी सिंहमें, डा० सम्पूर्णानन्दके मेष लग्नकी धनुमें, महारानी विक्टोरियाके वृष लग्नकी मकरमें, मदन-मोहन मालवीय व नेता कामराजके कर्क लग्नकी मीन राशिमें स्थित था।'

दशम भावमें स्थिति :

'मैं राज्यभावमें स्थित होकर सुखी, समृद्ध, धनवान्, कीर्तिमान्, सम्माननीय बनाता हूँ। इस भावमें होकर मैं भाइयोंसे धन दिलाता हूँ। केन्द्रमें स्थित होकर मैं अरिष्टनाशक फल देता हूँ। राज्यभावमें मेरी स्थितिसे जातक धन-वैभव पाता है और बहुतोंका आश्रयदाता बनता है। इस भावमें पुरुष राशिमें होने पर अल्पसंतति, स्त्री राशिमें होने पर बहु पुत्र वान् बनाता हूँ। अशुभ होकर पितृभावमे होनेसे पितासे झगड़ा कराते हुए मृत्युसम कष्ट देता हूँ। चौंतीसवें वर्ष मृत्युयोग बनाकर कष्टकारक होता हूँ। मेरे ऐसे जातक भिक्षुक, ठेले वाले, जज, सन्यासी, आयात निर्यात व्यापारी बनकर कार्य करते हैं। मैं दुर्योधनके दशमभावमें था अतः पतनका कारक बना। मैं गौतमबुद्धके कर्क लग्नकी मेषमें, स्वामी विवेकानन्दके मकर लग्नकी तुलामें, मोहम्मदअली जिन्नाके कुंभ लग्न की वृश्चिकमें, पृथ्वीराज चौहानके मेष लग्नकी मकरमें, सूर्यनारायणराव (बंगलोर) के वृष लग्नकी कुंभमें स्थित था। इस भावमें मैं मिथुन तुला कर्क कुंभमें अशुभफलदाता, बाकी सभी राशियोंमें अपना सामान्य अनुकूल फल दाता होता हूँ।'

एकादश भावमें स्थिति :

'लाभभावमें होकर मैं सज्जन, दीर्घायु, पांचपुत्रपालक, परसेवी, विजयी, निर्भय, पुत्रोंसे धन पाने वाला, अष्टावधानी बनाता हूँ। गीता पाठनसे लाभवान् बनाकर धार्मिक वृत्ति देता हूँ। पचासवें वर्षमें मृत्यु या मृत्यु समान कष्ट देता हूँ। कर्क कन्या धनु मीनमें लाभस्थ होने पर मैं दुराचारी पुत्र, द्विभार्यायोग, रोगी आदि फल दाता हूँ। पितापुत्र एक साथ उन्नतिशील नहीं रहने देता। किसी स्थितिमें पिताकी मृत्युके बाद पुत्र बढ़ता है। राजा नलके मैं स्त्री राशिमे लाभभावी था अतः उसने प्रिय पत्नी रानी दमयन्तीको त्यागा था। मैं कार्लमार्क्सके कुंभ लग्नकी धनुमें, राष्ट्रपति आइजनहोवरके मीन लग्नकी मकरमें, सेठ रामकृष्ण डालमियाके मिथुन लग्नकी मेषमें, हैनरी फोर्डके वृश्चिक लग्नकी कन्यामें, प्रधानमंत्री इन्दिरा-गांधीके कर्क लग्नकी वृष राशिमें जन्म समय था।'

द्वादश भावमें स्थिति :

'मैं व्ययभावमें होकर दुष्टवक्ता, दुष्टवृत्ति, दुर्भागी, पराजय, अतिव्ययी, परोपकारी, दुर्जन, गुप्तरोगी, स्वार्थी, कंजूस, आंखोंका रोगी, वक्ता बनाता हूँ। पुरुष राशिमें व्यय भावमें होकर मैं मोक्षदाता होता हूँ। स्त्रीराशिमें स्थित होकर आलसी, दुर्व्यसनी आदि बनाकर अशुभ फल देता हूँ। मेरी व्ययकी स्थितिके

फलित पर विचार (२)

[लेखक :—आयुर्वेद बृहस्पति श्रीरघुवीरशरण शर्मा वैद्य]

कारण ही पाण्डु वन गमन हुआ था। ऐसी स्थितिमें मैं एकाधिक आय स्रोत देता हूँ। मैं रामानुजाचार्यके कर्क लग्नकी मिथुनमें, बादशाह नीरोके धनुर्लग्नकी वृश्चिकमें, निजाम हैदराबादके तुला लग्नकी कन्यामें, दीनदयाल उपाध्यायके मिथुन लग्नकी वृषमें, वाई बी. चौहाणके कुंभ लग्नकी मकरमें स्थित था।'

इतना सुनकर मैंने आभास पाया कि देवगुरु अन्तर्धान हो गये हैं। मैं अपने उष्मकणों को सुखानेमें व्यवस्थित था और आँखोंको मलते हुए पानीकी आवाज लगाई। महर्षिवर लोमश की 'लोमश संहिता' मेरे लिए अब दुष्कर ग्रंथ न था।

पता—किलेके पीछे, चूरु (राजस्थान)

यह सब क्यों हुआ इसके लिए हमको इतिहास जानना होगा। आक्रान्ता मुसलमानों ने हिन्दुत्वको नष्ट करनेके लिये बलात् धर्म परिवर्तन कराये। मन्दिरोंको नष्ट करके मस्जिदें बनाईं, विश्वविख्यात नालन्दा विश्वविद्यालयको जलाया, वह महीनों तक जलता रहा, जिसमें भारतीय साहित्यके असंख्य ग्रंथ भस्म हो गये। अनेक शिलालेखोंको जिनमें भारतीय साहित्यकी निधि सुरक्षित थी नष्ट किया, यह एक कारण है भारतीय साहित्य नष्ट होनेका। इसके अतिरिक्त चीनी यात्री फाहियान प्रत्येक विषयकी हजारों पुस्तकें चीन ले गया। छठी शताब्दीमें भारतसे लगभग ३ हजार भारतीय विद्वान् बौद्धधर्मोपदेशके लिये चीन गये, वे भी अपने साथ पुस्तकोंका गट्ठर ले गये। वहां उनका चीनी भाषामें अनुवाद हुआ। ७वीं शताब्दीसे लेकर १०वीं शताब्दी तक सैंकड़ों भारतीय तिब्बतमें बौद्ध धर्मोपदेशके लिये गये, वे भी अपने-अपने साथ संस्कृतकी पुस्तकें ले गये[1]। इन पुस्तकोंका तिब्बती भाषामें अनुवाद हुआ। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि बहुत सी पुस्तकें भारत से लोप हो गईं क्योंकि उस युगमें प्रेस (छापेखाने) तो थे नहीं, जो कि पुस्तकोंकी पूर्ति कर सकें। जैसे कि यति अश्वघोष द्वारा रचित बुद्ध चरितका दूसरा भाग अब कुछ वर्ष पूर्व चीनी भाषासे हिन्दी भाषामें अनूदित होकर छपा है। इसी प्रकार बहुतसे ग्रंथोंका तिब्बती भाषासे हिन्दीमें अनुवाद करके राहुलजी तिब्बतसे लाये थे। फिर भी तिब्बतके संग्रहालयमें संस्कृतमें दर्शन, काव्य, व्याकरण, ज्योतिष, वैद्यक, तंत्र मंत्रके सैंकड़ों ग्रंथ सुरक्षित थे अब वहां चीनी कम्युनिस्टोंका शासन है, उन्होंने सोने, चांदी, तांबेकी बौद्धमूर्तियोंको भी गला डाला तो संभव है संग्रहालयको भी नष्ट कर दिया हो। अब इससे अधिक लिखना अनावश्यक है।

जैमिनीय सूत्रानुसार आयुका निर्णय

(जैमिनीय सूत्र अध्याय २ प्रथमपाद)

आयुः पितृदिनेशाभ्याम्। (जै. सू. २।१।१)

प्रथमयोरुत्तरयोर्वादीर्घम् २॥ प्रथम द्वितीययो-

१ तिब्बत जाने वालोंमें आचार्य शान्त रक्षित और आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान (आतिशा) प्रमुख हैं। तिब्बतमें इनकी भी देवोंके समान पूजा होती थी।

रन्तयोर्वा मध्यम् (२।१।३) मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनम् । (२।१४) एवं मन्द चन्द्राभ्याम् । (२।१।५) पितृकालतश्च । (२।१।६।) संवादात् प्रामाण्यम् । (२।१।७) विसंवादे पितृकालतः । (२।१।८) पितृलाभगे चन्द्रे चन्द्रमन्दाभ्याम् । (२।१+९)

(१) आयुका निर्णय लग्नेश और अष्टमेशसे करना चाहिये ।

(२) लग्नेश और अष्टमेश दोनों चर राशि पर हों तो दीर्घायु । अथवा इनमेंसे एक स्थिर राशि पर हो और दूसरा चरराशि पर हो तो मध्यायु । अथवा दोनों ही द्विस्वभाव राशि पर हों तो भी मध्यायु ।

(३) लग्नेश और अष्टमेश स्थिर राशि पर हों, अथवा इन दोनोंमेंसे एक चरराशि पर हो और दूसरा द्विस्वभाव पर हो तो अल्पायु होती है ।

(४) इसी प्रकार लग्न और चन्द्रमासे देखना चाहिये, अर्थात् लग्न राशि और चन्द्रमा की राशिसे आयुका निर्णय करना चाहिये ।

(५) इसी प्रकार जन्मलग्न और होरालग्न से विचार करना चाहिये ।

(६) विवाद होने पर दो प्रकारसे जो आयु आवे उसको मानना चाहिये ।

(७) विवादमें भी जन्मलग्न और होरा लग्न को प्रमुख मानना चाहिये ।

(८) यदि चन्द्रमा जन्म-लग्नमें हो अथवा सप्तम स्थानमें हो तो चन्द्रमा और लग्नसे निर्णय करना चाहिये, अन्यथा शनि और चन्द्रमाकी राशिसे निर्णय करना चाहिये । इस प्रकार ये चार विधियां हैं[1] । आयुके निर्णयार्थ इनको अधिक स्पष्ट जाननेके लिये चक्र भीं दे रहें हैं ।

अल्पायुः		
लग्नेश या लग्न	अष्टमेश या चंद्र	३२ वर्ष तक ।
चर	द्विस्वभाव	बालारिष्ट— ८ वर्ष तक ।
स्थिर	स्थिर	मध्यारिष्ट— २० वर्ष तक ।
द्विस्वभाव	चर	योगारिष्ट— ३२ वर्ष तक ।
मध्यायुः		
लग्नेश	अष्टमेश	
चर	स्थिर	६४ वर्ष पर्यन्त
स्थिर	चर	
द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	
दीर्घायुः		
लग्नेश	अष्टमेश	दीर्घायुः ७५ वर्ष उपरान्त और
चर	चर	१० वर्ष उप-
स्थिर	द्विस्वभाव	रान्त उत्तमायुः
द्विस्वभाव	स्थिर	

जन्म कुण्डली रघुवीरशरण शर्मा वैद्य

जन्म संवत् १९५८ श्रावण शुक्लपक्ष दशमी २४ अप्रैल सन् १९६६ से राहुकी महा दशा आरम्भ हुई है ।

यदि कोई ज्योतिषी इस कुण्डलीका आगामी फलित पर प्रकाश डालेंगे तो मैं उनका आभार मानूंगा ।

---

१ लग्नेशादष्टमेशाच्चैको योगः कथितो द्विज ।
होरालग्नाभ्यां द्वितीयं योगमेवं विचिन्तयेत् ।
तृतीयं शनिचन्द्राभ्यां चिन्तनीयं द्विजोत्तम ।
लग्ने चन्द्रः सप्तमे वा चिन्तयेल्लग्नचन्द्रतः ।



(१) लग्नेश द्विस्वभाव पर है। अष्टमेश द्विस्वभाव पर है। मध्यायुः।

(२) जन्मलग्न द्विस्वभाव है, होरा लग्न द्विस्वभाव है। मध्यायुः।

(३) शनि द्विस्वभाव पर है, चन्द्रमा स्थिर पर है। दीर्घायुः।

इस प्रकार मध्यायु निश्चित है। ६४-७२ और ८० वर्ष तक मध्यायु होती है।

आयुका प्रमाण

'द्वात्रिंशत् पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत्।
चतुःषष्ट्याः पुरस्तात्तु ततोदीर्घमुदाहृतम् ॥
षट्त्रिंशत्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत्।
द्विसप्तत्या पुरस्तात्तु ततो दीर्घमुदाहृतम् ॥
चत्वारिंशत् पुरस्तात्तु हीनायुःपरिकीर्तितम्।
अशीत्यब्दात् पुरस्तात्तु मध्यायुः परिकीर्तितम् ॥
ततो दीर्घ भवत्येवं विंशोत्तरशताधिकम्।
(जैमिनीय टीका)

अर्थात् ३२ वर्ष तक अल्पायु, इसके बाद ६४ वर्ष तक मध्यायु और इसके बाद दीर्घायु होती है।

दूसरा मत—३६ वर्ष तक अल्पायु, इसके बाद ७२ वर्ष तक मध्यायु, इसके बाद दीर्घायु होती है।

तीसरा मत—४० वर्ष तक अल्पायु, ८० वर्ष तक मध्यायु, इसके बाद १२० वर्ष तककी दीर्घायु होती है।

इस सम्बन्धमें जिज्ञासाके रूपमें मेरा प्रश्न है कि प्राचीनकालमें अथवा वर्तमानकालमें जिनकी आयु १२० वर्षसे अधिक होती थी या अब हुई है उनकी आयुका निर्णय कैसे होगा ?

त्रेतायुगमें कार्तवीर्यार्जुन (सहस्रबाहु) की आयु २३६ वर्षकी थी, जिसको पुराणोंमें ८५ सहस्र वर्षकी लिखी है।

'पञ्चाशीति सहस्राणि वर्षाणां स नराधिपः।'
(मत्स्यपुराण अ० ४३)

"अहर्वैसंवत्सरः" अथवा 'अहोरात्रे वै संवत्सरः।' शतपथ ब्राह्मणके अनुसार वर्षका अर्थ दिन भी होता है। तब ८५ सहस्र दिनके २३६ वर्ष होते हैं। वास्तवमें कार्तवीर्यार्जुनका नाम अर्जुन था, कृतवीर्य इसके पिताका नाम था। पिताके नाम पर कार्तवीर्य हुआ। जैसे कि वसुदेवका वासुदेव, कृष्णका कार्ष्णि आदि। यह अत्यन्त पराक्रमी तथा बलवान् था, इस कारण इसको सहस्रबाहु भी कहते थे[1]। राजा दशरथने विश्वामित्रको अपनी आयु ६० सहस्र वर्षकी बताई थी, जिसके १६६ वर्ष ८ मास होते हैं। "षष्ठिवर्षसहस्राणि जातस्य मम कौशिक।"
(बा.रा.बा.कां. २०।१०)

इस कथनके १२ वर्ष बाद मृत्यु हुई थी, इस प्रकार १७८ वर्ष आठ मास होते हैं। गरुड़ जातिके जटायुने भी रावणको अपनी आयु इतनी ही बताई थी।

---

१ इसके सम्बन्धमें अधिक जानकारीके लिये देखो लेखककी रचना 'धन्वन्तरि परिचय।'

षष्ठि वर्ष सहस्राणि जातस्य मम रावण !
पितृपैतामहं राज्यं यथावदनु तिष्ठितः ।
वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथः कवची शरी ।
(बा.रा. अरण्य कां०)

जटायु कहता है रावणसे कि इस समय मेरी आयु ६० हजार वर्षकी है, अर्थात् १६६ वर्ष ८ मासकी है, अपने बाप दादोंके राज्यको भोग रहा हूं । मैं वृद्ध हूं, तू युवा है, तेरे पास युद्धके साधन धनुष, वाण, कवच और रथ भी है, किन्तु मेरे जीते जी तू सीता को नहीं ले जा सकता । जटायु जातिका ब्राह्मण, पंचवटीका राजा तथा दशरथका मित्र था[1] ।

महाभारत युद्धके सभय भीष्मकी आयु १९० वर्ष, बाल्हीक[2] (भीष्मके ताऊ) की २३० वर्ष, राजा द्रुपद तथा आचार्य द्रोणकी १७५ वर्ष, कृपाचार्य[3] और कृपाचार्यकी भगिनी कृपी की १६० वर्ष, ऋषि याज्ञवल्क्यकी १५५ वर्ष, ऋषि जतुकर्णकी २५० वर्ष, ऋषि पराशरकी २४० वर्ष, पराशरके पुत्र व्यासकी १६५ वर्ष की आयु थी । इनमें कृपाचार्य व्यास और याज्ञवल्क्य महाभारतके बाद भी दीर्घकाल तक जीवित रहे हैं । जैसे कि ३६ वर्ष युधिष्ठिरका राज, २४ वर्ष परीक्षितका, जनमेजयके यज्ञमें व्यासजी थे । इस जनमेजयका शतानीक, इसको कृपाचार्यने शस्त्रास्त्रोंकी शिक्षा दी थी और याज्ञवल्क्यने वेदोंकी[4] ।

आधुनिक युगके दीर्घजीवी

(१) ६ जनवरी १९५९ ई० को प्रयागसे ५ मील दूर गंगातट पर शिवकुटी स्थानमें १५० वर्षके साधु 'देवरहा' के सैकड़ोंने दर्शन किये । (६-१-१९५९ 'नवभारत टाइम्स' दिल्ली) ।

(२) उमरशाह काहिरा (मिश्र) निवासीकी दो सौ वर्षकी आयु है । ('हिन्दुस्तान' दैनिक १०-४-१९५२)

(३) इमाम अलीशाहकी १७८ वर्षकी आयुमें मृत्यु हुई । (हि०दै०दिल्ली १०-४-१९५२)

(४) इंग्लेण्डमें १५वीं शताब्दीमें जन्मा किसान १७वीं शताब्दीमें मरा । मरते समय उसकी आयु १७० वर्षकी थी । (सचित्र आयुर्वेद, कलकत्ता अप्रैल १९५८ अंक १) इस प्रकार दीर्घजीवियोंके सैकड़ों नाम मेरे पास हैं—जिनका लिखना अनावश्यक है । आशा है ज्योतिषी इस विषय पर अवश्य प्रकाश डालेंगे, या कमसे कम विचार तो करेंगे ही । मैं वैद्यकसे अपनी जीविका चलाता हूं, ज्योतिषमें रुचि है इसलिए इस प्रकारकी जिज्ञासा है ।

पता—जालखेड़ा(बुलन्दशहर उ०प्र०)

---

१ देखो लेखकका 'धन्वन्तरि परिचय ।'

२ बाल्हीकको रोहिणी, इन्दिरा आदि पांच पुत्रियां थीं, इन सबका विवाह वसुदेवसे हुआ । रोहिणी सबसे बड़ी थी, इसी रोहिणी के बलराम पुत्र थे ।
(ब्रह्माण्डपुराण ३।७१।१६४)

(ख) इसी प्रकार देवककी ७ पुत्रियां थीं, उन सबका विवाह वसुदेवसे हुआ, इसी देवकीके श्रीकृष्ण पुत्र थे ।

३ कृप और कृपी दोनोंका जन्म एक साथ हुआ था ।

४ विष्णु पुराण ४।२१

कुण्डली और आपके आर्थिक सहायक

[लेखक :—डा० विश्वनाथ जोशी पंडित]

इस संसारमें बालसे बृद्ध तक मानव-मनमें यह आकांक्षा संजोये रखता है कि जब कभी भी उसे किसी संकटका सामना करना पड़े, तो उसके पारिवारिकजन एवं ससुराल वाले व मित्र-गण उसकी सहायता करें। इसी भावनासे प्रेरित, वह सभीसे प्रेम-भाव बनाये रखनेकी कोशिश करता है। आइये ज्योतिष-शास्त्रके अनुसार ढूंढें, कि ऐसे समयमें कौन आर्थिक सहायता करेगा ?

यह सब जाननेके लिए सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि कुण्डलीमें कौनसे धन सम्बन्धी भाव हैं। लग्न, धन व लाभ भाव धनके द्योतक हैं। पंचम व नवम भाव दैवी सहायता, लाटरी व भाग्यको दर्शाने वाले भाव हैं। जिन-जिन सम्बन्धियों आदिका इनसे घनिष्ठ सम्बन्ध होता हो उन-उन सम्बन्धियों से मनुष्य आर्थिक सहायता प्राप्त करता है।

१. यदि बृषभ लग्न हो मंगल तथा शुक्र पंचम भावमें स्थित हो तो उसके जातकको ससुरालसे काफी धनका लाभ रहेगा। क्योंकि शुक्र सप्तम भावका कारक ग्रह है और मंगल सप्तमेश है। इन दोनोंकी पूर्ण दृष्टि लाभ भाव पर पड़नेसे स्त्रीपक्ष यानी ससुरालसे लाभ होना बनता है।

२ यदि मेष लग्न हो और शुक्र बलवान् हो तो शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश होनेसे विशेष रूपसे फल प्रकट करेगा। ऐसा होनेसे द्वितीय व सप्तमका घनिष्ठ सम्बन्ध समझा जायेगा। जिससे जातकको स्त्री पक्षसे लाभ होगा।

३. यदि तुला लग्न वालेका मंगल बलवान् हो तो उसे भी स्त्री पक्षसे कुछ लाभ ही रहेगा। क्योंकि मंगल द्वितीयेश व सप्तमेश है।

४. यदि तुला लग्न हो तो लग्नेश अष्टम भावका स्वामी भी हुआ। उसमें शुक्र भी बलवान् हो तो स्त्री संचित धन द्वारा सहायता करेगी।

५. यदि मेष लग्न हो और मंगल बलवान् हो तो लग्न तथा अष्टममें घनिष्ठ सम्बन्ध हो जाता है। इससे जातकको अष्टमसे लाभ है। दूसरे शब्दोंमें कहा जा सकता है कि स्त्रीके उपार्जित अथवा संचित धनसे जातक लाभ उठायेगा। क्योंकि अष्टम स्त्रीका धन भाव है।

६. यदि द्वितीयेश पंचममें हो और पंचमेश द्वितीयमें हो तो धनकी प्राप्ति पुत्र द्वारा होगी। अर्थात् पुत्र कमाकर खिलायेगा।

७ यदि वृश्चिक लग्न हो, गुरु द्वितीयमें हो तथा पंचभमें स्थित ग्रह बली हो तो पुत्र द्वारा धन लाभ होगा।

८. यदि लग्न कन्या हो और शुक्र बलवान् हो तो धन पिताश्रीसे प्राप्त होगा।

९. यदि लग्न कन्या हो तो लग्नेश बुध की दूसरी राशि दशम स्थानमें पड़ती है अतः पितासे धनका लाभ बनता है। क्योंकि दशम भाव पिताका धन भाव है।

१०. यदि धनुर्लग्न हो और शनि बलवान् हो तो आर्थिक सहायता छोटी बहिन द्वारा होगी। परन्तु शनि पर यदि पुरुष प्रभाव हो

तो छोटे भाईसे लाभ होगा।

११. यदि लग्न कुम्भ हो, गुरु बलवान् हो तो बड़े भाईसे लाभ होगा।

१२. यदि लग्न मीन हो और मंगल बली हो तो स्त्रीके छोटे भाई यानी छोटे सालेसे लाभ होगा।

१३. यदि लग्न मकर हो तो वह परिश्रम के द्वारा अपने पांव पर खड़ा होगा। उसकी सहायता उसके सम्बन्धियों द्वारा बहुत कम होती है। उनके धनाधिपतिका लग्नेश होना धनको निज द्वारा प्राप्त करना जतलाता है।

१४. यदि मिथुन लग्न हो और बुध बलवान् हो तो मातासे धन प्राप्ति होगी, क्योंकि लग्न तथा माता स्थानमें बुध द्वारा घनिष्ठ सम्बन्ध हो जाता है।

१५. यदि वृश्चिक लग्न हो तो लग्नेश मंगल षष्ठ स्थानका स्वामी हुआ, मंगल यदि बलवान् हो तो माताके छोटे भाई (मामा) से लाभ होगा। इससे शत्रु तथा चोर तक सहायता करते हैं।

१६. यदि पंचम भावमें चन्द्रमा स्थित हो, उस पर शुक्रकी दृष्टि हो तो लाटरीसे अचानक धन मिलता है।

पता—गुरद्वारा रोड़, रोपड़ (पंजाब)

क्या ज्योतिष शास्त्र एक अनुमान शास्त्र है?

[लेखक :—श्री राजेन्द्रनाथ शुक्ल, ज्योतिष-शास्त्री]

भारतीय ज्योतिष शास्त्र हमारे आर्ष ऋषियोंकी अमूल्य सम्पत्ति है। ज्योतिष-शास्त्र के प्रत्येक सिद्धान्तको ऋषियोंने समयकी आधार शिला पर कसनेके पश्चात् बनाया है। अतः अनुमान पर तो ज्योतिषीय नियम, सिद्धांत आधारित नहीं हो सकते हैं। वे प्रत्येक दशामें अकाट्य सिद्ध होते हैं। इस सम्बन्धमें मैं एक उदाहरण पाठकोंके समक्ष रखना चाहता हूँ। न्यूटनने Law of qravity (गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत) का प्रतिपादन किया। न्यूटनने पेड़से सेवका फल केवल एक दिशामें गिरते देखकर ही गुरुत्वाकर्षण सिद्धांतका प्रतिपादन किया। पेड़ोंसे फलका प्रत्येक दशामें नीचे गिरना स्वाभाविक है। अन्य दिशाओंमें फल नहीं गिरते हैं। उपर कोई फल पेड़से टूट कर नहीं जाता है। तो ऐसा क्यों होता है, इसी आधार पर उपरोक्त नियम बना। कहनेका तात्पर्य केवल इतना है कि किसी भी घटनाका निरंतर होते रहनेसे उस घटनाकी प्रतिक्रिया स्वरूप नियम बन जाता है।

अतः ज्योतिष-शास्त्र अनुमान शास्त्र नहीं है। यह पूर्ण सत्य वैज्ञानिक शास्त्र है। ज्योतिष शास्त्रके आधार पर प्रत्येक घटनाका तिथि. समय, प्रकार आदि निर्णय किया जाता है। हम अनुमान कैसे कह सकते है जब सिद्धांततः समयका ही निर्धारण हो जाता है। यदि कोई व्यक्ति अपने जीवनकी घटनाओंके बारेमें जानना चाहता है तो यह कहना युक्तिसंगत नहीं है कि आपको अमुक वर्षमें अमुक घटना हो सकती है। घटना यदि होनी है तो होगी ही, उसको कोई रोक नहीं सकता। परन्तु ग्रह-स्थिति निश्चित ही स्पष्ट संकेत देगी, फिर

अनुमानका प्रश्न कहाँ रहा ? कई वर्ष पूर्व मेरे एक मित्र किसी पुरस्कार प्राप्त करने वाली योजनामें शामिल हुये, मैंने उन्हें संकेत दिया कि ग्रहस्थिति अनुसार आपको पुरस्कार प्राप्त नहीं होना है। परन्तु वे न माने, बात समझमें नहीं आई। मैंने अंक शास्त्रके आधारसे एक संख्या दी और कहा कि अगले पुरस्कारमें यह संख्या विजित होगी, आप कोशिश करो पुरस्कार प्राप्त होगा और योजनाके टिकटोंमें से यही टिकट संख्याका खरीदना। आपको आश्चर्य होगा कि वह टिकट पहले ही दिन किसी अन्य व्यक्तिने खरीद लिया था और आज भी वे पुरस्कार प्राप्त न कर सके।

कहनेका तात्पर्य केवल इतना है कि ज्योतिष-शास्त्रका कोई भी सिद्धांत अनुमान पर आधारित नहीं है। इस कारण अनुमानसे हम कोई भी फलादेश करेंगे वह गलत होगा। अतः यह आवश्यक है कि ठोस फलादेश हेतु हम पूर्ण विधि द्वारा—फलादेश करें क्योंकि अपूर्णता असफलताकी जननी है।

प्रायः मैं चारों तरफ घूम कर देखता हूँ लोग बहुधा जन्मांगचक्र लेकर कहते हैं कि यह मेरी कुण्डली है, जिसमें न संवत् होता है न जन्म तिथि, और न दशा चक्र, भावचक्र, नवमांश, त्रिशांश आदि-आदि, तो दैवज्ञ सूक्ष्म भविष्यफल कैसे कहेगा। मैं इस लेखके माध्यम से युवावर्गको जो इस शास्त्रके प्रति सजग हैं, अनुरोध करूंगा कि वे पूर्ण रूपेण जन्मांगसे सूक्ष्म भविष्यफल बतायें ताकि अनुमानका प्रश्न ही समाप्त हो जाय। ज्योतिर्विदोंके लिये यह आवश्यक होना चाहिए कि समस्त जन्म-कुण्डलियाँ एक ही व्यक्तिकी भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा बनने पर भी एकरूपता प्रदर्शित करें। वास्तवमें यही कमी है जो ज्योतिष-शास्त्रको बदनाम करती है। क्या कारण है कि एक ही व्यक्तिकी १० विभिन्न स्थानोंसे बनवाई गई जन्मपत्रियाँ विभिन्न फल प्रदर्शित करती हैं। यह हमारी कमी है, जनताकी नहीं। यदि ज्योतिष-शास्त्रके सिद्धांत एक हैं तो रंग, रूप में ग्रहस्थितिका प्रभाव तो चिन्तनीय हो सकता है। लंदन निवासीकी जन्म कुण्डलीमें शनि लग्नस्थ होनेसे रंग काला होना तो संभव नहीं, परन्तु स्वभाव तो उसी प्रकारका होगा जैसा भारतके ही किसी व्यक्तिकी कुण्डलीमें उसी प्रकारकी ग्रह स्थितिमें हो। शायद इसी आशय पर बेनहामने केवल विश्वमें ७ प्रकार के ही पुरुष बताये हैं।

मैं प्रस्तुत लेखके द्वारा ज्योतिर्विदों, विद्वानों एवं ज्योतिषप्रेमियोंसे अनुरोध करूंगा कि वे इस दिशामें सोचें कि किस प्रकार एकरूपता ज्योतिषशास्त्रमें स्थापित की जाय, ताकि विभिन्नता जो दिखाई पड़ती है वह दूर की जा सके, क्योंकि अकाट्य सिद्धांतोंको तर्कके आधार पर कसा नहीं जा सकता है। पत्रिकाके अगले अंकोंमें यथासम्भव मैं ज्योतिष के कुछ मुख्य विषयों पर चर्चा करूंगा।

पता २५५/२०७ कुण्डरी रकाबगंज,
लखनऊ (उ० प्र०)

शुभ-सन्देश

जन्म-कुण्डलीकी प्रतिलिपि व हेण्ड-प्रिण्ट भेजकर नवीन पद्धतिसे फलादेश प्राप्त कीजिए।

डा० हरिकृष्ण छंगाणी, ज्योतिषाचार्य,
एम.ए.,पी.एच.डी
फलोदी (राजस्थान)

मूक प्रश्न विज्ञान : एक विवेचन

[लेखक :—श्री मदनमोहन शर्मा अरविन्द]

भव्य-भू-भारतमें अनादिसे ही महान् दार्शनिक सन्त और महात्मा होते आए हैं। इन्हीं महात्माओंके अपूर्व त्याग एवं अदम्य उत्साहका प्रतिफल है—हमारा 'भारतीय ज्योतिष' (*Indian Astrology*).

"अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥"

वस्तुतः ज्योतिषके विषयमें यदि ऐसा कहा गया तो यह अत्युक्ति नहीं।

"वनं समाश्रितायेऽपि निर्ममा निष्परिग्रहाः।
अपिते परिपृच्छन्ति ज्यौतिषां गतिकोविदम् ॥"

अर्थात् वे लोग भी जो वैरागी हैं, जिन्होंने बनको ही अपना समाश्रय बना रखा है, अपना भविष्य जाननेको उत्सुक रहते हैं। अस्तु, इस विषयकी उपादेयता तो निर्विवाद सिद्ध है।

विविध पौराणिक प्रसंगोंमें हमारे पूर्वाचार्यों द्वारा प्रश्नकर्ताके मनोभाव विना उसके प्रकट किए जान लेनेका उल्लेख मिलता है। क्या ये चर्चाएँ सत्य हैं ?

जी हां ! ज्योतिषके माध्यमसे ऐसा सम्भव है। इस शास्त्रके अंतर्गत इसे 'मूक-प्रश्न विज्ञान' की संज्ञा दी गई है। यद्यपि कुटिलकालके कराल थपेड़ोंसे हमारा साहित्य एवं संस्कृति सभी कुछ जर्जरितसा हो गया था, तथापि तथाकथित विषयके कतिपय अवलोकनीय ग्रन्थ अद्यापि विद्यमान हैं। महर्षि गर्ग कृत 'प्रश्न-मनोरमा' इस विषयका अद्वितीय एवं प्राचीनतम ग्रन्थ है। एतदुपरान्त केरलीय प्रश्न ग्रन्थोंमें भी इसकी विस्तृत परिपाटी दी गई है।

केरलीय सम्प्रदाय तंत्र ग्रंथोंमें यत्र तत्र वर्णित है, जिसके अनुसार केरल नाम धारी किसी मुनि जिनका जन्मस्थान दक्षिण भारके केरल प्रान्तमें अनुमान किया जाता है, के नामसे उपरोक्त पद्धति प्रचलित है।

कुछ भी हो इन सभी ग्रन्थोंमें 'प्रश्न मनोरमा' चूँकि प्राचीनतम ग्रन्थ है, अतः अधिक विवेचनीय है। इसकी एक हस्त लिखित प्रति मेरे पास है। इसका प्रारम्भ मंगलाचरणकी इन पंक्तियोंसे होता है—

"प्रणम्यानन्दरूपत्वमानन्दैक निकेतनम्।
गर्गोबुद्धिमतां प्रत्यै (प्रीत्यै) प्रश्नविद्यामथाकरो ॥"

अगले श्लोकमें पिंड बनानेकी रीति बतलाते हुए कहते हैं—

"वर्ण वर्ग प्रमाणं च, सस्वरं ताडितं मिथः।
पिंड संज्ञा भवेत्तस्य, यथा भागैश्च कल्पना।"

अर्थात् स्वर सहित वर्ण और वर्गके प्रमाण का परस्पर गुणन करने पर प्राप्त संख्या पिंड होगी।

यथा—'चंपा' में—खण्ड—

च+अं+प+आ

अब

(१) वर्ण 'च' वर्ग 'च' का अक्षर है अतः 'च' वर्गकी संख्या=३

(२) वर्ण 'च' वर्ग च का पहला अक्षर है अतः 'च' की वर्ण संख्या = १

(३) मात्रा 'अं' की मात्रा है अतः अं की वर्ण संख्या = १

(४) मात्रा 'अं' वर्ग 'अ' की पन्द्रहवीं मात्रा है अतः 'अं' की वर्ण संख्या = १५

इसी भांति—

(५) वर्ण 'प' के वर्ग 'प' की संख्या = ६

(६) वर्ग 'प' के वर्ण 'प' की संख्या = १

(७) वर्ण 'आ' के वर्ग 'अ' की संख्या = १

(८) वर्ग 'अ' के वर्ण आ की संख्या = २

इस प्रकार 'चं' का सस्वर वर्ण कर्गाङ्क—

३ + १ + १ + १५ = २०

वर्ग च + वर्ण ज + मात्रा अं का वर्ग + मात्र अं की संख्या।

इसी प्रकार 'पा'

६ + १ + १ + २ = १०

दोनोंका परस्पर गुणन करने पर

२० × १० = २००

२०० यही अभीष्ट पिंड हुआ।

प्रश्न करते समय प्रश्न कर्ताके मुखसे निकले शब्दोंका उपरोक्त विधिसे पिंड बना लें, अथवा ऐसा न हो सके तो उससे किसी पुष्प का नाम कहलवा लें और उसका उपरोक्त विधिसे पिंड बना लें। आगे इसीके आधार पर प्रश्न ज्ञान होगा।

कथित श्लोकसे ग्रन्थकी टीकामें टीकाकारने एक और भी अभिप्राय लिया है जिसके अनुसार—

'चंपा' में

वर्गांक—'च'का ३ + 'प' का ६ = ९ (देखें कालम १ व ५)
वर्णांक—'च' १ + 'प' का १ = २ (देखें कालम २ व ६)
वर्ण वर्गांक = ९ + २ = ११

ऐसे ही मात्राओं में—

वर्गांक—'अं' का १ + 'आ' १ = २
वर्णांक—अं का १५ + 'आ' का २ = १७
वर्ण वर्गांक = १७ + २ = १९

सस्वर वर्ण वर्गांक = १९ + ११ = ३०

अथवा—९ + २ + २ + १७ = ३०

और प्रथम वर्ण वर्गांक = ११

दोनोंका गुणनफल = ३० × ११ × ३३०

यही अभीष्ट पिंड हुआ। इन दोनों विधियोंमें प्रथम विधि ही अधिक समीचीन है।

(क्रमशः)

पता—नटवर निकुंज गोकुल (मथुरा)

मुष्टिक योगमाला—

अनुभूत योग

[लेखक :—श्री वैद्य वाचस्पति शर्मा आयुर्वेदाचार्य]

(१) गृध्रसी (सायटिका) नाशक तैल

गृध्रसी रोगका प्रसार पाश्चात्य सभ्यता के आहार बिहारके अन्धानुसरणके साथ ही साथ होता जा रहा है। आतुर जन इस तैलके अभ्यङ्गसे धन और धर्मकी अभिवृद्धि करें।

(१) विशुद्ध तिल तैल ५०० ग्राम
(२) भीमसेनी कर्पूर १५ ग्राम
(३) विशुद्ध अहिफेन (अफीम) १५ ग्राम
(४) कट्फल (कायफल) ५० ग्राम
(५) तारपीन तैल १०० ग्राम

कर्पूर अफीम कायफलका पृथक्-पृथक् चूर्ण कर लेवें। तिल तैलको किसी चौड़े मुखके कलईदार बर्तनमें ले अग्नि पर रख देवें। थोड़ा-थोड़ा कायफल चूर्ण चुटकी भर-भर कर तैल में डालो, जब कायफल चूर्ण सब जल जावे। तब कर्पूर और अफीम भी तैलमें डाल देवें। शीतल होने पर तारपीनका तैल मिला देवें। शीशीमें भरकर सुरक्षित रख लेवें।

इस तैलसे गृध्रसी एवं अन्य सभी वात रोगोंमें मर्दन करनेसे बहुत लाभ होता है।

नोट—इस तैलकी मालिश कर अग्निसे भूल कर भी नहीं तपाना चाहिये।

(२) अस्थि प्रवर्धन योग (ऊंचाई बढ़ाना)

आजकल अधिकांश युवक नाटा कद होने के कारण योग्य होने पर भी महत्व-पूर्ण पदोंके लिये अयोग्य घोषित किये जाते हैं। अतः इस ओर अभिभावकोंको बाल्यकालसे ध्यान देना चाहिये। अतः वृद्ध वैद्य सम्मत बहुलोक चर्चित योग यहां दे रहा हूँ।

अस्यालू पाक

अस्यालू मालवा मेवाड़में बहुलतया पायी जाती है। बच्चोंकी लम्बाई बढ़ाने वाली औषधके नामसे इसे सर्वसाधारण जानता है। शीतकालमें इसका सेवन बच्चोंको (प्रातराशन) नाश्तेके रूपमें कराना चाहिये। अनुपान दुग्ध।

अस्यालू चूर्ण	१ किलो
घृत	१ किलो
शर्करा	२ किलो
खोवा	१ किलो
बादाम गिरि	२५० ग्राम
इलायची	१० ग्राम

अस्यालू चूर्णको घृतमें भून कर खोवा शर्करा बादाम इलायची पाकविधिसे पाक कर संयुक्त करें। इसका उपयोग १६ वर्ष तकके बच्चोंके लिये अत्यन्त लाभप्रद है। २५ वर्षसे पूर्व तक इसका सेवन करानेसे आशातीत लाभ होता है।

(२) स्मरण शक्ति वर्धक योग

इसे आमतौर पर याददाश्तकी कमी होना कहा जाता है। इसके कारण मनुष्यका सर्वत्र उपहास होता है। यों तो इस रोगकी सभी पर कृपा है, किन्तु सबसे अधिक अनुकम्पा छात्र वर्ग पर है। इसके अभावमें छात्रोंका परिश्रम व्यर्थ हो जाता है अतः—

ब्राह्मी स्वरस	१ किलो
ज्योतिष्मती (मालकांगनी) तैल	१०० ग्राम
शंखपुष्पी स्वरस	१०० ग्राम
वच	१० ग्राम
कूट	१० ग्राम
गोघृत	२ किलो

प्रथम स्वरसद्वयको घृतमें मिलाकर अग्नि पर चढ़ा सिद्ध कर लें। पश्चात् 'ज्योतिष्मती तैल मिला देवें। साथ ही वच व कूटका चूर्ण प्रक्षेप कर देवें। घृत जब तक मृदुपाक रहे तब तक उतार लें, छानकर पात्रमें भर लेवें।

प्रातः—१०/२० ग्राम घृत दुग्धमें डालकर पी जावें।

इससे स्मरण शक्ति तीव्र हो जाती है।

यह सर्वसम्मत ब्राह्मी है। आचार्य चरकने इसे मेध्यवर्गकी प्रकृष्ट औषधि कही है। इसे स्मरण शक्ति दात्री होनेसे सरस्वती भी कहते हैं, धारणा शक्ति अर्थात् मेधा बढ़ानेमें यह अनुपम है।

पता कोठियां (भीलवाड़ा राजस्थान)

अनुभव सिद्ध मन्त्र-यन्त्र प्रयोग

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

मन्त्र यन्त्र विद्याके मर्मज्ञ अब भारतमें बहुत कम रह गये हैं। कहीं-कहीं ऐसे मन्त्र-मर्मज्ञ महापुरुष हैं, वे लोकख्यातिसे परे हैं और अनधिकारीको ये रहस्य विद्याएँ बताते नहीं। भारतके कुछ तन्त्र-मन्त्र-मर्मज्ञ महापुरुषोंकी इन पंक्तियोंके लेखक (ज्योतिष्मती-सम्पादक) पर विशेष कृपा रही है। उन्होंने कभी अपने पत्रोंमें कुछ निजी अनुभूत प्रयोग भी स्नेहवश लिख भेजे थे, वे मेरे पास अमूल्य निधि रूपमें सुरक्षित हैं। जनकल्याणार्थ उन प्रयोगोंको मैंने 'ज्योतिष्मती' में क्रमशः प्रकाशित करनेका विचार किया है। पाठक इनका सदुपयोग करें। काशीके ख्यातिप्राप्त मूर्धन्यविद्वान् कविकुलगुरु साहित्यवाचस्पति स्व० महामहोपाध्याय श्री नारायण शास्त्री खिस्ते (भू०पू० प्रिन्सिपल गवर्नमेण्ट संस्कृतकालेज वाराणसी) ने अपने दि० २७-११-५७ के पत्रमें दो अनुभूत प्रयोग लिखे थे, वे अक्षरशः यहां प्रकाशित कर रहा हूँ।

(१) काममेखला प्रयोगः

"ॐ ह्रीं कामातुरे काममेखले विद्योषिणि नीललोचने ! अमुकं मे वश्यं कुरु कुरु ह्रीं स्वाहा॥" अनेन मन्त्रेण भक्ष्य द्रव्यं सप्तधाऽभिमन्त्र्य यस्य वश्यत्वमभीष्टं, तन्नाम्नापुनरभिमन्त्र्य सम्यक् चर्वितं भक्ष्य द्रव्यं तद्ध्यानपुरस्सर ४० दिनानि भुंजीत सोऽवश्यं वश्यो भवति।

(२) सूर्य मन्त्र प्रयोगः

"ॐ नमो भगवते श्रीसूर्याय ह्रीं सहस्रकिरणाय ऐं अतुलबलपराक्रमाय, नवग्रह दशदिक्पाल लक्ष्मीदैवताय, धर्मकर्मसहिताय, अमुकस्य नाम नाथय नाथय, मोहय-मोहय, आकर्षयाकर्षय, दासानुदासं कुरु कुरु क्षिप्रं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।" मन्त्रोऽयं प्रतिदिनं वश्यनाम घटितस्तद्ध्यानपूर्वकं प्रतिदिनमष्टोत्तरशतं जपितव्यः। अवश्यं वश्यो भवति।

विघ्नहरण यन्त्र

नोखासे श्री कान्ह महर्षिने ३ वर्ष पूर्व दो यन्त्र लिख भेजे थे—उनमेंसे पहला विघ्नहरण एवं कोषवृद्धिकारक यन्त्र यहां प्रकाशित कर रहा हूं। दूसरा यन्त्र ३४ अङ्कात्मक नवग्रह पीड़ानाशक है—उसका ब्लॉक अभी बन नहीं पाया, वह आगामी अङ्कमें देंगे।

विघ्नहरण यन्त्र

१००	७	२०१	११
२००	१२	९९	८
१३	२०३	५	९८
६	९७	१४	२०२

इस यन्त्रको शुक्लपक्षमें शुभ तिथि और वृषभके चन्द्रमामें सोमवारको शिवार्चन करके १०८ बार शैव अष्टगन्धसे भोजपत्र पर लिखकर कोषागार अथवा धान्यागारमें स्थापित करना चाहिए। प्रस्तुत यन्त्र विघ्नबाधाओंको नष्ट करके व्यावहारिक अनुकूलताएँ आदि प्रदान करता है।

शैवगन्धाष्टककी वस्तुएं ये हैं—

चन्दनागुरु कर्पूर तमालजल कुंकुमम्।
कुशीतं कुष्ठ संयुक्तं शैवं गन्धाष्टक विदुः॥

अनुभव सिद्ध मन्त्र-यन्त्र प्रयोग

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

मन्त्र यन्त्र विद्याके मर्मज्ञ अब भारतमें बहुत कम रह गये हैं। कहीं-कहीं ऐसे मन्त्र-मर्मज्ञ महापुरुष हैं, वे लोकख्यातिसे परे हैं और अनधिकारीको ये रहस्य विद्याएँ बताते नहीं। भारतके कुछ तन्त्र-मन्त्र-मर्मज्ञ महापुरुषोंकी इन पंक्तियोंके लेखक (ज्योतिष्मती-सम्पादक) पर विशेष कृपा रही है। उन्होंने कभी अपने पत्रोंमें कुछ निजी अनुभूत प्रयोग भी स्नेहवश लिख भेजे थे, वे मेरे पास अमूल्य निधि [illegible] सुरक्षित हैं। जनकल्याणार्थ उन प्रयो[illegible] 'ज्योतिष्मती' में क्रमशः प्रकाशित [illegible] विचार किया है। पाठक इनका स[illegible] काशीके ख्यातिप्राप्त मूर्धन्यविद्व[illegible] साहित्यवाचस्पति स्व० महाम[illegible] नारायण शास्त्री खिस्ते (भू० [illegible] गवर्नमेण्ट संस्कृतकालेज वाराण[illegible] दि० २७-११-५७ के पत्रमें दो [illegible] लिखे थे, वे अक्षरशः यहां प्रकाशि[illegible]



भरतपुर। सम्मान के दौरान मौजूद मुक्केबाजी टीम के सदस्य।

(१) काममेखला प्रयो[illegible]

"ॐ ह्लीं कामातुरे काममेखले [illegible] नीललोचने ! अमुकं मे वश्यं कुरु कुरु ह्लीं स्वाहा।।" अनेन मन्त्रेण भक्ष्य द्रव्यं सप्तधाऽभिमन्त्र्य यस्य वश्यत्वमभीष्टं, तन्नाम्नापुनरभिमन्त्र्य सम्यक् चर्वितं भक्ष्य द्रव्यं तद्ध्यानपुरस्सर ४० दिनानि भुंजीत सोऽवश्यं वश्यो भवति।

(२) सूर्य मन्त्र प्रयोगः

"ॐ नमो भगवते श्रीसूर्याय ह्रीं सहस्र-किरणाय ऐं अतुलबलपराक्रमाय, नवग्रह दश-दिक्पाल लक्ष्मीदैवताय, धर्मकर्मसहिताय, अमुकस्य नाम नाथय नाथय, मोहय-मोहय, आकर्षयाकर्षय, दासानुदासं कुरु कुरु क्षिप्रं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।" मन्त्रोऽयं प्रतिदिनं वश्यनाम घटितस्तद्ध्यानपूर्वकं प्रतिदिनमष्टोत्तरशतं जपितव्यः। अवश्यं वश्यो भवति।

विघ्नहरण यन्त्र

नोखासे श्री कान्ह महर्षिने ३ वर्ष पूर्व दो यन्त्र लिख भेजे थे—उनमेंसे पहला विघ्नहरण [illegible] प्रकाशित कर [illegible]त्मक नवग्रह [illegible]भी बन नहीं

[illegible]
११
८
९८
२०२

[illegible]की शुक्लपक्षमें [illegible] तिथि और वृषभके चन्द्रमामें सोमवारको शिवार्चन करके १०८ बार शैव अष्टगन्धसे भोजपत्र पर लिखकर कोषागार अथवा धान्यागारमें स्थापित करना चाहिए। प्रस्तुत यन्त्र विघ्नबाधाओंको नष्ट करके व्यावहारिक अनुकूलताएँ आदि प्रदान करता है।

शैवगन्धाष्टककी वस्तुएं ये हैं—

चन्दनागुरु कर्पूर तमालजल कुंकुमम्।
कुशीतं कुष्ठ संयुक्तं शैवं गन्धाष्टक विदुः।।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

जुलाई १९७४ ई०

ता० ४ गुरुवार—व्यासपूजा गुरुपूर्णिमा।
८ सोमवार—श्रीगणेश ४ व्रत चंद्रोदय २१।३७
१५ सोमवार—कामदा ११ व्रत स्मार्त्तगृहथोंका
१६ मंगलवार—कर्कमें सूर्य संक्रान्ति मु० ४५
वैष्णवोंका कामदा एकादशीव्रत।
१७ बुधवार—प्रदोषव्रत।
१९ शुक्रवार—हरियाली अमावस।
२१ रविवार—चन्द्रदर्शन मु०३०
२२ सोमवार—मधुश्रवा ३ सुवर्ण गौरीव्रत,
वरद गणेश चौथ।
२३ मंगलवार—नागपंचमी।
२५ गुरुवार—गो०तुलसीदास जयन्ती।
२६ शुक्रवार—श्रीदुर्गाष्टमो मेलाश्री नयनादेवी
व चिन्त्यपूर्णी हिमाचलप्रदेश
२९ सोमवार -पुत्रदा एकादशी व्रत।
३१ बुधवार—प्रदोष व्रत।

अगस्त १९७४ ई०

ता० १ गुरुवार—श्रीतिलक जयन्ती।
२ शुक्रवार—सत्यव्रत।
३ शनिवार—श्रावणी १५, रक्षाबन्धन, ऋषि-
तर्पण, श्रीअमरनाथ काश्मीर यात्रा।
६ मंगलवार—कज्जली ३ श्रीगणेश ४ व्रत
चंद्रोदय २०।४२
१० शनिवार—श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत स्मार्त्त
गृहस्थोंका चन्द्रोदय २३।४
११ रविवार—श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णवों
का चन्द्रोचय २३।५०, गोकुलाष्टमी काली ज.
१२ सोमवार—नन्दमहोत्सव, गुग्गा ९
१४ बुधवार—अजा ११ व्रत जैनपर्यूषण प्रारंभ
१५ गुरुवार—भारतीय स्वतन्त्रता दिवस २८वाँ
वत्स द्वादशी प्रदोष व्रत।
१६ शुक्रवार—सिंह संक्रान्ति मु. ३० अघोरा १४
१७ शनिवार—शनैश्चरी पिठोरी अमावस
कुशोत्पाटिनी ३०
१९ सोमवार—चन्द्रदर्शन मु० ४५
२८ बुधवार—पद्मा पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत।
३० शुक्रवार—प्रदोष व्रत।

सितम्बर १९७४ ई०

ता० १ रविवार—सत्यव्रत पूर्णिमा।
२ सोमवार—शबरात महोत्सव यवन-
सम्प्रदायका।
५ गुरुवार—श्रीगणेश ४ व्रत चंद्रोदय २०।२४
१२ गुरुवार—कमला पुरुषोत्तमा ११ व्रत।
१३ शुक्रवार—प्रदोष व्रत।
१५ रविवार—जन्मोत्सव श्री १०५ सोलन-नरेश
१६ सोमवार—सोमवती अमावस, कन्यामें सूर्य
संक्रांति मु० ४५, अधिक मास समाप्त।
१७ मंगलवार—चन्द्रदर्शन मु० ३०
१८ बुधवार—हरितालिका व्र.वराह ज. रोजाप्रा.
१९ गुरुवार—श्रीगणेश जन्म महोत्सव, कलंक-
४, पत्थरचौथ चन्द्रास्त २०।२६
२० शुक्रवार—ऋषिपंचमी जैन सव्वत्सरी।
२३ सोमवार—श्रीराधाष्टमी व्रत
२४ मगलवार—श्रीचन्द्र ९ उदासीन सम्प्रदाय
२७ शुक्रवार—पद्मा एकादशीव्रत। जलझूलनी-
११ मेला श्रीचारभुजा गढ़बोर मेवाड़।
२८ शनिवार—शनिप्रदोषव्रत श्रीभुवनेश्वरी
जयन्ती, वामन द्वादशी मेला अम्बाला।
३० सोमवार—अनन्त १४ व्रत, सत्यव्रत।

अक्टूबर १९७४ ई०

ता० २ बुधवार—म० गांधी जयन्ती, महालय-

पितृ पक्षारंभ।
४ शुक्रवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय १६।४८
११ शुक्रवार—इन्दिरा एकादशी व्रत स्मार्त्त.
१२ शनिवार—इन्दिरा ११ व्रत वैष्णवोंका।
१३ रविवार—प्रदोषव्रत।
१५ मंगलवार—अमावस्या, सर्वपितृश्राद्ध, महालय पितृपक्ष समाप्ति।
१६ बुधवार—शारदीय नवरात्रारंभ घटस्थापन
१७ गुरुवार—तुलामें सूर्यसंक्रान्ति, चन्ददर्शन।
१८ शुक्रवार—ईद-उल्-फितर।
२० रविवार—ललिता ५ श्रीसरस्वती आवाहन
२१ सोमवार—श्रीसरस्वती पूजन।
२२ मंगलवार—श्रीसरस्मती बलिदान।
२३ बुधवार—श्रीदुर्गाष्टमी महा ८ मेला-ज्वालामुखी तारादेवी हिमाचल प्रदेश, श्री सरस्वती विसर्जन।
२४ गुरुवार—महानवमी, नवरात्र समाप्त।
२५ शुक्रवार—विजया १० मेला दशहरा, रावणदाह।
२६ शनिवार—पापांकुशा ११ व्र० स्मार्त्त. वैष्णवोंका, भरतमिलाप।
२७ रविवार—पापांकुशा ११ व्र० निम्बार्क.।
२८ सोमवार—सोम प्रदोषव्रत।
३० बुधवार—शरद् पूर्णिमा, सत्य व्रत।
३१ गुरुवार—श्रीबाल्मीकि जयन्ती।

यात्रा संस्मरण

कुम्भ महापर्व (हरिद्वार)

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

गत वैशाखमासमें भगवती भागीरथीके पुण्यतट मायापुरी हरिद्वारमें कुम्भमहापर्वका महामेला सानन्द सम्पन्न हुआ। सौभाग्यवश जीवनमें चौथीबार इस कुम्भमहापर्व पर माँ जाह्नवीके सुखद अङ्कमें अमृतपानका सुअवसर प्राप्त हुआ था। अनेक स्नेही सज्जनोंके अनुरोधवश मैंने गत वैशाख कृष्ण १ रविवार दि० ७ अप्रैलको प्रातः सपत्नीक बस द्वारा हरिद्वारके लिए प्रस्थान किया। 'ज्योतिषबोध' के सम्पादक बन्धुद्वय श्रीराधेश्यामजी कौशिक ज्यौतिषाचार्य एवं श्री घनश्यामजी कौशिक एम.ए. के विशेष स्नेहानुरोधवश हम रात्रिको सहारनपुर उनके यहां रुके। जिस अपूर्व आत्मीयतासे बन्धुद्वयने हमारा स्नेहपूर्ण आतिथ्य किया, वह श्लाघनीय है। रात्रिको सहारनपुरके सुप्रसिद्ध महान्त सुन्दरदास रामायणीजी, श्री कौशलेन्द्र स्वामी एम.ए. तथा नगरके प्रसिद्ध साहित्यकार मिलने आये। सोमवारको प्रातः शीघ्र ही हम हरिद्वार पहुंचकर नित्यकृत्य करना चाहते थे, किन्तु हमारे परम स्नेही सहयोगी सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री कन्हैयालाल जी मिश्र प्रभाकर सम्पादक 'नयाजीवन' के साथ नवस्थापित ज्योतिर्विज्ञान-आश्रम मानस-निकेतनमें ६ बजे स्वागत और जलपानका कार्यक्रम रख दिया, अतः रुकना पड़ा। मध्याह्नमें कुछ अन्य स्नेही सज्जन मिलने आये। सायंकाल ५ बजे श्री राधेश्यामजी कौशिक, प्रो० कौशलेन्द्र स्वामी, श्रीघनश्यामजी कौशिक आदि सज्जनोंसे भावभीनी विदाई लेकर हम सायं ७।। बजे हरिद्वार पहुँचे। इस बार कुम्भ महा-

मेलामें राजकीय व्यवस्था सुन्दर थी । सभी खाद्य वस्तुएं उपलब्ध थीं । सभी धर्मशालाएँ, और आश्रम एवं होटलोंमें पैर धरनेको भी स्थान नहीं था । महीनों पहले धर्मशालाएँ बुक हो चुकी थीं ।

लाखों यात्री टेण्टों और वृक्षोंके नीचे मीलों तक गंगातट पर पड़े थे । इतना विशाल जनसमुद्र पहले किसी कुम्भ पर दिखाई नहीं दिया । मुख्य स्नान १४ अप्रैलको सन्तमहान्त मण्डलेश्वरोंकी शोभायात्रा (शाहियाँ) दर्शनीय थीं ।

हमारे निवासका प्रबन्ध एक मास पूर्व सेठ श्री मीनारामजीने नरसिंहभवनमें कर रक्खा था, अतः ३ दिन हमने वहां निवास किया । सप्तर्षि आश्रम और खड़खड़ीमें भी हमारे लिए स्थान सुरक्षित थे, किन्तु दूरीके कारण हमने वहां निवास उचित न समझा । कनखलके सुप्रसिद्ध पीयूषपाणि वैद्यराज श्री विष्णुदत्तजी शर्माने अपने यहां ठहरानेका विशेष स्नेहानुरोध किया । परंतु कनखलसे भी हरकी पौड़ी ३ मील दूर पड़ती थी, अतः हम वहां भी नहीं गये । नरसिंहभवनमें हमारे कमरे के बाहर बरामदे व चौकमें मुख्य द्वार तक चारों ओर स्त्रीपुरुषोंकी बढ़ती भीड़के कारण पैर रखनेकी भी सुविधा नहीं थी । यह दशा देखकर वैद्यराज श्रीविष्णुदत्तजीने हमारे लिए गुजरांवाला भवनके पीछे नवनिर्मित आर्य-समाज मंदिरकी ऊपरकी मंजिलमें एक बड़े कमरेका प्रबन्ध कर दिया । उक्त आर्यसमाज मंदिरके प्रबन्धक ठा० महेन्द्रसिंहजी और इंजीनीयर महोदयका स्नेहपूर्ण व्यवहार अविस्मरणीय रहेगा । दि० ११ से २५ अप्रैल तक हम यहां रहे । अनेक सन्त महात्मा विद्वान् महापुरुषोंके दर्शन हुए । पन्तद्वीपमें चारों जगद्गुरु श[illegible]ा-चार्य एवं परम पूज्य श्री करपात्री [illegible]ज सदलबल विराजमान थे । लक्ष [illegible]ज आकर्षणका केन्द्र था । इस कुम्भ मह[illegible] जहां अनेक पूर्व परिचित श्रद्धेय महात्मा एवं [illegible]ट-मित्रोंके दर्शन हुए, वहां ३ विभूतियों[illegible]थम बारके साक्षात्कारमें ही जो अपूर्व स्नेह[illegible]द्भाव एवं गुणग्राहकताका परिचय मिला वह जी[illegible]नमें सदा अविस्मरणीय रहेगा । इस त्रिमूर्तिमें प्रथम हैं–मायापुर निरंजनी अखाड़के विद्यानुरागी कारबारी श्री १०८ स्वामी रामकृष्ण गिरीजी, दूसरे हैं नारी हिमाचल प्रदेशके सुविख्यात बाबा रुद्र (श्रीरुद्रानन्द) मठके विद्वान् अधिपति वेदान्ताचार्य महान्त श्री १०८ सुग्रीवानन्दजी शास्त्री, तथा तीसरे हैं श्री शंकराचार्य नगर (ऋषिकेश) के संस्थापक विश्वविख्यात महर्षि महेशयोगीके प्रमुख शिष्य श्री १०८ स्वामी सत्यानन्दजी महाराज ।

कुम्भपर्वका यह महामेला भारत ही नहीं विश्वका सबसे बड़ा धार्मिक मेला कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी । लगभग एक मास तक उत्तरोत्तर बढ़ते ५० लाखके विशाल जन समुद्र में किसी दुर्घटनाका न होना इस बारके प्रशंसनीय प्रबन्धका परिणाम है । कुम्भ महापर्वके ऐतिहासिक सामाजिक धार्मिक महत्व और यात्रियोंके कर्तव्य पर मैंने एक निबन्ध अपने वर्तमान वर्ष सं० २०३१ के 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' में पृष्ठ ७७-७८-७९-८० पर दिया था–उसे पढ़कर भी दूर-दूरसे सहस्रों यात्री हरिद्वार पहुँचे थे । सोमवती अमावस और अक्षया ३ को हरकी पैड़ी पर स्नान करके हम सानन्द घर (सोलन) पहुंचे ।

त्रैमासिक राशिफल विमर्श

[लेखक :—श्री पं० कैलाशनाथ उपाध्याय, ज्योतिषी]

श्रावण मासका राशिफल

(ता० ५ जुलाई से ३ अगस्त १९७४ तक)

मेष —यह मास मध्यम है। उन्नति होती रहेगी। हिम्मत बढ़ेगी। भूमिपक्षसे हर्ष एवं मित्रोंकी बहुलता रहेगी। अर्थलाभ होगा. पर उससे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। सन्तानपक्षसे प्रसन्नता उपलब्ध होगी। विद्यार्थियोंका बौद्धिक विकास होगा। चालू व्यवसायमें पूंजी बढ़ानेकी चेष्टा हानिकर सिद्ध होगी। नौकरी वाले सुखी रहेंगे। पत्नी-सन्तान एवं अपने स्वास्थ्य रक्षा पर ध्यान देना उचित होगा। ता० ९, १४, २३ छोड़कर शेष दिन अच्छे हैं।

वृष—यह मास साधारण है। लाभोन्नति एवं सफलताके सुयोग मिलेंगे। मित्रोंसे सम्बन्ध की वृद्धि होगी। विविध परिस्थितियोंमें कुछ सुधारकी आशा रहेगी। नित्यप्रति इष्टदेवका जाप पूजन कल्याणकारी होगा, यदि ध्यान न देंगे तो १६ जुलाईसे चौथा मंगल चिन्ताप्रद होगा। राजनीतिक उलझनें उत्पन्न हो सकती हैं। खर्च, रोग, शोककी वृद्धि होगी। मंगलका प्रभाव चौथा सप्ताह धन-धान्य बाधक है।

मिथुन—इस मासके पूर्वार्धमें जन्मस्थ सूर्य+बुध मानसिक तनावको बढ़ाये रक्खेगा। मित्र-समुदाय काफी बढ़ेंगे, परन्तु उनसे विवाद का भय है। एकाग्रताका अभाव रहेगा। सहयोगियोंसे झगड़-झंझट तथा विविध रोगोंसे शरीर अस्वस्थ रहेगा। श्री हनुमान्‌की सतत आराधना एवं शनिस्तोत्रके नित्य पाठसे व्यवसाय नौकरी व राजनीति वाले सभी पुरुष और महिलायें अपने प्रयासोंमें पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

कर्क—मासारम्भमें व्ययस्थ सूर्य, जन्मस्थ मंगल, उत्तरार्धमें भी जन्मस्थ सूर्य धनस्थ मंगल मानसिक असन्तुलन बनाये रक्खेगा। आपका मन हर्षयुक्त नहीं रहेगा। व्यापारमें बाधाकारी प्रभाव दृष्टिगोचर होगा। व्ययाधिक्यके कारण दिमागी कार्योंमें बाधा पहुँचेगी। आपका मनोबल छिन्न-भिन्न रहेगा। बहुत सावधानी रखने पर ता० १७ के बाद कुछ जरूरी कार्य पूरे होंगे। महिलाओंका कार्यक्रम सफल रहेगा, मूँगा धारण करनेसे लाभ बढ़ेगा।

सिंह—मासफल साधारण है। जनसम्पर्क की अधिकतासे आपका मस्तिष्क विफल रहेगा। बहुमुखी चित्तवृत्तियोंके कारण आप अत्यधिक उलझनें महसूस करेंगे। धन और गृहस्थसुखके मामलोंमें कमजोरी रहेगी। आमदनी खर्चका लेखा-जोखा बराबर रहेगा। घरेलू प्रपंचोंमें ऋणकी आवश्यकता पड़ेगी। ता० ७,८,१३,१७,२६,२७ को छोड़कर शेष दिन सन्तोषप्रद हैं। सूर्यनारायणकी उपासना नितान्त आवश्यक है।

कन्या—आपका यह मास श्रेष्ठ है। अपने साहसी स्वभावसे उलझनों पर विजय पानेमें समर्थ रहेंगे। भूमि पक्षसे लाभ और प्रगतिके

दृढ़ योग प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार-नौकरीकी स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी। महिलाएँ सुखी रहेंगी। मासके उत्तर भागमें जोश, क्रोध और उतावलापन बढ़ सकता है—अतः देवोपासनामें अधिक तत्पर रहना चाहिये। कोई नई योजना प्रारंभ करनेका विचार हो तो उसे अभी स्थगित रखें।

तुला—मासफल उत्तम है। सम्मान रक्षा के निमित्त धनका व्यय करेंगे। उलझनें दूर होंगी। मित्रोंसे व्यापारमें लाभकारी प्रभाव एवं पत्नी-सुख उत्तम रहेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। नौकरी वालोंकी उन्नति होगी। उच्चाधिकारीजनोंसे हर्षकी प्राप्ति होगी। राजनीतिक व्यक्तियोंका प्रयत्न सफल होगा। श्रेष्ठजनोंका सम्पर्क अनायास सुलभ होगा। मानसिक प्रसन्नता बनी रहेगी। शुक्लपक्षमें भाग्यकी विशेष अनुकूलता उपलब्ध होगी।

वृश्चिक—मासफल अशुभ है। आपका व्यक्तिगत जीवन सन्तुलित नहीं रहेगा। विविध बाधाओंसे संघर्षरत रहना पड़ेगा। कार्यक्षेत्रमें आलस्यकी प्रधानता रहेगी। विरोधी प्रवृत्तियोंको संयमित करना आवश्यक है। स्वास्थ्य कष्टयुक्त रहेगा। व्यापार-नौकरी साधारण चलेगा। ता० १६ के बाद परिस्थिति में थोड़ा सुधार होगा। विद्यार्थियोंको अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। अच्छा हो कि आप अपने इष्टदेवकी उपासनामें अधिक सावधानी रखें।

धनुः—यह मास चिन्ताकारक है। सम्बन्धी जनोंसे विरोध बढ़ेंगे। उच्चाधिकारियोंसे झगड़ेकी आशंका रहेगी। व्यवसाय और सर्विस प्रतिकूल वातावरण बनायेगा। मानसिक तनावको बढ़नेका मौका नहीं देना चाहिये। मासके उत्तरार्द्धमें महिलाएँ अपना वातावरण अनुकूल बना लेंगी। राजनीतिक व्यक्तियोंको यथेष्ट सफलता मिलेगी। विद्यार्थियोंकी इच्छा शक्ति सुदृढ़ बनेगी। ता० १८ से २७ के बीच कोई आकर्षक लाभ होना संभव होगा।

मकर—आपको यह मास साधारण प्रभावोत्पादक रहेगा। स्वास्थ्यकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं रहेगी। कटु-शब्दोंके प्रयोगसे बचना उचित है। आपकी चित्तवृत्तियाँ बहुमुखी रहेंगी। उलझनोंके साथ कौटुम्बिक-सुख, मित्रोंसे विशेष सम्पर्क और यात्राकारी योग प्राप्त होंगे। व्यावसायिक स्थिति मध्यम रहेगी। फालतू कार्योंका भार बढ़ेगा। पुराने ऋणके अदायगीकी चिन्ता रहेगी। खान-पानमें बिलम्ब, दिनचर्यामें व्यवधान, शयनमें असुविधा तथा रिश्तेदारोंके निरन्तर आवागमनसे भी मनोव्यथा होगी, उत्तरार्द्ध सन्तोषप्रद रहेगा।

कुम्भ—भाग्योन्नतिका अवरोध हटेगा। स्वास्थ्य साधारण रहेगा। धर्ममें रुचि बढ़ेगी। परिस्थितियोंमें क्रमिक सुधारका अनुभव होगा। परिवारमें अस्वस्थताकारी प्रभाव दिखाई देगा। राज्यपक्षसे कुछ चिन्ताएं रहेंगी। मंदगतिसे आजीविकाका संचालन होगा और शुक्लपक्षमें विशेष सन्तोष मिलेगा। गुरु-बृहस्पतिका व्रत, उनकी उपासना, पीले वस्त्र एवं पीले खान-पानके प्रयोग पर अपना ध्यान केन्द्रित करें तो अधिक फलप्रद होगा।

मीन—यह मास अपव्ययकारक है।

सज्जनोंका सम्पर्क मिलते हुए भी कुटुम्बीजनोंसे विरोध, स्वास्थ्यमें विकार-एवं मानसिक चिन्ताएँ उत्पन्न होंगी । कर्मक्षेत्रमें आलस्य, उच्चाधिकारियोंसे विरोध एवं संवेदन शीलताके प्रभाव बढ़ेंगे । शीतल पदार्थोंका सेवन, शान्त वातावरणमें रहन-सहन तथा धार्मिक ग्रन्थोंका पठन-पाठन आपके लिए बहुत आवश्यक है । इस आचरणको अपनाकर ही आप सुख प्राप्त कर सकते हैं ।

प्रथम भाद्रपद मासका राशिफल
(ता० ४ अगस्तसे १ सितम्बर ७४ तक)

मेष—बिगड़ी परिस्थितियाँ सुधरेंगी । धनलाभमें अनुकूलता, मित्रोंसे स्वाभाविक मतभेद, स्वास्थ्य साधारण तथा श्रेष्ठ लोगोंसे उपयुक्त मंत्रणाकी प्राप्ति होगी । मस्तिष्क सन्तुलित रहेगा । साहसिकताकी वृद्धि होगी । पत्र-व्यवहारसे शुभ समाचार मिलेगा । विदेशीय सम्बन्ध लाभकारी रहेगा । व्यावसायिक जीवन में सरलतापूर्वक प्रगति उपलब्ध होगी । महिलाओंको स्वतंत्रतापरक चेष्टायें त्यागनेसे ही उत्तम सफलता मिलेगी ।

वृष—यह मास अर्थ-समस्या कारक है । स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा । मानसिक चिन्ताएँ बढ़ेंगी । व्ययकी अधिकता, पारिवारिक विवाद व्यावसायिक चिन्ताएं तथा कानूनी उलझनें दिखाई देंगी । पंचमुखी हनुमान्‌की उपासना पूर्ण अनुष्ठान विधिसे यदि किया-कराया जाय तो अशुभत्वका निवारण होगा और आपके प्रत्येक प्रयासमें शनैः शनैः सफलता प्राप्त होने लगेगी । जुलाई मासका अन्तिम सप्ताह किसी विशिष्ट सफलताका सूचक है ।

मिथुन—इस मासमें विषम स्थितियाँ समाप्त होंगी । अध्ययनमें सफलताकारी प्रभाव प्राप्त होंगे । विचार-शक्ति परिपुष्ट रहेगी । स्वास्थ्य उत्तम रहेगा । सौभाग्यवशात् विविध उलझनें स्वयं हटेंगी । कर्ममें आलस्यका प्रभाव दूर होगा । शत्रु नष्ट होंगे और व्यापारसे सन्तोषप्रद लाभ होगा । दाम्पत्य जीवन सुखी, एवं सम्पन्न रहेगा । वृद्धजनोंको श्वास-कासादि रोग प्रभावित कर सकते हैं, शनिकी शान्तिसे उसका निवारण भी होगा ।

कर्क—यह मास कष्टप्रद है । स्वास्थ्य मध्यम रहेगा । विशेष सौम्यतासे व्यवसायमें सफलता मिलेगी । पत्र-व्यवहारसे अशुभ संबाद, दौड़धूप, घरेलू प्रपंच बढ़ेगा । सम्मान रक्षाके निमित्त योग उत्तम है । स्त्रीपक्षसे मनमुटाव, मस्तिष्कमें दुर्बलता, हर बातमें हठी बने रहना इस मासका विशिष्ट प्रभाव होगा । व्यवसायमें नई पूंजी लगाना ठीक नहीं होगा । आपको पुरुषोत्तम मासमें दान-पुण्यादिकी ओर अधिक ध्यान देना चाहिये ।

सिंह—इस मासमें आपका शरीर अस्वस्थ रहेगा । व्यापारमें विविध प्रतिस्पर्धाओंका सामना करना पड़ेगा । पारिवारिक सुखमें विघ्न और व्यर्थ अहंकार द्वारा चिन्ताएँ बढ़ेंगी । पत्नीको उदर-सम्बन्धी व्याधिकी आशंका रहेगी । ता० १६ के बाद आप महत्त्व पूर्ण योजनाएँ बनानेमें तत्पर रहेंगे । महिलाएँ सामाजिक कार्यक्रमोंमें रुचि लेंगी । शासनसेवी व्यक्तियोंको अपनी सम्मान रक्षा पर अधिक ध्यान देना उचित होगा ।

कन्या—विरोधी वर्ग पराजित होंगे ।

चित्तवृत्ति एकाग्र रहेगी । मित्रोंसे सम्पर्क अधिक होगा । अध्ययनमें विशेष रुचि रहेगी । व्यापारिक लाभके लिए श्रेष्ठ योग उपलब्ध होंगे । मानसिक शान्ति, आमोद-प्रमोद, रसिक वार्तालाप, नजदीकी यात्राएं भी संभव होंगी । स्वास्थ्य उत्तम रहेगा । महिलाओंका व्यक्तिगत जीवन सुखी एवं सम्पन्न रहेगा । सामान्यतया सुख शान्ति मिलेगी । घरेलू कलह मिटेगा । शत्रु परास्त होंगे ।

तुला—शारीरिक निर्बलता बनी रहेगी । मित्रोंसे परस्पर विरोधी मंत्रणाएं उपलब्ध होंगी । मस्तिष्कमें किसी प्रकारका द्वन्द्व बना रहेगा । व्यवसायमें अवनतिका अनुभव होगा । रोग ऋण और शत्रुका प्रकोप संभव हो सकता है । विद्यार्थियोंको अपने अध्ययन पर विशेष ध्यान देना चाहिए । मानसिक चिन्ताएं बढ़ेंगी । खर्चकी अधिकतासे अनायास धन हानि भी हो सकती है । पारिवारिक कठिनाइयोंमें भी उलझे रहना पड़ेगा । महिलाओंको संकट बढ़ेगा ।

वृश्चिक—यह मास साधारण है । विवादों में अधिक प्रवृत्ति रहेगी । सन्तानपक्षसे चिन्ता-कारी प्रभाव दृष्टिगत होगा । क्रोधकी प्रधानता रहेगी । उद्योगधंधोंमें शुभ प्रभाव, किन्तु स्वास्थ्यके लिए विघ्न दिखाई देंगे । अपने भाग्यानुसार लाभ निश्चित होगा । किसी अप्रिय घटनासे मन अशान्त रहेगा । आर्थिक समस्यायें सुलझेंगी । ता० १८ के बाद महिलाओंको विरोधियोंसे कष्ट मिलेगा । स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा । अपव्ययसे बचें ।

धनु—यह मास सामान्य फलदायी है । अध्ययनमें रुचि बढ़ेगी । व्यवसायमें प्रगतिका अनुभव होने लगेगा । अर्थ व्यवस्था ठीक तरहसे चलेगी । उच्चाधिकारियोंसे सम्पर्क बढ़ेगा । चिन्ता और परेशानियोंसे पीछा छूटेगा । सम्मान रक्षामें सफल होंगे । महिलाएँ रक्तदोषसे पीड़ित रहेंगी । विद्यार्थियोंके लिये यह मास शुभ है, मेहनतसे पढ़ाई शुरु करें । निवास स्थान सुख-दायी सिद्ध होगा । महापुरुषोंके समक्ष व्यवधान उपस्थित होगा ।

मकर—आपके सभी बिगड़े कार्य देर-सवेर बनेंगे । मस्तिष्क विशेष कार्य-रत रहेगा । सम्मानके लिए चिन्ताका अनुभव हो सकता है । जमीन जायदाद विद्या, आयु, एवं द्रव्य प्राप्तिके मामलेमें स्थिति सुधरती ही जायेगी । व्यापारी वर्ग पूंजी बढ़ायेंगे । महिलाएं सामा-जिक कार्यक्रमोंमें रुचि लेंगी । खान-पान, रहन-सहन एवं अन्य नित्य कर्म अव्यवस्थित रहेगा । विद्यार्थियोंके लिए विद्याभ्यासका अवसर है । उपासनामें लगे रहें ।

कुम्भ—मास फल सामान्य है । चित्तमें उग्रताका प्रभाव बढ़ेगा । विधान-पक्षसे प्रति-कूलता रहेगी । सन्तान पक्षसे खेदग्रस्त रहना पड़ेगा । शत्रु-कलह बढ़ेगा । नौकरी वालोंको आशानुकूल उन्नति नहीं मिलेगी । निम्न वर्गों के सम्पर्कसे धनका अपव्यय होगा । अपनी बुद्धि के विपरीत प्रभावसे कुछ कार्य बिगड़ जायेंगे । महिला सम्पर्कसे हानि होगी । देवोपासनामें दत्तचित रहनेसे अशुभ प्रभावोंमें न्यूनता आ जायेगी ।

मीन—पारिवारिक कष्ट, अपव्ययकी संभावना रहेगी । उच्चवर्गीयजनोंसे पीड़ा, खेद एवं मनमुटाव होगा । स्वास्थ्यके लिए मिश्रित समय है । स्त्री-सौख्यमें बाधायें

आयेंगी । इसी मासके शुक्लपक्षमें कठिन परिश्रमसे आर्थिक लाभ, परिस्थितियोंकी अनुकूलता, व्यापारमें शुभ फल और स्त्री-पक्षसे हर्षकी प्राप्ति होगी । अपने उदर-शुद्धि पर विशेष ध्यान देना चाहिये । नौकरी वालोंको पदोन्नतिके लिए संघर्ष करना पड़ेगा । दुर्गाकी उपासनाका अवलम्बन करना विशेष रूपसे आपका कर्त्तव्य है ।

द्वितीय भाद्रपद मासका राशिफल
(ता० २ सितम्बरसे १ अक्तूबर १९७४ तक)

मेष—इस मासमें आपको बड़े लोगोंकी कृपा प्राप्त होगी । पत्रव्यवहार एवं विदेशी संपर्कसे लाभकी आशा रहेगी । व्ययकी अधिकता क्रमित रहेगी । व्यवसायका कार्यक्रम सन्तोषप्रद रहेगा । यात्रामें कार्य-सिद्धिकी आशा रहेगी । महिलाओंको हरक्षेत्रमें प्रतिस्पर्धी लोग नीचा दिखानेकी चेष्टा करेंगे । १८ सितम्बरके बाद नाक, कंठ, उदर एवं रक्त-दोषकी प्रबल संभावना रहेगी, महामृत्युंजयका मंत्र-प्रयोग यथासाध्य स्वयं करें और नीतियुक्त योजना अपनाये रखनेमें कल्याण है ।

वृष—मानसिक असन्तोष इस मासमें व्याप्त रहेगा । आपके व्यक्तित्वमें कठोरताका उदय और कर्मक्षेत्रमें कठिनाइयाँ आयेंगी । मस्तिष्क अशान्त रहेगा, अपव्ययसे बचनेकी कोशिस करें । स्वबाहुबलसे मासोत्तरार्द्धमें धर्मावलम्बन पर आधारित सफफला प्राप्त करेंगे । महिलाओंका दिल बढ़ेगा । मित्रोंसे सम्बन्ध विशेष उत्तम रहेगा । यात्रा करना उत्तम नहीं है, सर्विस वालोंको शुभाशुभ मिश्रित प्रभाव उपलब्ध होगा ।

मिथुन—इस मासमें आर्थिक झंझटें लगी रहेंगी । स्त्री-सौख्य मध्यम, व्यापार और सर्विस में परिश्रमकी अधिकता तथा प्रतिस्पर्धाओंमें विजय होगी । महिलाओंके लिए धनका व्यय बढ़ेगा, अनिच्छित व्यक्तियोंका संसर्ग खेदकारी होगा । दौड़धूपकी बिशेषता रहेगी । उत्तरार्द्धमें धार्मिक दृष्टिसे उत्तम प्रभाव मिलेंगे, एवं इच्छित कार्यकी सिद्धि होगी । अपने व्यापार में विज्ञापन एवं आवश्यक उपायों द्वारा सफलता, लाभ एवं हर्षकी प्राप्ति हो सकती है ।

कर्क—यह मास साधारणफलप्रद है । मानसिक उद्वेग रहते हुए भी व्यापारमें लाभ, धर्ममें रुचि तथा मित्रोंसे सहयोग मिलेगा । आमोद-प्रमोदमें रुचि होगी । नित्यकर्मोंमें सुधार करेंगे । आप अपने कामोंमें सफलता कुछ कठिनाइयोंके बाद ही प्राप्त कर सकेंगे । तीसरे सप्ताहमें नौकरी वालोंकी वेतनवृद्धि-पदवृद्धि, स्थानान्तरणके योग मिलेंगे । व्यापारियोंको स्टॉक बढानेमें सफलता मिलेगी । वृद्धजनोंको देवोपासनामें अधिक रुचि जाग्रत होगी. अपव्यय से बचें ।

सिंह—यह मास उत्तम है । धन लाभ, मित्रोंसे प्रसन्नता, उपासनामें रुचिकी अधिकता रहेगी । सन्तानपक्षसे हर्ष, अध्ययनमें सफलता, साहसिक कार्योंमें प्रवृत्ति एवं पड़ोसियोंसे विवादके योग मिलेंगे । स्वास्थ्यका सुख नहीं मिल सकेगा । दौड़ धूपकी अधिकता रहेगी । चतुर्थ सप्ताहमें अकारण ही मनोबलकी गिरावटका अनुभव होगा । आपको नित्यप्रति आदित्य हृदय कवचका पाठ अवश्य करना चाहिये ।

कन्या—व्ययकी विशेषता रहेगी । धन लाभ उत्तम, आमोद प्रमोदमें रुचि, यश-सम्मान की वृद्धि एवं अध्ययनमें सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहेगा । भाग्यवृद्धि और आर्थिक सफलता मिलेगी । महिलाओंको अनिच्छित द्रव्यकी प्राप्ति होगी। दाम्पत्य जीवन सुखी व समृद्ध रहेगा । ससुराल पक्षसे लाभ होगा। विद्यार्थियोंका बौद्धिक विकास होगा। तीसरे-चौथे सप्ताहमें शिवार्चनसे सफलता प्राप्त हो सकती है ।

तुला—शरीर अस्वस्थ रहेगा । सम्मान सम्बन्धी चिन्ता, व्ययकी अधिकता एवं कठोर कर्मोंमें रुचि बढ़ेगी । विचार शक्ति अधिक उत्तेजित रहेगी। सन्तानपक्षसे पीड़ा, रोजीमें रुकावट तथा यात्रामें विघ्नके योग हैं। घर परिवारकी अनेक समस्याएँ पैदा होंगी। शरीर में आलस्यकी अधिकता रहेगी। बिनोदी व्यक्तियोंसे अपमानित होना पड़ेगा। ता० १८ के बाद स्त्रीपक्षसे सुख व सहयोग प्राप्त होगा। परिश्रम पूर्वक जीविका निर्वाह एवं द्रव्यलाभ कर सकेंके।

वृश्चिक—प्रगतिकारक स्थिति होते हुए भी गुह्य-चिन्ताएँ लगी रहेंगी। क्रोधका प्रभाव बढ़नेसे नित्य-कलहकी आशंका होगी । व्यर्थ खर्च और छिपे-शत्रुओंसे प्रायः सतर्कता रखना आवश्यक है । ज्यादातर घरेलू प्रपंचोंमें उलझना पड़ेगा । शुक्लपक्षमें पुराणे मित्रसे कलह और वैरभाव दूर होगा। द्रव्य प्राप्ति होकर आवश्यक कार्य सिद्ध होंगे। मनोबलमें गिरावटका तनिक भी असर न आने दें, पुरुषार्थको जाग्रत बनाये रखना ही श्रेष्ठ होगा।

धनुः—बिगड़ी स्थितियोंमें सुधारका अनुभव होगा । लाभ होगा, सफलता मिलेगी, परन्तु श्रेष्ठ भाग्योन्नतिमें बाधाएँ आयेंगी। अनियमित व्ययभारसे मनमें खिझलाहट पैदा होगी । शरीरमें स्फूर्तिपनका संचार होगा। महिलाएँ सुखी एवं प्रसन्न रहेंगी । घर-परिवार के सुखोंका अभाव दूर होगा। गुप्त शत्रुओंका जोर शान्त हो जायेगा। मनोविनोदके साधन उपलब्ध होंगे। ता० १८ के बाद व्यक्तित्वमें नवीन चमत्कृतिका अनुभव होने लगेगा।

मकर—व्यावसायिक स्थिति मध्यम रहेगी। अपनी बुद्धि पर भरोसाका अभाव रहेगा। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। वाकशक्ति का विकास होगा। व्यापारमें परिवर्तनकारी अनुकूलताका लाभ कुछ श्रेष्ठजनोंको मिलेगा। आकस्मिक यात्राके अवसर सफलीभूत होंगे। मेहनत और लगनसे काम करने पर भारी सफलता मिल सकती है । स्वास्थ्य रक्षा पर अधिक ध्यान देना चाहिए । आपके लिए श्री बटुक भैरवकी उपासना उत्तम सिद्ध होगी।

कुम्भ—इस मासमें विरोधियोंकी प्रबलता रहेगी । व्यापारमें असफलता, चिन्ताओंकी अधिकता और विश्वासपात्रोंसे धोखाका भय है। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा । विद्यार्थियोंका मन अनिद्रासे परेशान रहेगा। मानसिक तनाव बढ़ा चढ़ा रहेगा। तीसरे-चौथे सप्ताहमें मन्दगतिसे व्यापारिक सफलता मिलेगी। महिलाओं को उदर सम्बन्धी पीड़ा होगी । सर्विसमें सुधार, समाजमें सम्मान, जनप्रियता और निजी कार्यानुरूप पराक्रमकी सिद्धि होने लगेगी। श्री दुर्गाभगवतीकी उपासना और पाठ से ही आपका अभीष्ट सिद्ध होता जायेगा।

मीन- इस मासमें मस्तिष्क बोझिल रहेगा। शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। व्ययकी विशेष वृद्धि और मानसिक चिन्ताओंके योग बलवान् मिलेंगे। पत्नीको शरीर पीड़ाकी काशंका रहेगी। संभव है कर्जा भी लेना पड़े। व्यापारियोंको अपने व्यवसायमें घाटा रहेगा। घरेलू प्रपंचोंसे मन अशान्त रहेगा। पारिवारिक सुख नहीं मिल पायेगा। नौकरी वालोंको साधारण लाभ रहेगा। किसी कायमें मन नहीं लगेगा। शिवार्चन जरूरी है।

आश्विन मासका राशिफल

(ता० २ से ३१ अक्तूबर ७४ तक)

मेष—मासफल साधारण है। अपने व्यक्तित्वके प्रयोगसे कार्य-सिद्धि, मित्रोंसे प्रसन्नता एव आवश्यक वस्तुओंकी प्राप्तिके श्रेष्ठ योग मिलेंगे। आर्थिक सफलता मिलेगी। व्यापारियोंको अपने व्यवसायमें विशेष लाभ होगा। परिवारमें या रिश्तेदारोंमें शुभ कार्य सम्पन्न होंगे, उत्तरार्धमें सप्तमस्थ "सू. मं. बु. शु." का योग सफलताप्रद रहेगा। सहयोगीजनोंसे विशेष प्रसन्नता मिलेगी। कुछ द्रव्यकी प्राप्ति होगी। महिलाओंको परिश्रम अधिक करना होगा।

वृष—मासफल उत्तम है। अपनी पुरुषार्थ शक्तिसे सुख और सफलता मिलेगी। राज्यपक्षकी अनुकूलता, विविध विपत्तियोंका निवारण, और शुभ समाचारोंकी प्राप्तिका योग रहेगा। व्यापारियोंकी योजनाएँ सफल होंगी। मनोविनोदके साधन उपलब्ध होंगे। मेहनत और लगनसे काम करें तो लाभ होगा। चिन्ता और परेशानियोंसे पीछा छूटेगा। महिलाओंके लिए पारिवारिक सुखमें बाधा है। स्वास्थ्य साधारण रहेगा।

मिथुन मास मध्यमें राश्येश बुध वक्री होनेसे विभिन्न परेशानियाँ आयेंगी। व्यय अधिक होगा। कुटुम्बीजनोंसे क्लेश मिलेगा। विविध विवाद बढ़े रहेंगे। चित्तमें क्रोधकी मात्रा अधिक रहेगी। पत्नीसे सेवा-सहयोगकी प्राप्ति मुश्किल है। बच्चोंकी तबीयत खराब होनेसे आपका मन परेशान रहेगा। मित्रों एवं बन्धु-बान्धवोंसे भेदभाव पैदा होकर मन मलीन होगा। परिश्रम काफी करनेमें समर्थ होंगे। नौकरी वालोंको चिन्तित रहना पड़ेगा।

कर्क—पूर्वार्ध उत्तम है। अपने व्यक्तिगत जीवनमें उल्लास उत्पन्न होगा। भाग्योन्नतिके मार्गकी बाधाएँ निवृत्त होंगी। विधानपक्षसे अनुकूलता मिलेगी। बुद्धिका विकास होगा। योजनाएं सफल होंगी। समाजमें मान-प्रतिष्ठा मिलेगी। जरूरी कार्य पूर्ण होंगे। उत्तरार्धमें चतुर्ग्रही योगके चतुर्थ होनेसे कष्ट होगा। मानसिक चिन्ताएँ पैदा होंगी। सन्तानपक्षसे उलझनें और विरोधकी आशंका रहेगी। महिलाओंके लिए यह मास खराब है।

सिंह—आपके व्यक्तित्वका विकास होगा। मित्रोंसे विशेष प्रसन्नता, और सर्विस वालोंको इच्छानुरूप परिस्थिति उपलब्ध होगी। गृह निर्माणकी योजना यदि बने तो प्रारम्भ कर दें, पूर्ति अवश्य होगी। मनोरंजन भ्रमण आदिके अवसर भी प्राप्त होंगे। मान-प्रतिष्ठा बढ़नेका अवसर है, विशेष पुरुषार्थसे धनार्जन भी कर सकेंगे।

कन्या—मासफल साधारण है। धनका

लाभ और खर्च दोनों ही प्रायः बराबर चलेंगे। प्रतिस्पर्धाओंमें विजय, यात्रा प्रवृत्तिकी अधिकता, धार्मिक विचारोंका अभ्युदय एवं बड़े लोगोंकी कृपा सुलभ होगी। महिलायें स्वास्थ्य एवं प्रसन्न रहेंगी। विद्यार्थियोंको अध्ययनमें सफलता मिलेगी। राजनीतिक पुरुष स्वास्थ्यमें पीड़ाका अनुभव करेंगे। भावी उन्नति एवं भावना शुद्धिके लिए सुन्दरकांडका पाठ चलते रहना चाहिये।

तुला—आपके विरोधी पराजित होंगे। आन्तरिक शक्ति वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी। विविध मार्गोंसे धनका लाभ, मनोबल में वृद्धि और परिस्थितियोंमें स्वल्प-सुधारका अनुभव होगा। विद्यार्थियोंका बौद्धिक विकास होगा। व्यापारियोंको प्रायः अपने व्यवसायमें नई पूंजी लगाना अथवा कोई भी परिवर्तन करना हानिकारक ही होगा। राजनीतिक पुरुषोंके समक्ष भारी व्यवधान उपस्थित हो सकता है—मंगलके शान्ति-निधान पर ध्यान देना चाहिये।

वृश्चिक—मासफल पूर्ण सुधारका सूचक है। उत्तम धन लाभ, श्रेष्ठ-सम्पर्ककी अधिकता, मित्रोंसे हर्ष, वाणिज्य-सिद्धि एवं उत्कृष्ट मनोरंजनमें रस लेंगे। राजनीतिसे संबंधित व्यक्ति सफलता प्राप्त करेंगे। उत्तरार्द्धमें बन्धु-बान्धवों एवं मित्रोंसे वैमनस्य बढ़ सकता है। स्वास्थ्य सुधारके निमित्त उदर-शुद्धि पर ध्यान दें। गल्ला और धातुके व्यापारियोंको लाभके निमित्त प्रयत्न करना चाहिये। विद्याव्यसनी लोग स्वाध्यायकी ओर आकर्षित होंगे।

धनुः—मान-प्रतिष्ठाकी अभिवृद्धि होगी। स्त्री-सौख्य उत्तम, व्यापारमें प्रगति, शत्रुओंका उपद्रव शान्त हो जायेगा। स्वास्थ्य साधारण रहेगा, औषधोपचारमें खर्च ज्यादा होगा। महिलायें एवं विद्यार्थीवर्ग परिश्रम अधिक करेंगे। दुःस्वप्न दर्शनकी अधिकता रहेगी, चतुर्थ सप्ताहमें भाग्योन्नतिका अवसर मिलेगा, स्वास्थ्य भी सुधर जायेगा। नित्य प्रातः सूर्य को जल-अर्घ्य, रात्रिमें नवार्ण मंत्रके जपका कार्यक्रम चलते रहना श्रेष्ठ फलद होगा।

मकर—मासफल मध्यम है, अत्यधिक कार्य व्यस्तता रहेगी। खर्चकी अधिकता रहेगी। स्वास्थ्य ढीला रहेगा। पत्नी अस्वस्थ रहेगी। अधीनस्थ कर्मचारियोंसे पीड़ा होगी। राज्यसत्ताधिकारियोंके सभी प्रयत्न सफल होंगे। पुरुषार्थ-बल पराक्रम बढ़कर अभीष्ट कार्योंमें सिद्धि मिलेगी। महिलाएँ क्रान्तिभावनासे सम्पन्न रहेंगी। कुछ आवश्यक यात्राएँ करनी पड़ेंगी। प्रयत्नसे शत्रु-कलह मिटेगा। लॉटरी और सट्टेकी रुचि भी लाभदायी हो सकती है।

कुम्भ—मासफल उत्तम है। प्रायः सभी दिशाओंसे अनुकूलता और व्यवसायमें श्रेष्ठ सफलता मिलेगी। धनलाभ बढ़ेगा, संचयमें रुचि लेंगे। स्वास्थ्य साधारण रहेगा। महिलायें अस्वस्थ रहेंगी। विद्यार्थियोंका सन्तुलन ठीक रहेगा। कदाचित् दुःस्वप्न दर्शन होंगे। सफलता पूर्वक योग क्षेमका निर्वाह होगा। आर्थिक विषमतायें दूर होंगी। श्रीयंत्रका नित्य पूजार्चन एवं श्रीदुर्गा कवचका नित्य पाठ चालू रक्खें तो ठीक रहेगा।

मीन—शारीरिक दृष्टिसे मासफल कष्ट-प्रद है। धनका व्यय बढ़ा हुआ रहेगा। भ्रमण

त्रैमासिक व्यापार दिग्दर्शन

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन]

श्रावण मास

श्रावणमें ५ शुक्रवार जनताको कष्टदायी, इस मासमें दक्षिणी वायु जोरसे चलते ही उ० प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में वर्षा ऐसे बन्द हो जाती है कि जैसे आती हुई ट्रेनको लाल झण्डी दिखा दी गई हो। इस मासमें उत्तर, पश्चिम एवं पश्चिमोत्तर कोण (वायव्य) की वायुसे अच्छी वर्षा उपर्युक्त क्षेत्रोंमें होती है। कृष्णा १ को ऐन्द्र योग प्रातः वैधृति योग सञ्चित तेलके बीज अन्नादिसे आगे **प्रथम भाद्रपद मास में अच्छा लाभ होगा परीक्षित चान्स है**। ६ जुलाईको प्रातः पुनर्वसौ रविः (पूभायां गुरुसे चरणवेध) चांदी तेज। आज ही शामसे कुम्भांशे शनि-राहु-भौम खाद्य वस्तुओंमें मन्दी लावेंगे। ता० ७ को गुरु वक्री बुध-गुरु दोनों ही वक्री शनि शीघ्री) बादल वर्षा वायुवेग, तेलके बीज, तेल, देशी घी गुड़ खांड सोना चांदी तांबा जस्ता पीतल रुई पाट रेशम कपड़ा हल्दी कालीमिर्चमें अच्छा मन्दा। सोना चांदी सभी धातुमें तेजी भी सम्भव। अफीम पोस्ता तेज होगा। ता० ६ को श्रावण मासमें सायं

में क्लेश और धनागारकी अपुष्टतासे असन्तुलन का अनुभव करेंगे। पत्नीको कोई न कोई पीड़ा बनी रहेगी। कुटुम्बीजनोंसे खेदका वातावरण दृष्टिगोचर होगा। मित्रों पर अधिक भरोसा करना उचित नहीं है। राजनीतिक पुरुषों, महिलाओं एवं विद्यार्थियोंका प्रयत्न सफल रहेगा। पूर्वार्धकी अपेक्षा इस मासका शुक्लपक्ष अधिक सन्तोषप्रद रहेगा।

पूर्वोदयी बुध विश्वमें भय, दुष्काण्ड प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। बादल वर्षा वायुवेग भी होगा। रुई पाट रेशम कालीमिर्चमें तेजीका उछाला, यहांसे ही वृषांशे गुरु-सूर्यसे ता० १२ तक तेल के बीजोंमें मन्दीका रियक्शन, दाल अन्न गुड़ खांड सोना चांदी सर्वधातुमें तेजी होगी। ता० १० को मृग. शुक्रसे ज्वार बाजरा मक्का गुड़ खांड तेज, गेहूँ चना सोना चांदी सर्वधातु तेलके बीज मन्दे करेगा। ता० ११ को शेयर्सके साथ सभी वस्तुयें मन्दी होंगी। ता० १३ को मार्गी बुधसे बादल वर्षा वायुवेग, चना मूंग दाल अन्न के साथ अन्य वस्तुयें भी मन्दी सम्भव। ता० ६ की शामसे चली लाइन आज विभिन्न बस्तुओं की बदलेगी। कृष्णा ८ शनिवारी परतः नवमी (शुक्ला ६ भी शनिवारी) होनेसे जनताको कष्ट, आश्विन मासके अन्तमें किसी नेताका पतन वा अवसान भी सम्भव है। कृष्णा ११ को कृत्तिका नक्षत्र सभी खाद्य वस्तुओंको तेज करेगा। ता० १६ को वक्री पूभायां गुरुको सूर्यका च० वेध ता० १८ तक सोना चांदी तांबा जस्ता पीतल अन्नादि तेज, तेलके बीज, रुई पाट रेशम कालीमिर्चमें मन्दा सम्भव। किन्तु मिथुने शुक्र शनि+बुध+सूर्य+शुक्र योग तेजी ही सभी वस्तुओंमें लावे आश्चर्य नहीं। सायं ३।४६ बजे मंगलवारमें श्री सूर्यदेव गत संक्रान्तिसे पांचवें वार व नक्षत्रमें (४५ मुहूर्ता) मंगलसे युक्त होकर कर्क राशिस्थ होंगे (आज वर्षा हो तो उत्तम) फलतः सोना चांदी तांबा जस्ता पीतल तेलके बीज गुड़ खांड

दाल अन्नादिमें तेजी लावेंगे, किन्तु रातको शून्य अंश पर सूर्य-हर्षल केन्द्रसे गुड़ खांडमें सरकारी नीतिसे मन्दा सम्भव, अन्य वस्तुयें तेज होंगी, नेताका पतन वा अवसान भी सुनाई देगा। ता० १७ को वर्षानाशक योग है—

"यदा अङ्गारको सिंहे तदा अङ्गारमयी मही" पूर्वोल्लिखित क्षेत्रोंमें भीषण ग्रीष्म प्रकोप साथ ही दक्षिणी एवं पूर्वी हिन्दमें महान् वर्षा भी लावेगा जो सभी वस्तुओंमें अस्थायी मन्दी का कारण होगी ! सफेदा चांदी सर्वधातु मन्दी होकर तेज होगी। ता० १८ को शेयर्स के साथ सभी वायदे तेज, रातको पूर्वोदयी शनिसे बादल वर्षा वायुवेग तेलके बीज रुई रेशम पाट कालीमिर्च अफीम पोस्तामें उछाला आकर मन्दा। सोना चांदी सर्वधातु गुड़ खांड दाल अन्नादिमें तेजी होगी। गुजराती श्रावण मासमें शुक्ला १ से भाद्रपद कृष्णा ३० पर्यन्त ५ शनिवार होनेसे मूंग तेलके बीज अन्नादि सोना चांदी तांबा जस्ता पीतल तेज, कहीं वर्षानाश तो कहीं जल प्रलय, किन्तु दक्षिण भारतमें घोर सङ्कट। कारण उधर आज ही चन्द्रोदय (१५ मुहूर्ता) उत्तर शृङ्गी ३.४ मासमें नरसंहार जीवोंके प्राणनाश भूकम्प, समुद्री-उफान जल-प्रलय प्रजा विग्रह युद्धादि काण्ड हड़ताल आन्दोलन निश्चित रूपसे प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। उत्तरी हिन्दमें द्वितीयाको रविवारा चन्द्रोदय ३० मुहूर्ता होगा। ता० २१ को १ बजे आर्द्रामें शुक्र वायुवेगसे घोर वर्षा, दक्षिण भारतमें जल-प्रलय, सिन्धु क्षेत्र कौशल कलिंग कच्छ गुजरात के साथ उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० भी प्रभावित हो सकेंगे। सभी वस्तुओंमें मन्दा भी लावेगा। ता० २२ को शुक्ला ४ का क्षय देशी घी मूंग दाल अन्न तेल के बीजोंमें अच्छी **तेजी लाने वाला परीक्षित योग है**। ता० २५ तुलसी जयन्ती (शुक्ला ७) को यदि उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में जहां भी दिन रात आठों प्रहर सूर्य-चन्द्रमा बादलोंमें ही रहें या बादलों मेंसे निकलें तो आगे उस क्षेत्रमें देवउठान तक समयानुकूल वर्षा होकर उपज भी निश्चित रूपसे श्रेष्ठ होगी। ता० २६ को १।४५ बजे पुनर्वसौ बुधसे चांदी तेलके बीज गुड़-खांड रुई रेशम पाट कालीमिर्च मन्दे, दाल अन्न तेज होंगे। शुक्ला १० को सूर्यका उदयास्त बादलों में न हो तो वर्षाकी आशा वृथा ही होगी। ता० २९ से कल तक वृषांशे गुरु-बुधसे बादल वर्षा सम्भव। रोहिणी ४ केतु रुई रेशम पाट काली-मिर्च, सर्व रस सभी वस्तुयें अन्नादिमें तेजी। मन्दीके झटकोंमें खरीदो ३१ जुलाईको पुनर्वसौ बुधका पूभायां वक्री गुरुसे च० वेध कल तक वर्षा होनेकी आशा है। ढाई बजे शेयर्सके साथ सभी वायदे तेज होंगे। १ अगस्तको ३ बजे उ०प्र० विदर्भ म०प्र० पंजाब राजस्थानमें श्रेष्ठ वर्षा होनेकी आशा है। दाल अन्न बिनौला तेज, अन्य सभी वस्तुयें सोना, चांदी सर्वधातु रुई रेशम पाट कालीमिर्च मन्दे होंगे। शुक्ला १४ की वृद्धि सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी करेगी। ता० २ को कर्के बुध चांदी दाल अन्न के भावोंको घटावेगा। श्रावणी पूर्णिमामें आधा पूर्वाषाढ़ा आधा श्रवण आधा संवत् होनेकी सूचना है। आज उपर्युक्त क्षेत्रोंमें बादल बूंदा-बांदी वर्षा होना आगे भी उत्तम वर्षाकी निशानी समझें। सार्पे रविका मघायां भौमसे च० बेध ६ अगस्तको २ बजे तक तेलके बीज गुड़ खांड चावल घी चना दाल अन्नादि तेज करेगा।

प्रथम भाद्रपद मास

४ अगस्तको शीघ्री पुष्ये बुध वर्षाकारक, शेयर्स सोना चांदी सर्वधातु तेलके बीज दाल अन्नादि मन्दे । ता० ५ को घोर वर्षा और तेजी सभी वस्तुओंमें । किन्तु कभी-कभी बुध मन्दी भी लाता है, यहाँसे चली लाइन ता० ८ को वदलेगी । ता० ६ को दो बजेसे मकरांशे राहु-सूर्य रुई पाट रेशम कालीमिर्चको मन्दा करेगा । ता० ७ को २।४५ बजेसे पूफायां भौमसे वर्षानाशक, शेयर्सके साथ सभी वस्तुओं में तेजी होगी, किन्तु ता० ८ को गुरु-राहु केन्द्र शेयर्स चांदीके साथ सभी वस्तुओंको मन्दा करेगा । ता० ९ को घटे भाव बढ़ सकेंगे । रात को कर्क राशिमें पुनर्वसौ शुक्रका पूभायां वक्री गुरुसे चरण बेध ता० १२ को ३ बजे तक सोना चांदी सर्वधातु तेज, रुई रेशम पाट कालीमिर्च खाद्य वस्तुयें एवं गुड़ खांड मन्दे होंगे । यहींसे कर्क राशिमें सूर्य+बुध+शुक्रयोग लेखारम्भमें लिखित क्षेत्रोंमें यदि वर्षा होगी तो यह दोनों योग खाद्य वस्तुओंमें मन्दा ही लावेंगे । ता० १० को १ बजे शुक्र-हर्षल केन्द्रसे सभी वायदे मन्दे, रातसे शीघ्री सार्पे बुधसे गुजरात सौराष्ट्र महाराष्ट्रकी ओर महान् वर्षा, जल प्रलय, तथा शी० पुनर्वसौ शनिसे दुर्भिक्षकारी (घोर तेजी) मेषांशे गुरु-शनि ता० ३१ तक रुई पाट रेशम कालीमिर्च सूत कपड़ा ज्वार बाजरा मक्का दाल अन्नादिमें तेजी, सोना-चांदी सर्व धातुमें कोई चाल, तेलके बीज मन्दे भी हो सकेंगे । किन्तु बाजारकी चाल भी देखिये । ता० ११ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी रविवारी सभी वस्तुओंमें तेजीकारक, किन्तु यदि अच्छी वर्षा पहले ही ला चुकी हो तो मन्दा भी हो सकेगा । ता० १२ को ३ बजेसे पुष्ये शुक्रसे जमाखोरोंकी धर पकड़से अच्छा मन्दा सभी वस्तुओंमें होगा । किन्तु रुई पाट रेशम कालीमिर्चमें तेजी होगी । ता० १४ को शनि+चन्द्र योग कल तक तेलके बीज शेयर्स तेज करेगा । ता० १६ को कृष्णा तिथि १४ का क्षय सभी वस्तुओंको मन्दा करेगा । आज ही रातको सिंहे सूर्य होते ही शनि दृष्ट सूर्य+भौम योग का गुरुसे प्रतियोग सभी वस्तुओंमें मन्दीका झटका, ता० १७ को सिंहे बुध होकर भौम+सूर्य+बुध योग सभी वस्तुओंमें तेजी लावेगा, किन्तु यदि दो दिन बाद अच्छी वर्षा होगी तो खाद्य वस्तुयें मन्दी, सभी धातुमें तेजी ही होगी । सायं ३।४१ बजे सूर्य बुधकी बहिर्युति एवं शनैश्चरी अमावस तेजी लावेगी । यहाँसे एक मासमें पूर्वी वायु जोरसे चलते ही उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में अच्छी वर्षा होगी । गुजराती भाद्रपद मास (मल मास) में ५ रविवार तेलके बीज दाल अन्नादि घी तेल चावल रुई पाट कालीमिर्चको मन्दा करेंगे । ता० १९ को नेपच्यून मार्गी वर्षा और सभी वस्तुओंमें मन्दी लावेगा । सायं सोमवारा (४५ मुहूर्ता) उत्तर शृङ्गी चन्द्रोदय कल भी सभी वस्तुओंको मन्दा करेगा । ता० २१ को २ बजे भौम-राहु केन्द्रसे महान् दुष्काण्ड, शेयर्स के साथ सभी वस्तुयें मन्दी होंगी । ता० २३ को १ बजे सार्पे शुक्र (मघायां बुधसे चरण बेध आज ही रात तक) से घोर वर्षा दाल अन्न तेलके बीज सोना पाट रुई रेशम मन्दे, चांदी तेज होगी । आज ही सायं ५ ३० बजे भौमास्त पश्चिमे घोर बादल वर्षा वायुवेग, स्वर्णकार यवन ब्लैक मार्केटर्स चोर डाकू पर सङ्कट, गुजरात सौराष्ट्र महाराष्ट्रकी ओर जल प्रलय का अन्देशा है । प्रायः चारा भूसा ग्वार जई

खली तुच्छ धान्य पाट रुई रेशम कालीमिर्च सोना चांदी सर्वधातुमें मन्दा, तेलके बीज दाल अन्न गुड़ खांड लालमिर्चमें अच्छी तेजी लावे तो आश्चर्य नहीं, किन्तु बाजारका रुख अवश्य ही देखना चाहिये। ता० १६ को चली लाइन बदल भी सकेगी। ता० २८ को मन्दी वस्तुयें खरीदो, सायंसे उफायां भौम सभी वस्तुयें तेज करेगा। ता० २६ को अगस्योदय सायं ४।५२ बजे होगा, यदि बादलोंका मण्डान हो तो घोर वर्षा। खुला रहे तो तेजी होगी। किन्तु ६ अगस्तकी चली व्यापारिक लाइन आज बदल भी सकेगी। ता० ३० की रातमें ७।४६ बजे पूफायां रविमें यदि लेखारम्भमें लिखित क्षेत्रों में १५ दिनमें पूर्वी वायु जोरसे चलेगी तो वर्षा भी जोरसे होगी। किन्तु सूर्य राशिसे आज छठा चन्द्रमा सभी खाद्य वस्तुओंमें अवश्य ही अच्छी तेजीका सूचन करता है। रातको सूर्य-नेपच्यून केन्द्र तेलके बीज चना कल तेज करेगा। ता० ३१ को अस्त बुधसे शुक्रकी युति से घोर वर्षा और तेजी होनेकी आशा है। १ सितम्बरको पश्चिमोदयी बुधसे सर्वत्र महान् वर्षा और सभी वस्तुओंमें अच्छा मन्दा ला सकेगा। अथवा वस्तुओंकी पहलेसे चलती तेजी-मन्दीमें परिवर्तन होगी। मीनांशे (जलांश) गुरु-शुक्र ता० ३ को सवेरे तक बादल वर्षा और मन्दा होगा।

द्वितीय भाद्रपद मास

ता० २ सितम्बरको १२ बजे कन्यायां बुध, रातको कन्यायां भौम होकर मंगल+बुध योग साथ ही शनिसे केन्द्र योग रुई रेशम पाट कालीमिर्च तेज, अन्य वस्तुओंमें खतरनाक तूफानी चाल देगा। मल मासमें भौमका राशि परिवर्तन महान् वर्षा तो कहीं जल-प्रलयसे त्राहि-त्राहि करा देगा। संवत् २०१८ में यह योग गुरु दृष्ट था तो तेलके बीज दाल अन्नादि में मन्दा, सोना चांदी सर्वधातुमें तेजी निकली थी, किन्तु यहां बाजारकी चाल देखकर व्यापार करें। ता० ३ को सवेरे शनि दृष्ट सिंहे शुक्रका सूर्यसे योग गुरुसे प्रतियोग सभी वस्तुओंमें विचित्र चाल, सोना तेज होगा। ता० ६ को सूर्य-गुरु दृष्टिसे सभी वायदे मन्दे, रातको ७ बजेसे मीनांशे गुरु-बुध ता० ८ तक बादल वर्षा योग साथ ही उफायां बुधको पुनर्वसौ शनिका चरण वेध तेलके बीज दाल अन्न चावल तेज करेगा। ता० ७ की रातको सूर्य-राहु केन्द्र कल सभी वस्तुओंमें शेयर्स समेत अच्छा मन्दा होगा। ता० १०।११ को शनि+चन्द्र योग तेलके बीज तेज करेगा। ता० १३ से मीनांशे गुरु-भौम ता० १७ तक गुड़ खांड चांदी सोना तेलके बीज तेज करेंगे। ता० १४ को शीघ्री पूफायां शुक्रसे बादल वर्षा, सभी वस्तुओंमें मन्दा लावेगा। ता० १६ की रातको सोमवारमें श्री सूर्यदेव, बुध मंगल-चन्द्रसे योग करते हुये (चतुर्ग्रही) कन्या राशिस्थ होंगे, फलतः राजकीय अङ्कुश से सभी खाद्य वस्तुओंमें अच्छा मन्दा, चांदी सोना सर्वधातुमें तेजी होगी। यहांसे १ मासमें (ईशानकोण पूर्वोत्तरकी वायु पूर्वोक्त क्षेत्रोंमें चलने पर अच्छी वर्षा होती रहेगी। अग्नि कोण अर्थात् दक्षिण पूर्वकी वायु चलने पर घोर गर्मी होने पर भी वर्षा नहीं हो पाती। ता० १७ को ३ बजे चित्रा बुधसे सभी वस्तुयें मन्दी, ता० १८ को बुध-शुक्र क्रान्तिसाम्यसे वर्षा और खाद्य वस्तुयें मन्दी, किन्तु आज ही हस्ते भौम वर्षानाश और तेजीकारक है। आज से ता० २१ तक उ०प्र० पंजाब राजस्थान

म०प्र० में यदि बादल वर्षा होगी तो उत्तम मन्दा, खुला रहे तो घोर तेजी होगी। ता० २० को शुक्र-राहु केन्द्रसे शेयर्स के साथ सभी वस्तुयें मन्दी, किन्तु पुनर्वसौ शनिको उफायां रविका चरण वेध ता० २३ तक रुई कपास बिनौला ज्वार सोना चांदी सर्वधातुमें तेजी लावेगा। शुक्ला ५ को विशाखा नक्षत्रमें यदि उपर्युक्त क्षेत्रोंमें बादल वर्षा हो तो घोर मन्दा, अन्यथा घोर तेजी होगी। ४ मास तक रुई कपास कालीमिर्च पाटसे लाभ होगा। शुक्ला ६ को अनुराधा नक्षत्रमें भी वर्षा हो तो मन्दा अन्यथा तेजी होगी। यही परीक्षा करते हुये खाद्य वस्तुओंके व्यापारसे अच्छा लाभ होगा, परीक्षित चान्स है। ता० २१ को सूर्यसे मंगल आगे रहते हुये शीघ्र गतिमें आजानेसे वर्षा निश्चित रूपसे यहां श्रेष्ठ होगी। इस वर्षकी वर्षाऋतुमें सूर्यसे आगे **मं.** होनेसे वर्षाकी कमी रखते हुये भी खेतीको उत्तम बना देगा। ता० २२ को तुलायां बुध होकर शीघ्री भौमसे सूर्यका योग सोना चांदी सर्वधातु लाल व कालीमिर्च रुई पाट रेशम तेज, तेलके बीज भी तेज हो सकेंगे। ता० २३ को शुक्ला ८ सोमवारी मूल नक्षत्र संयोगी सोना चांदी सर्वधातु चना बिनौला देशी घी तेलके बीज गुड़ खांड रुई कपास पाट लाल व कालीमिर्च को **३ या ५ मासमें विशेष तेज करेगा, परीक्षित योग है।** रातसे मीनांशे गुरु-सूर्य ता० २६ तक तेलके बीज मन्दे, गुड़ खांड सोना चांदी सर्वधातुको तेज करेंगे, किन्तु बृषांशे शनि-भौम ता० २८ तक सभी वस्तुयें तेज कर सकेंगे। ता० २७ को हस्ते रविमें वर्षा होनेकी आशा है। ढाई बजे कन्यांमें शुक्र होकर भौम+शुक्र+सूर्य योगमें वर्षा होते ही तेलके बीजोंके साथ चांदी चावल घी दाल अन्न भी मन्दे होंगे, तो २८ स्वात्यां बुध भी मन्दी कारक है। १ अक्टोबर को स्वात्यां बुधका शत० वक्री गुरुसे चरणवेध २।३९ बजेसे ता० ५ तक बादल वर्षा करेगा। तेलके बीज मन्दे, सोना चांदी सर्वधातु तेज हो सकेगी। भाद्रपदी पूर्णिमाको यदि वर्षा या बादल रहें तो तेलके बीज अन्नादिको बेचना चाहिये। घोर वर्षा होने पर पूर्वोक्त क्षेत्रोंमें रोगोपद्रव अवश्य ही होता है। आकाश निर्मल रहे तो आश्विन मासमें तेजी ही होगी।

आश्विन मास

इस मासमें ५ बुधवार होनेसे सोना चांदी सर्वधातु साग सब्जी आलू प्याज लहसुन अदरख सोंठ हल्दी तेलके बीज गुड़ खांड दाल अन्नादि में खतरनाक तेजी और जनता व व्यापारी एवं शासकोंको महान् कष्ट होंगें। ५ अक्टोबर को शी० हस्ते शुक्रसे सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी, कुम्भांशे गुरु-बुध ता० १० तक बादल वर्षा सम्भव है। **ता०** ७ से ता० ९ तक शनि+चन्द्र योगसे तेलके बीज तेज। ता० ८ को सायं से चित्रामें भौमसे सामयिक रोगोपद्रव सभी वस्तुओंमें घोर तेजी, लालमिर्च विशेष तेज होगी। ता० ११ को तिथि क्षय, भौम-शनि केन्द्रसे महान् दुष्काण्ड, साथ ही सभी वस्तुओं में जबर्दस्त तेजी-मन्दा प्रत्यक्ष दिखाई देगा। नेताओंका पतन अथवा अवसान भी सम्भव है। ता० १३ को सायं गुरु दृष्ट वक्री बुध (गुरु बुध दोनों वक्री) बादल वर्षा वायुवेग, शीतवृद्धि सोना चांदी सर्वधातु गुड़ खांडकिराना औषधियां तेज। तेलके बीज मक्का अन्नदि मन्दे करेगा। रातसे मंगल+सूर्य+शुक्र+चन्द्र

चतुर्ग्रही औत्पातिक है। कृष्णा ३० मंगलवारी तुरन्त अथवा ३।४ मास तक ऐसी खतरनाक तेजी होगी कि कमाल होगा। अन्यथा समय तो बता ही देगा, **अविश्वासियोंको चुनौती है।** गुजराती आश्विन मास, आश्विन शुक्ला १ से दीपावली पर्यन्त ५ बुधवार होनेसे लाल वस्तुयें लालमिर्च, लाल रंग, सोना तांबा अलसी, गुड़ खांड लाल सरसों चना मसूर तूअर मटर (बटला) तेज करेंगे। शुक्ला १ बुधवारी साग सब्जी आलू प्याज लहसुन हल्दी अदरख सोंठ किराना आदि तेज, शुक्ल पक्षमें तीन बुधवार भी विशेष रूपसे समर्थक हैं, किन्तु चलती लाइनका व्यापार करें। ता० १६ को शीघ्री चित्रामें शुक्रसे दाल अन्नादि तेज। गुजरात कच्छ काठियावाड़ बम्बईकी ओर वर्षा श्रेष्ठ, यान दुर्घटना भी सम्भव है। आज ही सवेरे प्रतिपदाको कन्याराशि चित्रा नक्षत्र (धूलिद्वार) राक्षसगण तीसरे मण्डलमें शुक्र अस्त होनेसे वैद्य डाक्टर राष्ट्रप्रमुख श्रेष्ठ व्यापारी वर्गको पीड़ा, वर्षानाश (तेजी) भारतमें कहीं विग्रह हड़ताल आन्दोलन, मालवा सिन्धमें अकाल तथा पश्चिमी प्रदेशोंमें महोत्पात दुर्भिक्ष करेगा। मात्र तीसरे मण्डलमें अस्त होनेसे सुभिक्षकारी माना गया है, तो आश्विन मासमें अस्त हुआ शुक्र कभी मन्दा तो कभी घोर तेजी लाता है। दक्षिण क्रान्ति-दक्षिण शर मध्यमार्ग अजवीथी में अस्त तेजीकारक होगा। शुक्रके अस्तोदय कालमें नोट सिक्का स्टाम्पमें भी परिवर्तन होता है। रातसे कुम्भांशे गुरु-बुध ता० २१ को मध्याह्न पर्यन्त लेखारम्भ उल्लिखित क्षेत्रोंमें यदि वर्षा होगी तो सभी वस्तुयें मन्दी अन्यथा तेज होगी। ता० १७ अक्टोबरको मध्याह्नमें बुध चन्द्रसे युक्त गुरु दृष्ट होकर श्री सूर्यदेव तुला राशिस्थ होंगे। फलतः दोतर्फा घटाबढ़ी चलते तेजीकी प्रधानता रहेगी। किन्तु सायं गुरुवारा (४५ मुहूर्ता) उत्तर शृङ्गी चन्द्रोदय सभी वस्तुओंमें अच्छी मन्दी लाने वाला योग है। रातको शुक्र-शनि केन्द्र कल अच्छा मन्दा ला सकेगा। ता० १८ को रातमें ७ बजे तुला. भौम होकर गुरु दृष्ट बुध+सूर्य+शी० भौम योगसे सोना चांदी सर्वधातुमें मन्दा। रुई रेशम पाट कालीमिर्च तेलके बीज तेज कर सकेगा, किन्तु यहां शुक्रास्तका फल बलवान् है अतः चलती लाइनका व्यापार करें। ता० १९ को ढाई बजे वक्री हुआ बुध अस्त होगा, यदि बादल वर्षा करे तो मन्दा सम्भव, अन्यथा तेजी, किन्तु ता० १६ को चली वस्तुओंकी लाइनको आज बदल देगा। यहांसे मंगल-शुक्र बुध तीन ग्रह अस्त चलेंगे। ता० २१ से वक्री स्वात्यां बुधका वक्री शत. गुरुसे चरण वेध ता० २३ तक बादल वर्षा होते ही खाद्य वस्तुयें मन्दी, सोना चांदी सर्वधातुमें तेजी चमकेगी। ।५१ बजे गुरु दृष्ट तुलामें शुक्र होकर सूर्य+ मंगल+बुध+शुक्र योग तुला राशिमें बनेगा जिससे विचित्र चाल निकलेगी। ता० २२ को सूर्य-हर्षल युतिसे महान् दुष्काण्ड, वर्षा ओला आदिसे शीतकी वृद्धि होगी। दुर्गाष्टमी बुधवारीसे खाद्य वस्तुयें मन्दी, देशी घीके संग्रहसे आगे कार्तिक मासमें अच्छा लाभ होगा। ता० २५ को सूर्य-बुधकी अन्तर्युति कभी-कभी १ सप्ताह पूर्वसे अच्छी मन्दी लाती है। ता० २६ को भौम-हर्षल युतिसे महान् दुष्काण्ड, शेयर्स सोना-चांदीके साथ सभी वायदे मन्दे होंगे। रातको शीघ्री स्वात्यां शुक्रसे गुड़ खांड तेज, तेलके बीज लालमिर्च सुपारी सोना चांदी सर्वधातु गेहूं मक्का उड़द मूँग दाल अन्नादि

मन्दे। मारवाड़में भी वर्षाकी सम्भावना है। शुक्ला ११ शनिवारी होनेसे किसी देशका पतन, लूटमार, शत्रुओं द्वारा कष्ट, दुर्भिक्ष भय होगा। ता० २७ को १।११ बजेसे स्वात्यां रविका वक्री गुरुसे चरण वेध एवं रोहिणीमें केतु से भी चरण वेध ता० ३० तक तेलके बीज दाल अन्न सोना रुई पाट रेशम कालीमिर्च मन्दे। किन्तु रातको गुरु-नेपच्यून केन्द्र (महान् योग) **सभी वस्तुओंमें जबरदस्त तेजी या मन्दी की चाल देगा**। सचेत ! ता० २९ को शी० स्वात्यां शुक्रका वक्री शत. गुरुसे चरण वेध ३ बजे बादल वर्षा, साथ ही शुक्रको केतुका चरण वेध ता० ३१ तक सभी वस्तुओंमें तूफानी चाल, बाजारका प्रसङ्ग देखिये। ता० ३० की रातमें कुम्भांशे गुरु-सूर्य २ नवम्बर तक तेलके बीज चना मन्दे, गुड़ खांडमें तेजी होगी। ३१ अक्टोबरको सवेरे गुरु दृष्ट शनि वक्री बादल वर्षा वायुवेग या शीतवृद्धि महोत्पात। सभी वस्तुओं में तूफानी तेजी या मन्दा चल पड़ेगा।

नोट :—लाभ-हानिका पूर्ण उत्तर दायित्व प्रयोक्ता महोदय अपने ही ऊपर जानकर बाजार की स्थितिको देखते हुये अपनी शक्तिके ही अनुकूल कार्य करें।

पता—११८ कटरा, मैनपुरी उ०प्र०

श्रीशंकर व्यापार-भविष्य

(ता० ५ जुलाई से ३१ अक्तूबर सन् १९७४ ई० तक)

[लेखक :- श्री शिवचरण लाल शर्मा रमलाचार्य]

श्रावण मास

श्रावण सुदी प्रतिपदाको शनिवारा चन्द्र दर्शन हुआ है, अतः जलका सूखना व प्रजाका नाश और दक्षिणमें मन्त्रिमण्डल भंग हो।

चांस चांदी पुराना सिक्का धातु पदार्थ—रिपोर्ट लिखते समय चांदी १२५०) रु० पुराना सिक्का १३२०) १३२५) रु० दिल्ली सराफा बाजार भाव चल रहा है। उपरोक्त भावसे ऊँचा भाव बननेकी आशा नहीं है। अतः जब भी उछाला आवे व्यापारी बन्धु बेचान कर व्यापार मन्दीका बढ़ाते रहें। इस वर्ष चांदी नीचा भाव ९००) ९२०) बन जाना सम्भव है। ता० ५ जुलाईसे गुरु वक्री हो गये हैं अतः आज ८ दिनकी तेजी लगादो। किन्तु, यह तेजी स्थिर नहीं है। व्यापारी बन्धु सप्ताहान्त तक तेजीसे निकल जायें।

स्वर्ण—रिपोर्ट लिखते समय स्वर्णका भाव ६८०)६९०) रु० का भाव चल रहा है। स्वर्ण पर ध्यान मन्दीका है। स्वर्ण दीपावली तक नीचा भाव ५५०)५६०) रु० बन जाना सम्भव है। उपरोक्त आंकड़ोंसे कम अधिक भी लाइन चल सकती है।

पाट जूट बारदाना—जूट बारदानाके व्यापारी मन्दीसे निकल जायें। ता० ५ से ८ जुलाई तक यथाशक्ति स्टाक कर लें। ता० २ अगस्त तक तेजी खेलने वाले व्यापारी माल कमायेंगे। मंगलका रथ सूर्यसे आगे चल रहा है, अतः वर्षाका अभाव रहेगा। सम्भव है यत्र-तत्र भयानक दुर्भिक्ष पड़े। भारत सरकारकी खाद्य-नीति असफल प्रमाणित होगी।

किराणा—ता० ५ जुलाईसे हल्दी धनियां जीरा लालमिर्च कालीमिर्च सौंफ मैथी अजवायनका स्टाक कर लो, मेरा ध्यान वस्तु मात्र पर तेजीका है। पोस्ता बीज रामदाना कूट सिंघाड़ा अमचूर इमली लवंग सौंठ पर आई तेजी स्टाक निकालो। ता० १५ जुलाईसे इन वस्तुओंमें मन्दीका संचार होगा।

खुश्क मेवा—काजू अखरोट छुहारा आलूबुखारा चिलगोजामें पूरा महीना मन्दीका सूचक है। खुश्क गोला, हरा नारियल, किसमिस बादाम पिश्ता खरीदो, पूरा महीना अच्छी तेजी बनेगी।

रुई कपास—ता० ५ जुलाईसे ३ अगस्त तक रुई पर ४०)५०) रु० की तेजी बनेगी।

मिल शेयर्स—ता० ५ जुलाईसे ७ जून तक सेंचुरी डिफर्ड डी०सी०एम० व सूती रेशमी धागा व टाटा, हिन्द मोटर्स इन्डियन आयरन यथाशक्ति खरीदो। महीनेके अन्त तक तेजी खेलने वाले व्यापारी माल कमायेंगे।

वस्तु मात्र पर फलित स्पेशल चान्स—ता० ५ जुलाईसे ३ अगस्त तक—

चांस चांदी—ता० ५ जुलाईसे खरीदो, ९ जुलाई तक रुख तेजीका रहेगा।

चांस जूट पाट वारदाना—ता० ६ जुलाई से ८ जुलाई तक खरीदो १७ जुलाई तक घट-बढसे तेजी प्रधान रहेगी।

चांस गुड़ खांड चीनी—उत्तर प्रदेश व पंजाबकी कई मण्डियोंमें गुड़ व्यापार वायदा का प्रचलन है। लुधियाना मण्डी भाव रिपोर्ट लिखते समय २२) रु० २० कि० भाव चल रहा है। गुड़ पर मेरा ध्यान वायदा एवं हाजिरमें तेजीका है। महीनेके अन्त तक गुड़ वायदेमें ३२)३४) रु० भाव बन जाना सम्भव है। इस वर्ष गुड़ खांड चीनी पर मेरा ध्यान विशेष तेजीका है। वर्षाॠतुमें वर्षाका अभाव रहेगा। खूनी क्रान्तिकी सम्भावना है। अतः मेरा परामर्श है कि गुड़ खांडका स्टाक कर लो भविष्यमें माल कमा लोगे।

चांस तिलहन तेलवीयां—रिपोर्ट लिखते समय अरन्डा बम्बई वायदा २३०)२३५) रु०। तेल मूंगफली ८२)८३) रु०। सरसों ६०) ६१) रु०। सरकी विनौला १५०)१४८) रु० भाव चल रहा है। तेलवीयां पर मेरा ध्यान बहुत अधिक तेजीका है। उपरोक्त भावोंसे नीचा भाव महीनेके अन्त तक नहीं बनेगा। अरन्डा ऊंचेमें २७५)२८०) सरसों ७५)७८) सरकी (विनौला) १६५)१७०) रु० तेल मूंगफली ९०) ९२) रु० भाव बन जाना सम्भव है। उपरोक्त आंकड़ोंसे कम अधिक भी लाइन चल सकती है। किन्तु साबुनी तेलों महुआ नीम करन्जी चर्वी धान छिलका तेल पर तूफानी मन्दीका संचार १५ जुलाईसे होगा। मार्केट टूटता जावेगा। अधिक तेजी तेल गोला रमतिल्ली तिल्ली पर आयेगी।

चांस धान्यादि दालवाना—महीनेके प्रारम्भसे गेहूं चावल जौ चना उड़द मूंग तूअर मौठ मसूर मटराका यथाशक्ति स्टाक कर लो। महीनेके अन्त तक गेहूंमें १०)१५) रु०। चना में ८)१०) रु०। चावल जौमें १०)१५) रु०। उड़द मूंग मटरामें १२)१५)२०) रु० तक, तूअर (अरहर) मोठ एरंड मसूरमें ८)१०)१२) रु० की तेजी महीनेके अन्त तक बनेगी। बाजरा, जुवारी, मक्कीके मार्केट समान रहेंगे या ४)६) रु० की ही तेजी बनेगी।

चांस रुई कपास—पूरा महीना घटबढ़से तेजी प्रधान रहेगी।

चांस गुड़ खांड चीनी—ता० ६ जुलाईसे खरीदो, अथवा ८ दिनकी तेजी लगादो माल कमा लोगे।

चांस तिलहन तेलबीयां—ता० १० जुलाई से यथाशक्ति खरीदो, १८ जुलाई तक तूफानी तेजी प्रत्येक तेलबीयाँमें बनेंगी।

बम्बई वरली मटका ग्रहयोग आंकड़ों द्वारा ता० ५ जुलाई ८८।१२।७३, जोड़ भाव ता० ६ जुलाई ३।५।६, ओपन १०।६।१, क्लोज, १२ जुलाई ५ या समान ८ क्लोज। ता० १६ जुलाई ३।४।५।१ क्लोज, ता० १८ जुलाई २ से ६ या ६ से २ ओपन टू क्लोज, ता० १६ जुलाई ३ या समान ओपन, । ०।४।६ क्लोज। २६ जुलाई ५।१०।१ ओपिन २६ जुलाई ४ से ३ या १० से २ या ६ क्लोज।

प्रथम भाद्रपद मास ता० ४ अगस्तसे १ सितम्बर १९७४ तक-भाद्रों सुदी तृतीया ३ मंगलवारको उत्तराफाल्गुणी नक्षत्र है। अतः बड़े-बड़े बादलोंसे भी वर्षा नहीं होवे अर्थात् अनावृष्टि हो।

आगे मंगल पीछे भान वर्षा हो ओस समान

धान्यादि दालवाना–गत मासकी बनी लाइन प्रत्येक धान्यादि दालवाना पर तेजीकी चाल है, अतः महीनेके प्रारम्भसे गेहूँ चना चावल उड़द मूंग मटरमें अच्छी तेजी चलेगी। तूअर बाजरा जुवारी मक्की पर महीनेके प्रारम्भमें ५)७)१० रु० की तेजी आवेगी, किन्तु यह तेजी स्थिर नहीं है, व्यापारी बन्धु महीनेके अन्त तक शनैः शनैः तेजीसे निकल जायें।

गुड़ खांड चीनी–प्रथम भाद्रपद मास गुड़ खांड रसादिक पदार्थोंमें तेजीका सूचक है।

किराणा—लाख चपड़ा लालमिर्च जीरा मैथी, अजवाइन सैंधा नमक अमचूर इमली लवंग आदिमें आई मन्दी स्टाक करलो पूरा महीना रुख तेजीका रहेगा। पोस्ता सौंठ साबूदाना सौंफ कालीमिर्च रामदाना सिंघाड़ा कुट्टू में आई तेजी स्टाक निकाल दो, महीनेके अन्त तक रुख मन्दीका रहेगा।

चांदी पुराना सिक्का धातु पदार्थ—ता० ४ से ६ अगस्त तक जब भी उछाला आये बेचान करते रहो, पूरा महीना तूफानी मंदी बनेगी। बीच-बीचमें बतौर रियक्सन तेजी आती रहेगी।

स्वर्ण—ता० ४ से ६ अगस्त तक खरीदो, महीनेके अन्त तक घटबढ़से तेजी प्रधान रहेगी।

रुई कपास—ता० ४ अगस्तसे खरीदो, ता० ३० अगस्त तक घटबढ़से तेजी प्रधान रहेगी।

पाट जूट बारदाना–४ अगस्तसे जब भी तेजी बने बेचान करो, अथवा महीनेकी मन्दी लगादो। मन्दी खेलने वाले व्यापारी माल कमायेंगे। ता० ४ से १३ अगस्त तक तूफानी मन्दी बनेगी।

द्वितीय भाद्रपद मास

ता० २ सितम्बरसे १ अक्तूबर १९७४ तक।

पाट जूट बारदाना—ता० २ सितम्बर खुलते बाजारसे खरीदो अथवा ८ दिनकी तेजी लगादो, माल कमा लोगे।

रुई कपास ता० २ सितम्बरसे आई तेजी बेचो, ता० १७ सितम्बर तक ४०)५०) रु० मन्दी बनेगी।

गुड़ खांड चीनी—ता० २ से १७ सितम्बर तक गुड़में ५)१०) रु०, शक्कर व चीनीमें १५)२५) रु० की एक बार अच्छी मन्दी बनेगी। इस आई मन्दीमें खरीदो, १ अक्टूबर तक घटाबढ़ीसे ५)१०) रु० की तेजी बनेगी।

हाजिर व्यापार तिलहन तेलबीयां अरण्डा अलसीमें १०)१५) रु० तेल मूंगफली बिनौला (सरकी) व सरसोंमें ५)७)८) रु० की, तिल्लो व गोला तेलमें २०)२५) रु०, महुआ नीम करन्जी धान छिलका तेलमें ३०)४०)५०) रु० तक मन्दी ता० ७ सितम्बरसे २० सितम्बर तक बन जाना सम्भव है। इस मन्दीमें खरीदो। ता० २० से १ अक्टूबर तक बतौर रियक्सन तेजी बनेगी।

धान्यादि दालवाना—ता० २ सितम्बरसे मक्का बाजरा चावल जुवारी खुत्ती (ग्वारा) राजमाष, लोवियामें १५)२०)२५) रु० की मन्दी इस महीनेमें बन जाना सम्भव है। गेहूँ चणा मटरा मूंग उड़द व तूअर मौठ मसूर मार्केटमें प्रथम ५)१०) रु० की मन्दी आकर १७ सितम्बर तक पुनः मार्केट सुधर जायेगा। महीनेके अन्त पर साधारण तेजी बनेगी। राजमाष पर तूफानी मन्दी बनेगी।

चांस चांदी—ता० १३ सितम्बरसे जब भी तेजी बने बेचो, १ अक्टूबर तक मार्केट उछल-उछल कर टूटेगा।

किराणा—धनियां मैथी सौंठ लालमिर्च सौंफ कालीमिर्च पोस्ता दाना कूट्ट सिंघाड़ा रामदाना छोटी-बड़ी इलायची साबूदाना महीनेके प्रारम्भ तक बेचो, १ अक्टूबर तक जनरल रुख मन्दीका रहेगा। हल्दी, सांभर नमक, अमचूर अजवायन जीरा ता. २ सितम्बर से १७ तक आई मन्दी खरीदो, १ अक्टूबर तक घटबढ़से तेजी प्रधान रहेगी।

खुश्क मेवा—काजू पिस्ता अखरोट किस-मिस बादाममें २ सितम्बरसे १७ तक मन्दी, १७से १ अक्टूबर तक रुख तेजीका रहेगा।

मिल शेयर्स—सैंचुरी डी०सी०एम० व रेशमी सूती धागा आदिमें २ सितम्बरसे १ अक्टूबर तक जनरल रुख मन्दीका बनेगा, यत्र-तत्र वर्षाका योग सम्पन्न होगा।

स्वर्ण–ता० २ सितम्बरसे आई मन्दी खरीदो। १ अक्टूबर तक ३०)४०) की मन्दी आकर २०)३०) की महीनेके अन्त तक तेजी।

वायदा हल्दी सांगली–ता० २ सितम्बर को बेचो। ता० ९ सितम्बर तक मार्केट उछल-उछल कर टूटेगा।

वायदा कालीमिर्च कोचीन–ता० १० सि० को बेचो, १७ सितम्बर तक मन्दी बनेगी। १७ से २३ सितम्बर तक रुख तेजीका रहेगा।

आश्विन मास

ता० २ से ३१ अक्तूबर १९७४ ई०

ग्रह योगायोग समीक्षा—ता० १३ अक्टू० को बुध वक्री होकर ता० १५ को अस्त हो गया है। ता० १४ अक्टूबरको सूर्य मंगलकी अंशात्मक युति बनी है। आज ही शुक्रास्त हुआ है। उपरोक्त भांतिके योग वर्षमें सिर्फ एक या दो बार ही आते हैं, यहांसे अलसी अरण्डा में २५)३०) रु०, तेल मूंगफली बिनौला

(सरकी) व सरसोंमें ८)१०)१२) रु० की, करड़ी व तिल्लीमें १५)२०) रु०, चांदीमें ८०)१००) रु०, सोनेमें ४०)५०) रु०, पाट जूट बारदाना एवं गुड़ खांड चीनीमें १५)२०) २५) रु० की व प्रत्येक धान्यादि दालवानामें १५) से २५।३०। रु की लाइन इकतरफा चलेगी। निर्धन व्यापारी भी कमाई कर लेंगे। यत्र-तत्र-सर्वत्र बादल वर्षाका योग सम्पन्न होकर सुभिक्ष होगा। किन्तु यूरोपकी स्थिति शोचनीय बनेगी। खूनी क्रान्ति भी हो सकती है। वक्री बुधके साथ शुक्रका अस्त होना वस्तु मात्रमें मन्दीका तूफान मचा देगा। ता० २८ अक्टूबरको सूर्य मंगल युति गुड़ खांड चीनीमें यहां तक आई तेजीमें ब्रेक लगा देगी। अक्टू० का महीना व्यापार दृष्टिसे अधिक महत्वपूर्ण है। ता० २४ अक्टूबरको सूर्यने राहु केतु गुरुसे वेध किया है और आज ही मंगल शुक्रकी अंशात्मक युति बनी है। ता० २५ अक्टूबरको सूर्य बुधकी अंशात्मक युति, शुक्र हर्षलकी युति, ता० २६ को मंगल हर्षल व बुध शुक्र व मंगल बुध व बुध हर्षलकी युति बनी है जो कि प्रत्येक धान्यादि दालवाना गुड़ खांड चीनी रुई कपास किराणा तिलहन तेलबीयां चांदी पाट जूट बारदाना सोनामें मन्दीका तूफान मचा देंगे। ३० अक्टूबरको बुधोदय, ता० ३१ अक्टूबरको शनि वक्री हो गया है, यहांसे पुनः तेजीका संचार होगा। धातु पदार्थोंमें तेजी बनेगी।

चांस बम्बई वरली मटका ता० ४ अक्टू० को ३।९।६ ओपन या क्लोज। ता० ८ अक्टूबर ९।४।२ ओपन ५।१०।१ क्लोज। ता० १० या ११ अक्टूबर ३ या ६ क्लोज। १।४।८ ओपन।

ता० १५ अक्टूबर ७ या ८ क्लोज, ता० १८ अक्टूबर ५ से ८ या ८ से ५ या ६।९, जोड़ भाव ता० २२ अक्टूबर १।४ क्लोज २३ अक्टू० ४।१०।८ ओपन, ५।९।६ क्लोज पास होगा।

चांस दिल्ली घड़िया भाग्यांक—ता० २ अक्टूबर ४९।९३।१७। ता० १२ अक्टूबर ९६। ६९।२३। ता० १५ अक्टूबर १३।१०५।८९। १६ अक्टूबर ८०।४२।९८। २८ अक्टूबर २२। ७८।८७ भाव।

पता—हनुमानगंज, फिरोजाबाद उ०प्र०

चेतावनी—सोना चांदी तांबा जस्ता पीतल, रेशम-पाट-कालीमिर्च तेलके बीज खली, धानकी पालिश, उड़द मूंग मोठ रमास तुअर मटर चना खेसारी तेवड़ा देशी घी शेयर्स गुड़ खांड किराना आदिकी किसी भी १ वस्तुकी हाजर स्टाककी वार्षिक भेंट ३०२)५०। छह माहकी १७६)५०। तीन माहकी १०२)५०। वायदेमें जनरल चान्सकी वार्षिक भेंट ४५२)५०। छह माहकी २४२)५०। तीन माहकी १२६)५०। एक माहकी दैनिक स्पैशल चान्स ५२)५०। पाक्षिक २७)५०। साप्ताहिक १६)५०। जन्मपत्रिकासे द्वादश कुण्डली वाला वर्षफल फुलस्केप छपे फार्म पर भेंट १६)५०। विस्तृत २६)५०। सभी वस्तुओंकी दैनिक तेजी-मन्दी प्रदर्शक वार्षिक "भविष्यदर्पण" कार्तिक शुक्ला १ संवत् २०३१ से दीपावली संवत् २०३२ पर्यन्त इसी शरद् पूर्णिमा पर छप जावेगा, मूल्य १०)५० दो प्रति १९)५० तीन प्रतिके लिये २८)५० का मनीआर्डर भेजकर मँगावें। वी०पी० नहीं की जाती। पत्रोत्तर जवाबी कार्ड भेजकर ही उत्तर पानेकी आशा करें।

पता तार व पत्र —राजाराम जैन ज्योतिषी, मैनपुरी (उ०प्र०)

व्यापार पर ग्रहोंका प्रभाव

[लेखक :—श्री जगदीश चन्द्र पटेल उत्तरसंडा गुजरात]

[लेखक गुजराती भाषी हैं और ज्योतिष तथा मंत्र-तंत्र विज्ञानमें अनुसन्धान कर रहे हैं। 'ज्योतिष्मती' पाठकोंके लिए इनका इस सम्बन्धमें यह पहला लेख है। यदि व्यापारीवर्गको लाभ होगा तो आगामी अङ्कोंमें भी इनके लेख प्रकाशित करते रहेंगे। —सम्पादक]

जुलाई १९७४

जुलाई ता० २ शुक्रवरुण प्रतियोग तेलवियां, एरंडा और कपड़ेमें तेजी करेगा।

ता० ८ मंगल गुरु षडष्टकसे हल्दी-खांड, श्रीफल, धनिया जीरा एवं शेयरोमें मंदी। मिर्च-गुड़-तम्बाकूमें तेजी होगी। ता० ११ शुक्र राहु प्रतियोग एरंडा, तेलमें तेजी, कपड़ेमें तेजी।

ता० २० बुध वरुण षडष्टक रुई-कपड़ा-अनाज एवं चाय, तेल, कोयले आदिमें मंदीका सूचन LAST योग पूरा होता है। ता० ३० सूर्य-वरुण त्रिकोण योग, बुध-गुरु त्रिकोणसे भी रुई-अनाज-हल्दीमें तेजी बढ़ेगी। दूसरे दिन एक तरफका योग बनता है, सतर्क रहें।

अगस्त १९७४

ता० ४ शुक्र-हर्षल षडष्टक तेल कपड़ेमें मन्दी करे। ता० ७ गुरु-राहु एवं मंगल वरुण केन्द्रसे मिर्च एवं धातु बाजारमें तेजीका योग। ता० १० शुक्र हर्षल केन्द्र चांदी-एरंडा एवं सौंदर्य प्रसाधनकी चीजोंमें तेजी आवेगी। ता० १३ बुध-गुरु षडष्टक घी-दूध-चावल-केसर-हल्दी रुई अनाजमें मंदी करेगा। ता० २० मंगल और गुरु मिलन अनाज, गुड़, खांड, एवं कपड़े धोने की चीजोंमें तेजी होगी। शेयरोमें मंदी, बाद तेजी। ता० २२ गुरु-शनि नवपंचम हल्दी एवं पीली काली चीजोंमें तेजी करेगा। ता० २८ बुध-गुरु प्रतियोग अनाज, मूंग, हल्दी, खांडमें मंदीका सूचन करता है।

सितम्बर १९७४

ता० २ मंगल बुध योगसे गुड़-मिर्च अनाज, सिमेण्ट और तांबामें मंदी आयेगी।

ता० ३ से ५ सितम्बर तक तेजीके योग हैं। ता० ६ से मंदी होगी। ता० १४ बुध-गुरु षडष्टक योगसे हरेक बाजारमें मंदी आयेगी। ता० १७ गुरु-शुक्र प्रतियोगसे हल्दी खांड, केमिकल, कपड़े, औषधि, चावलमें दोतरफी घटाबढ़ी रहेगी।

व्यापारी बन्धुओं ! बाजारकी चाल देखकर कानूनको पहिचान कर, अपने जन्मग्रह अनुसार लाभ लेनेका प्रयत्न करें।

नोट कर लीजियेगा –

बड़ी घटाबढ़ीके दिन निम्न प्रकार हैं—

ता० ३०-६-७४ रविवार
ता० १-७-७४ सोमवार
ता० २४-७-७४ बुधवार
ता० ३१-७-७४ बुधवार
ता० १७-८-७४ शनिवार
ता० २०-८-७४ मंगलवार
ता० २-९-७४ सोमवार

(पृष्ठ १२ का शेष)
है, वह निम्न तालिकासे प्रकट है। यथा—

क्षेत्र	चर्च	ईसाई
कोहिमा	१६५	१४६३०
मौकाचुंग	२६३	४६६६७
ट्यूसांग	२४७	३३७३१
योग	७३५	९८३५८

१९७१ की गणनाके अनुसार नागालैंड की कुल आबादी ५१५५६१ है। इटलीसे १९५१ में फादर मारशिनो (कैथोलिक) आए। दस सालोंमें १२०० पादरी फैल गए। बारोमंग एक गांव है। इस बस्तीके १६०८ लोगोंमें केवल ६० व्यक्ति ईसाई नहीं है। ये ६० सालसे अधिक आयुके हैं। प्रश्न है, हम कब तक सोते रहेंगे? यह राष्ट्र रक्षाका प्रश्न है। नागालैंड ही है जिसने अपनी भाषा अंग्रेजी घोषित की है। क्या हम जागेंगे?

(पृष्ठ १६ का शेष)
या वित्तीय मामलेकी चोरीका भेद खुलेगा। बृटेनकी रानी एलीजाबेथकी हत्याका प्रयास होगा और ग्रीष्मऋतुके बाद वे सत्ता त्याग करेंगी।

शिकागोके ओलाक जॉनसन नामक भविष्यवक्ता कहते हैं—

मध्यपूर्वका मामला अशान्त बनेगा। और गोल्डा मायरको पदत्याग करना पड़ेगा।

'ज्योतिष्मती' में विज्ञापन

देकर

लाभ उठावें।

साहित्य-समालोचन

स्थानाभावके कारण इस अङ्कमें प्राप्त पुस्तकोंकी समालोचना प्रकाशित न हो सकी। प्रेषक महोदय अधीर न होवें। आगामी अंकों में यथासमय क्रमशः सबकी समालोचना छपेगी। आचार्य श्री भास्करानन्द लोहनीकी 'ज्योतिषनवनीत' और 'ज्योतिष मकरन्द' नामक दो पुस्तकें, डा० हरिकृष्ण छंगाणीका 'ज्योतिष और व्यवसायका चुनाव' और 'हस्तरेखाविज्ञान' एवं श्री हीरालाल दूगड़के शकुन और स्वप्न विज्ञान पर दो उपयोगी ग्रन्थ प्राप्त हो चुके हैं। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक छोटी बड़ी पुस्तकें, अभिनन्दन ग्रन्थ एवं पत्रपत्रिकाएं भी प्राप्त हुई हैं—उनका परिचय भी आगामी अंकोंमें प्रकाशित करेंगे। —सम्पादक।

स्व० महामहोपाध्याय श्रीमथुराप्रसादजी दीक्षितके दो अद्भुत ग्रन्थ 'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको

आधे मूल्यमें

"भक्तसुदर्शन नाटक" हिन्दी टीका सहित मूल्य ३) रु०। डाक रजिस्ट्री खर्च २) रु० **"केलिकुतूहल"** [हिन्दी टीका सहित] आयुर्वेद, काम-विज्ञानका अद्भुत ग्रन्थ, मूल्य १०) रुपये। डाक रजिस्ट्री खर्च दो रुपया। 'ज्योतिष्मती' के ग्राहक दोनों ग्रन्थ आधे मूल्य ६.५० और डाड रजिस्ट्री व्यय ३) कुल ९.५०) रुपये भेज कर प्राप्त कर सकते हैं। वी०पी० नहीं होगी।

पता—ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन
(हिमाचल प्रदेश)

'श्रीशंकर व्यापार-भविष्य'

इस मासिक पत्रिकामें प्रत्येक वस्तुके चांस पृथक्-पृथक् स्पष्ट हैं । हाजिरमें प्रत्येक धान्यादि दालवाना रुई कपास गुड़ खांड चीनी पाट हैसियन कैमीकल्स और प्रत्येक किराणा वस्तुके टायम टकावार ऊंचे नीचे भाव लम्बी लाइन सहित स्पष्ट हैं ।

व्यापार वायदामें चांदी पुराना सिक्का धातु पदार्थ पाट जूट बारदाना, गुड़ वायदा हल्दी कालीमिर्च अरण्डा अलसी तेल मूंगफली सरसों करड़ी बिनौला मिल शेयर्स व प्रत्येक वस्तु व्यापार वायदाकी दैनिक लाइन, गली नजराना फलित तारीखें स्पेशल चांस टायम टकावार नीचे ऊंचे भाव सहित लाइन स्पष्ट है । व्यापारी बन्धु एक बार मंगाकर अवश्य परीक्षा कर लाभ उठायें । एक मासिक पत्रिकाका मूल्य ७)५० । दीपावली सन् १९७४ ई० से ३१ दिसम्बर १९७५ ई० तक की वार्षिक पुस्तक सदैवकी भांति इस बार भी छप रही है । तुरन्त आर्डर प्रदान करें । वार्षिक पुस्तकका मूल्य १४)५० होगा ।

पता : पं० शिवचरण लाल शर्मा रमलाचार्य

श्रीशंकर व्यापार भविष्य कार्यालय, मुहल्ला हनुमान गंज, फिरोजाबाद

जिला आगरा (उ०प्र०)

नवग्रहोंके लिये असली राशि-रत्न

नवग्रहोंके प्रकोपकी शान्ति हेतु असली राशि-रत्नोंके लिये हमसे सम्पर्क स्थापित करें । हिन्दू रत्नशास्त्रके अनुसार ८४ प्रकारके विभिन्न रत्न होते हैं । इनमें प्रमुख हैं—हीरा, पन्ना, माणिक, मोती, मूंगा, नीलम, पुखराज, लसनिया व गोमेद । हम इन सभी व अन्य प्रकारके रत्नोंके पिछले ३० वर्षोंसे थोक व खेरूज विक्रेता रहे हैं । हम आपको निम्न सुविधायें प्रदान करते हैं :—

(१) उचित मूल्य पर असली व उत्तम रत्न ।

(२) वी०पी० द्वारा आदेशोंकी पूर्ति ।

(३) सन्तोषका पूर्ण आश्वासन । रत्न नापसन्द होने पर डाक व्यय काटकर रकम-वापसी की गारण्टी ।

नि:शुल्क सूचीपत्र व अन्य विवरणोंके लिये लिखें ।

विशनदास होलाराम जौहरी

पोस्ट बाक्स २८, गोपालजीका रास्ता, जयपुर—३ (राजस्थान)

'ज्योतिषबोध' का प्रकाशन स्थगित

गत वैशाख मासमें 'ज्योतिषबोध' मासिक पत्रके प्रबन्ध-सम्पादक श्री घनश्याम कौशिक सहारनपुरमें स्कूटरसे जाते हुए एक ट्रकसे टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गये, अतः मई-जून मासका 'ज्योतिषबोध' प्रकाशित न हो सका। विगत २५-५-७४ के पत्रमें उक्त पत्रके प्रधान सम्पादक हमारे स्नेही और श्री घनश्यामजीके ज्येष्ठ भ्राता श्री राधेश्यामजी कौशिक ज्योतिषाचार्यने लिखा था कि—"जब तक भाई घनश्यामजी स्वस्थ होकर अस्पतालसे घर न आजावें तब तक 'ज्योतिषबोध' का प्रकाशन बन्द रहेगा।" हम प्रभुसे प्रार्थी हैं कि वे इस उत्साही नवयुवक सहृदय सेवाभावी सहयोगी (घनश्याम कौशिक) को शीघ्र स्वस्थ करके अपने कार्य-क्षेत्रमें प्रवृत्त होनेकी शक्ति प्रदान करें।

— हरदेव शर्मा त्रिवेदी

दो स्नेही सज्जनोंका दुःखद देहावसान

गत ज्येष्ठ मास (मई ७४) में दुर्दैववशात् हमारे दो स्नेही सज्जन कालकवलित हो गये। इनमें प्रथम हैं ज्योतिष्मती-परिवारके सुपरिचित स्नेही सहयोगी लुधियानाके सुविख्यात ज्योतिषी श्री पं० हंसराज शर्मा—जिनकी भविष्यवाणियां और राशिफल पंजाबके उर्दू हिन्दी पत्रोंमें प्रकाशित होती रही है। ज्योतिष-संगठन सम्मेलनोंमें शर्माजीकी विशेष रुचि थी, चित्रापक्षीय शुद्ध दृग्गणितके प्रबल अनुयायी थे। लुधियानामें उत्तर भारतीय ज्योतिषपरिषदकी स्थापना हुई, उसके सभापति भी आप थे। शर्माजीके चि॰ श्री पृथुराज, अशोक, रघुनाथ और कुलदीप शर्मा चार पुत्र हैं। आशा है ये चारों बालबन्धु स्नेहसहयोग और साहससे कार्य करते हुए अपने पिताके पदचिन्हों पर चलनेका प्रयत्न करेंगे। हम अपने इस स्नेही सहयोगीको ज्योतिष्मती-परिवारकी ओरसे हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।

दूसरे हैं हमारे विशेष स्नेही दिल्ली निवासी श्री किशनचन्दजी चौरड़िया। आप जैन समाजके लब्धप्रतिष्ठ सहृदय सरल स्वभावके धार्मिक सज्जन थे। आपकी विनम्रता एवं मिलनसारितासे सभी प्रभावित थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती नगीनादेवीजी एक आदर्श गृहलक्ष्मी हैं। उनकी जैनधर्म और ज्योतिषशास्त्रमें विशेष श्रद्धा है। ज्योतिषका कुछ अध्ययन भी आपने किया है। 'ज्योतिष्मती' और 'श्रीविश्वविजयपंचांग' का गत ३० वर्षोंसे आप निरन्तर अध्ययन करती रही हैं। ऐसी विदुषी महिलाके इस दारुण दुःखमें हम ज्योतिष्मती-परिवारकी ओरसे सहानुभूति प्रकट करते हुए श्री चोरड़ियाजीको हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करके प्रभुसे प्रार्थी हैं कि वे दिवंगतात्माको शाश्वत शान्ति एवं उनके सुपुत्र चि० श्री महताबचन्द्र चोरड़िया और आयुष्मती अ०सौ० विजय, विनय, विमला पुत्रियोंको पिताश्रीके पदचिह्नों पर चलनेकी सद्बुद्धि और पारिवारिक जनोंको कष्ट सहन करनेकी शक्ति प्रदान करें।

—सम्पादक ज्योतिष्मती'

त्रैमासिक व्यापारिक भविष्यफल

[लेखक –:श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्य-विशारद]

[यह लेख बहुत विलम्बसे प्राप्त होनेके कारण पूरा नहीं दिया जा सका। इस अन्तिम पृष्ठ पर जितना आ सका उतना संक्षेपमें दे दिया है। –सम्पादक]

श्रावण मास

वदी १ पूर्वाषाढ़ नक्षत्र इस मासमें होने वाली तेजी (सर्वधान्य महर्घता) की घोषणा कर रहा है। १३ जुलाई तक रुई मन्दी और चांदी तेज रहेगी। ८ जुलाईको गुड़ खाण्ड, शक्कर, सोना चांदी तेज। ६ जुलाईको ३० जूनसे चली हुई लाइन बदल जायेगी। १० को गेहूं चना, मूंग मोठ जुवार घी मन्दा, गुड़ शक्कर, चावल खाण्ड तेज। ११ को रुई तेज। १३ को मार्गी बुध बाजारकी लाइन पलटेगा। १४ को गुड़ शक्कर, तिलहन, अनाज तेज। ता० १५ चांदी, रुई, कपास मन्दी। यहां मिथुन राशि पर सूर्य-शु०बु०श० चार ग्रहोंका सम्मेलन होगा। गतवर्ष एकत्र हुये थे– तब अनिष्टफल दिया था। १६ को मंगलवारी कर्क संक्रांति वर्षामें कमी करेगी। वायुका उत्पात, गेहूँ चावल घी आदि तेज। आज वर्षा हो तो संवत् उत्तम होगा। वदी १२ का क्षय—कहीं कहीं घोर दुर्भिक्ष हो सकता है। आज ही सिंहे भौमः लाल रंगके पदार्थ और सोना तेज होगा। शुक्रवारी अमा-वस्या चांदी तेज, और रुईमें घटबढ़ करेगी। पुनर्वसु होनेसे एक मास तक अन्न तेज। शनि-वारी एकम शुक्लपक्षमें सरसों, अलसी आदि तिलहन तेज करेगी।

सुदी ३ का क्षय—मूंग, मोठ, उर्द, चना, आदि दाल-अन्न और घी तेज रहेगा, यह तेजी पूरे पक्षभर रहेगी। परन्तु २२ को गेहूं, गोला, मिर्च, तिल तेल तिलहन मन्दा रहेगा। २५ तक घटबढ़से तेजीकी लाइन रहेगी। २६ से मन्दीकी जनरल लाइन बनेगी। ३१ तक कोई विशेष योग नहीं है। १ अगस्तको सोना चांदी रुईकपास मन्दी। पूर्णिमा शनिवारी तेजी करेगी

प्रथम भाद्रपद मास

इसमें ५ रविवार हैं। सोना, चांदी रुईमें ५ दिन तेजी ५ दिन मन्दी, इस प्रकार बाजार चलेगा। ता० ७ अगस्त पू.फा.का भौम तिलहन, तेल, घी, गुड़ खाण्ड तेज करेगा। ८ को भावों में घटबढ़ रहेगी। ता० ६ चांदीमें अच्छी मन्दीकी आशा है। १० अगस्त गुजरात, सौ-राष्ट्रमें भारी वर्षा, सरसों तिल मूंगफली उर्दके व्यापारियोंको तेजीके सौदोंमें लाभ होगा। रोहिणी रहित जन्माष्टमी भी तेजी करेगी। १२ को रुई, कपास, चांदीमें अच्छी मन्दीका योग है। सोना, रुई लाख चपड़ा गुड़में मन्दीका धमाका। बदी दशमीको रोहिणी उत्तम उपज की परिचायक है। परन्तु आज बाजारमें तेजी रहेगी। बदी १४ का क्षय—मन्दीका झटका लायेगा। ईख, गुड़ खाण्ड लाल रंगकी धातुएं सोना ताम्बा तिल तेल तेज। शनिवारी अमा-वस्या, रस पदार्थ विशेषकर, तिलहन, तेल तेज करेगी। आज सिंह पर सूर्य–चन्द्र-मंगल-बुध चार ग्रहोंकी युति तथा शनिकी दृष्टि घोर तेजी कर सकती है।

It's love at first sip!



Gold Coin
Real
APPLE JUICE

Made from the finest apples. Gold Coin is a delightful, nutritious drink-to keep you cool and refreshed always. Once tasted always wanted.

MOHUN'S
Ginger Tonic

A wonder beverage that gives you the appetite to eat heartily and aids digestion. A quick and sure remedy for stomach disorders.



Mohan Meakin Breweries Ltd.
ESTD. 1855
Mohan Nagar (Ghaziabad) U.P.

"JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

Not just a breakfast ....

A COMPLETE FOOD....

Mohun's New Life Corn Flakes are rich in energy giving proteins, minerals carbohydrates and vitamins that make this breakfast an ideal dietary supplement. Eat a bowl of these crunchy flakes today and enjoy that tempting flavour and toasty taste.



Over 114 years experience distinguishes our products

MOHAN MEAKIN BREWERIES LTD. ESTD. 1855 MOHAN NAGAR (GHAZIABAD) U. P.

MMB-NP-550

हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा कुमार प्रि० प्रैस सोलनमें छपकर ज्योतिष्मती-निकेतन,. सोलन से प्रकाशित